वाणी

सरोवर

जनवरी १९७०

भुवन वाणी ट्रस्ट
रानी कटरा-लखनऊ ३.

[भुवन वाणी ट्रस्ट (पंजीकृत) लखनऊ का मुखपत्र (त्रयमासिक)]

वाणी सरोवर

प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक संत की बानी।
संपूर्ण राष्ट्र में घर-घर है पहुँचानी ।।

संपादक—नन्दकुमार अवस्थी प्रब०सं०—विनयकुमार अवस्थी

प्रथम वर्ष जनवरी, १९७० अंक—१

विद्वत्-परिषद्

असमिया—बसन्तकुमार सैकिया
सुश्री दीप्ति बरगुहाईं

अरबी—क़ाज़ी मुहम्मद सिद्दीक़, मुफ़्ती दारुल्मुबल्लग़ीन, लखनऊ

ओड़िया—सुरेशचन्द्र नन्द एम. ए. हिन्दी-ओड़िया, रा० भा० रत्न, कटक

अंग्रेज़ी—प्रेमनाथ बाजपेयी एम. ए.

उर्दू—डॉ. स० असदअली एम.ए.,पीएच. डी.
सुश्री माजदा असद एम.ए. पीएच.डी.

कन्नड़—कु० उदया लेले, एम.ए.,डिप. कन्नड़
सुश्री सुनिता सुरेश कुलकर्णी

कश्मीरी—माखनलाल रैना

गुजराती—हसमुख बी० आचार्या

गुरुमुखी—डॉ० अमरसिंह खालसा, डा० आफ़ डिविनिटी (यू. एस. ए.) प्र० संपादक 'सरदार' लखनऊ

तमिल—वी. नटराजन एम. काम.
केशव चतुर्वेदी डिप. (तमिल)

तेलुँगु—पी०रंगाचार्युलु वि० शि० 'भारती'
सुश्री शरद् राव

पाली—डॉ० हर्षनारायण एम.ए.,पीएच.डी.

पारसी—मेजर ई० एच० कैनटीनवाला ए.आई.आर.ओ. (रिटा.) एम.एन.ए.जी. (लण्डन) एफ़.आर.जी.एस.
सुश्री नाज़ू दारा देबू, 'दिलनवाज़'

फ़ारसी—स० मासूदहसन रिज़वी, भारत सरकार-सम्मानित, भू.पू. (फ़ारसी) विभागाध्यक्ष लखनऊ वि० वि०

बंगला—प्रबोध मजुमदार

मराठी—डॉ. शिवराम चिंतामणि लेले एम.ए.
सुश्री कुसुम ताम्बे, एम. ए.

मलयाळम—के. ए. एस. अय्यर, भू. पू. उपकुलपति लख० वि० वि०

संस्कृत—बिहारीलाल शास्त्री, का.ती. बरेली

सिन्धी—प्रभुदास ब्रह्मचारी राजवैद्य, दीपचन्दु तिलोकचन्दु एम. ए. ओरियण्टल टीचर, अजमेर,
एम.के. केवलरामानी, सा.मं.सि.स.

हिन्दी—गौरीशंकर त्रिपाठी 'पीयूष'

वार्षिक मूल्य १०·०० एक प्रति २·५०

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	विद्वत्परिषद्	....	१
२	विषय-सूची	....	२
३	वन्दना	....	३
४	कविता	श्री गौरीशंकर त्रिपाठी 'पीयूष'	४
५	सम्पादकीय	....	५-७
६	उर्दू-देवनागरी चार्ट	....	८
७	अरबी-देवनागरी चार्ट,	सूरतुल्-फ़ातिहः (क़ुर्आनॅ शरीफ़)	९
८	बंगला-देवनागरी चार्ट	....	१०
९	मलयाळम-देवनागरी चार्ट	....	११
१०	गुरमुखी-देवनागरी चार्ट	....	१२
११	सिन्धी भाषा बनाम सिन्धी लिपि	....	१३-१६
१२	(फ़ारसी)	सिर्रे अक्बर—शाहज़ादः दाराशिकोह कृत ५१ उपनिषदों की फ़ारसी व्याख्या। (क्रमशः) अनुवादक—डॉ. हर्षनारायण एम.ए.,पीएच.डी.	१७-३२
१३	(मलयाळम)	कवि तुञ्चत्तु एळुत्तच्छन् कृत महाभारत—लिप्यन्तरणकार एवं अनु०—श्री के. ए. एस. अय्यर, भू.पू. संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं उपकुलपति लखनऊ विश्व०वि०—(क्रमशः)	२५-४०
१४	(बंगला)	कृत्तिवास रामायण लंकाकाण्ड—लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी, अनुवादक—श्री प्रबोध मजुमदार—(क्रमशः)	२५-४०
१५	(उर्दू)	शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुसवा कृत उपन्यास)—लिप्यन्तरणकार—श्री विनयकुमार अवस्थी, सम्पादक—डॉ० सय्यद असद अली एम.ए. पीएच. डी०—(क्रमशः)	९-२४
१६	(गुरमुखी)	श्री जपुजी साहब (गुरु नानकदेव की बानी) अनुवादक—ख्वाजः दिलमुहम्मद, लाहौर लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी	१-४०
१७	(चित्र)	शाहज़ादः दाराशिकोह	

वन्दना

ॐ दृते ! दृꣳह मा; मित्रस्य मा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि
समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । [शुक्लयजुर्वेद ३६.१८]

हे परमात्मन् ! मुझे दृढ़ करो। मुझे सभी प्राणी मित्र-दृष्टि से देखें। मैं भी सब को मित्र-दृष्टि से देखूँ। हम सब प्राणी एक दूसरे को मित्र-दृष्टि से देखते रहें।

ये वाओ मज़्दा-अहुरा ! । पइरी-जसाइ वोहू मनंघ्हा
मइब्यो दावोइ अह्वाओ। अस्त्वतस्-चा ह्यत्-चा मनंघ्हो
आयप्ता अषात् हचा। याइश् रपन्तो दइदीत् ख्वाथ्रे
[अशो ज़रथ्रूस्त्र गाथा अहुनवद यजश्ने-हा-२८:२]

यः वः मेधा असुर ! परि-जसै वसु मनसा
मभ्यम् धावे अस्वोः। अस्थ्वतश्च यत् च मनसः
आयप्ता अषात् सचा। यैः रभन्तो दधीत् स्वात्रे
[यज्ञ-अध्याय २८:२] @

भावार्थ—हे अहुरा-मज़्दा ! मैं पवित्र मन से तुम से ही प्रार्थना करता हूँ। (मुझे) भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करने योग्य पवित्रता प्रदान करो। उस (मन की पवित्रता) से ही प्राप्त होने वाला वह (आत्म-संयम) भक्त को उसके अपने ही अन्तःकरण में (जगमग) पवित्र ज्योति के दर्शन करायेगा।

@ उपरोक्त गाथा-मंत्र का शुद्ध वैदिक स्वरूप। पारसी विद्वान् श्री खबरदार ने गाथा और वेद सम्बन्धी लिपि, भाषा, स्वर तथा व्याकरण का अध्ययन कर यह स्पष्ट किया है कि अवेस्ता एवं गाथा की भाषा वेदों की वर्त्तमान भाषा का प्रा-रूप है। उनमें परस्पर माता-पुत्री का संबंध है, न कि सहोदराओं का।

'वाणी सरोवर'

विश्व महीतल मञ्च पै मोतियों की लड़ी जो बिखरी है धरोहर।
जो बहु-भाषा के रूप में रंग-बिरंगी है कल्पनातीत मनोहर।।
एक समन्वय-रूप, उसी के प्रसार का लक्ष्य लिया है बरोबर।
तो परिणाम प्रसिद्ध है ऐक्य-समृद्धि-स्वरूप ये 'वाणी सरोवर'।।

सिन्धु से बिन्दु

व्यर्थ अनन्त की ओर से खींच के, कामना ने क्यों दबा इतना दिया ?
एक से होने अनेक चला, इस वृत्ति ने फाँस के त्रास घना दिया !
विश्व प्रपञ्च की भावना ने त्रिगुणीकृत रूप मुझे अपना दिया !
शोक यही! किस क्रूर अदृष्ट ने सिन्धु से बिन्दु मुझे क्यों बना दिया ?

चातक

रटते रहे रीझे पिऊ-पिऊ को, पर रञ्च भी अन्य की चाह न की।
भय त्याग के प्राण पखेरुओं का, किसी दूसरी ओर निगाह न की।।
मरते-मरते मुसकाते रहे, हँसते रहे, नाम को आह न की।
बिजली कितनी ही गिराते रहे, पर वारिदों की परवाह न की।।

क्रूर बबूलों से शूलों से क्या ?

कुछ संबल दे न सके जो कभी, उन भीनी सुगंध के फूलों से क्या ?
यदि देख सके न उतार-चढ़ाव, तो जीवन के कलकूलों से क्या ?
कणमात्र 'पीयूष' पिला न सके, तो मिठास भरे मृदु मूलों से क्या ?
प्रिय का पट छोर तो थामे रहे, हमें क्रूर बबूलों से, शूलों से क्या ?

बढ़ते चले जा रहे हो बढ़ो लक्ष्य की ओर, प्रवाह-प्रहार से क्या ?
डट जाओ परिस्थितियों के समक्ष में, क्रूर अदृश्य की मार से क्या ?
पथ में कितनी पड़ें बाधा, डरो मत—व्यर्थ के सोच-विचार से क्या ?
प्रिय चातक ! साहस खोना नहीं, इन मेघों की मूसलाधार से क्या ?

—गौरीशंकर त्रिपाठी 'पीयूष'

सम्पादकीय

अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के अन्त होते ही भारत के दुखद विभाजन की पीड़ा से मर्माहत भारत ने शासन की बागडोर सम्हाली। भारतीय संसद ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि स्वीकार कर निस्संदेह एक उचित और राष्ट्र की अखण्डता को अक्षुण्ण रखने वाला निर्णय लिया। साथ ही उन विघटनकारी तत्वों, जो अंग्रेज़ी शासन की उपज होते हुए भी शासन-तंत्र पर आज भी हावी हैं, तथा जो राजनेता जनतन्त्र के मोर्चे पर जनमत को प्रभावित करने में असफल होने के कारण तरह-तरह के द्वेषमूलक नारे देकर अहिन्दीभाषी क्षेत्रों की जनता को गुमराह करते हैं, उनकी तुष्टि के लिए, १५ वर्ष तक के लिए शासन-कार्यों में, अंग्रेज़ी के लिए भी स्थान सुरक्षित कर दिया।

समय बीतते देर नहीं लगती। १५ वर्ष की अवधि पूरी हो गई। २६ जनवरी १९६५ से हिन्दी एकमात्र राष्ट्र-भाषा घोषित की गई। उसकी कैसी प्रतिक्रिया हुई वह दक्षिण भारत तथा बंगाल के गत रोमाञ्चकारी काण्डों से स्पष्ट है। उन घटनाओं के विस्तार में न जाकर, इन उपद्रवों के कारण और उनके समाधान के मार्ग पर ही विचार करना इस लेख का उद्देश्य है।

भाषा के प्रश्न पर भावुकता के साथ-साथ कुछ आर्थिक पहलुओं पर भी ध्यान आवश्यक है। भारत जैसे बहु-भाषाई देश में इस विषय का हल जटिल भले ही हो, किन्तु असंभव नहीं। अस्तु आलोचना को छोड़, सरकार को अपने कर्तव्य में प्रवृत्त रहने देकर, एक नागरिक के नाते अपने कर्तव्य को मैं खोजने लगा। मैं समझा कि हिन्दी भाषा के साहित्यिकों एवं प्रकाशकों पर अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बन्धितों की अपेक्षा इसका कहीं अधिक उत्तरदायित्व है। क्षेत्रीय भाषाओं के बहुप्रचलित लोक-साहित्य का न केवल हिन्दी में अनुवाद वरन् उसके मूल का भी जैसे का तैसा देवनागरी लिपि में लेखन और प्रकाशन थोड़े समय में ही एक को दूसरे में प्रतिबिम्बित करते हुए राष्ट्रभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को परस्पर जोड़ने के लिए एक सेतु का निर्माण कर देगा। शोषण की आशंका, अविश्वास, उत्तेजना आदि को निर्मूल कर सभी भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य से अखिल देश को सम्पन्न करते हुये, ईमानदारी से राष्ट्रभाषा तथा क्षेत्रीय भाषाओं को समानरूपेण आश्रय-प्रदान, परस्पर सान्निध्य और सौहार्द व एक-पारिवारिकता एवं धर्म-सहिष्णुता के वायुमण्डल की सृष्टि की जा सकेगी।

अतः 'कुछ करने' की भावना से मैं आज से २२ वर्ष पूर्व ही ऐसे ही कार्यों में लग गया था। बंगला के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'रामायण कृत्तिवास' और अरबी के विश्व-विख्यात धर्मग्रंथ क़ुर्आन का सानुवाद लिप्यन्तरण (ट्रान्सलिटरेशन) किया। गुरमुखी के नित्य भजनीय श्री जपुजी साहब का अति प्रचलित अनुवाद-सहित लिप्यन्तरण प्रस्तुत किया। तदर्थ देवनागरी में अनुपलब्ध अनेक वर्णों और इन लिप्यन्तरणों में, सम्बन्धित शास्त्रीय

पद्धतियों को व्यक्त करने के लिए अक्षरों, चिह्नों का सृजन करना पड़ा। भगवान् ने मार्ग की अनेक कठिनाइयों से पार किया, मनीषियों ने मेरे इन कार्यों की एक स्वर से सराहना की और यही मेरे लिए सर्वोपरि प्रसाद है। किन्तु इतनी लम्बी अवधि में, अखिल देश में एक तद्रूप वायुमण्डल बन जाने की मेरी आशा फलवती नहीं हुई। आर्थिक दृष्टि से ऐसे कार्य लाभकर नहीं होते। इसलिए इस मार्ग को व्यवसायियों द्वारा नहीं अपनाया गया; और न मैं ही अर्थाभाव से अपने कार्यक्रम को वाञ्छनीय ढंग पर प्रकाश में ला सका। अलबत्ता, भाषा के नाम पर अनेक क्षेत्रीय-विघटनों, यहाँ तक कि हिंसात्मक उपद्रवों से त्रस्त होकर केन्द्र एवं प्रादेशिक सरकारों का ध्यान आज इस समस्या पर अवश्य केन्द्रित हो उठा है।

अस्तु, इन लिपि-सम्बन्धी कार्यों में इतने दिन एकाकी रत रहने के फलस्वरूप 'भुवनवाणी' के कार्यक्रम के अधीन उपरोक्त अ़रबी, बंगला और गुरमुखी की 'रत्नत्रयी' के प्रकाश में आजाने के उपरान्त, कार्य को और अधिक व्यापक एवं विशद बनाने की इच्छा से, मैंने 'भुवनवाणी ट्रस्ट' संस्था की स्थापना की और उसे पंजीकृत करवाया।

संस्कृत, पाली, पारसी, उर्दू, अ़रबी, फ़ारसी, बंगला, असमी, ओड़िया, कश्मीरी, मराठी, गुरमुखी, गुजराती, तमिल, तेलुँगु, कन्नड, मलयाळम, सिंधी आदि विविध भाषाओं तथा बोलियों के सत्साहित्य को हिन्दी में अनूदित और यथावश्यक लिप्यन्तरित कर, उसे भारत के जन-जन तक पहुँचाना, अधिकाधिक भाषाओं का शिक्षण, प्रसारण और ज्ञान प्राप्त कराते हुए इनको एक सूत्र में पिरोना—यही 'भुवनवाणी ट्रस्ट' और उसके मुखपत्र 'वाणी सरोवर' का उद्देश्य है। धारावाहिक प्रकाशन होने से, सभी भाषाओं के सानुवाद लिप्यन्तरित अनेक पूर्ण ग्रंथ भी इस पत्र द्वारा उपलब्ध होंगे। इससे न केवल हिन्दी-अहिन्दी, वरन् सभी भाषाएं एक दूसरे में साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ओतप्रोत होते हुये, अपने सीमित क्षेत्र की दीवारें लांघ कर सारे राष्ट्र में व्याप जायँगी।

बड़ा रोचक विषय है। केवल लिपि-ज्ञान न होने से जो भाषाएँ विदेशी और दुर्लंघ्य प्रतीत होती हैं, लिपि का आवरण हट जाते ही वे आत्मीय स्वजनों जैसी घुलती-मिलती नज़र आती हैं। देवनागरी लिपि के माध्यम से किसी क्षेत्रीय भाषा के ग्रंथ के दो-चार पारायण उस भाषा के समझने के लिए पर्याप्त हैं। यहाँ तक कि संस्कृत शब्दों के बाहुल्य से दक्षिणी चार भाषाओं में भी पैठ थोड़े ही आयास से असंभव नहीं। सैकड़ों नहीं, हज़ारों शब्द तो अ़रबी के, नगर क्या देहातों तक की सामान्य बोलचाल में समाये हुए हैं।

अतः 'वाणी सरोवर' के जन्म के अवसर पर, सकल भारतीय जनता से अनुरोध है कि इस पवित्र अनुष्ठान में वह किसी न किसी रूप से सम्मिलित हो। व्यक्तिमात्र का कर्तव्य है कि एक से अधिक और अधिक से अधिक भाषाओं का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर यत्र-तत्र-सर्वत्र 'वाणी यज्ञ' के वायुमण्डल की सृष्टि करे।

परिचायिकी

(१) पाठकों को जान कर कुतूहल होगा कि सम्राट् शाहजहाँ के ज्येष्ठ शाहज़ाद: दाराशिकोह अरबी-फ़ारसी के साथ ही संस्कृत भाषा के न केवल विद्वान्, वरन् एक निष्ठावान् जिज्ञासु और वेदांत (तसव्वुफ़) में निष्णात थे। उन्होंने इक्यावन उपनिषदों की उत्कृष्ट फ़ारसी व्याख्या की और स्वयं उनकी हस्तलिखित पाण्डुलिपि 'सिर्रे इस्रार' के नाम से विक्टोरिया मेमोरियल कलकत्ता में संग्रहीत है।

प्रख्यात इतिहासविद् डा० ताराचंद के पुरुषार्थ से ईरान में 'सिर्रे अक्बर' के नाम से इसी उपनिषत्-समुच्चय का बड़ी छानबीन के साथ सुसंस्कृत और समलंकृत संस्करण प्रकाशित हुआ है। अरबी-फ़ारसी के मूर्धन्य विद्वान् स्व० श्री विद्याभिक्षु आर्य, प्रिंसिपल रुदौली इण्टर कालेज ने उक्त फ़ारसी व्याख्या का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया और 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के लिए स्वयं वह अनुवाद करने पर आरूढ़ हुये। दुःख का विषय है कि बीमार होकर कुछ ही दिनों बाद वह दिवंगत हुये और काम आरंभ न हो सका। विषय जटिल और पाण्डित्यपूर्ण है; हर किसी के वश का नहीं।

सौभाग्य से अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, पाली, अंग्रेज़ी आदि अनेक भाषाओं के समानरूपेण पण्डित लखनऊ अकादमी के प्रतिष्ठाता डॉ० हर्षनारायण ने ट्रस्ट के प्रति स्नेहवश और स्व० शाहज़ाद: के पुष्कल कार्य के सम्मान में, संस्कृत मूल एवं फ़ारसी व्याख्या के अनुवाद का भार लेकर स्वर्गीय विद्याभिक्षु जी की अपूर्त अभिलाषा को साकार करने की मेरी चिन्ता को दूर कर दिया। युवराज दारा लिखित भूमिका और उपनिषद्-व्याख्या ईशावास्योपनिषद् से आरंभ होकर 'वाणी सरोवर' में धारावाहिक प्रकाशित होती रहेगी।

(२) मलयाळम भाषा में 'कवि तुञ्चत् एऴुत्तच्छन' लिखित अति लोकप्रिय महाभारत एक संक्षिप्त संस्करण होते हुए भी महाभारत के सभी उल्लेखनीय आख्यानों से परिपूर्ण है। हिन्दी-भाषियों के लिए यह पुण्योदय था कि एक दिवस विद्वत्प्रवर श्री के. ए. एस. अय्यर भू. पू. संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं उपकुलपति लखनऊ विश्व विद्यालय के अवलोकनार्थ अपने सानुवाद लिप्यन्तरण-कार्यों को लेकर मैं उनके निवास पर उपस्थित हुआ। मेरे श्रम और मेरी उपलब्धियों पर इतने उदार हुए कि इस प्रौढ़ आयु में भी निरन्तर लेखन-अध्ययन में रत इन तपोरति ने, भारत में व्यवहृत अखिल भाषाओं के मेरे कार्यक्रम में, मलयाळम का कार्यभार स्वयं सम्हाल लेने का आशीर्वाद दे डाला। वह घड़ी कि कार्य बराबर चल रहा है। उनकी लेखनी से लिप्यन्तरित और अनूदित यह अद्भुत महाभारत 'वाणी सरोवर' के माध्यम से धारावाहिक प्रकाशित होता रहेगा।

ज्ञातव्य है कि मलयाळम के, घर-घर में लोकप्रिय इस अमर काव्य के रचयिता ने इस अमृत-दान के उपरांत, ग्रंथ में अपना नाम तक न देकर, भारतीय विद्वानों की सहज उत्सर्ग-परम्परा की आवृत्ति की है। 'तुञ्चत् एऴुत्तञ्छन्' के अर्थ हैं 'तुञ्चत् ग्राम का निवासी लिपि का पिता'—इस प्रकार मुग्ध जनता ने नामकरण कर निरपेक्ष कवि का सत्कार किया।

(३) बंगला, उर्दू, गुरमुखी के प्रकाशनों का परिचय देवनागरी-चार्टों में यथास्थान दिया गया है। शेष भाषाओं का विवरण आगामी अंकों में उपलब्ध होगा।

शरीफ़ज़ाद: (उर्दू)

उर्दू भाषा में 'उमराव जान अदा' के ख्यातिप्राप्त लेखक मिर्ज़ा मुहम्मद हादी उपनाम 'रुसवा' का दूसरा उपन्यासरत्न 'शरीफ़ज़ाद:' का देवनागरी लिप्यन्तरण 'वाणी सरोवर' में धारावाहिक प्रकाशित हो रहा है। उपन्यास के नायक और नवयुवकों के चरित्रोन्नायक मिर्ज़ा आबिदहुसैन स्वयं 'मिर्ज़ा रुसवा' साहब ही हैं। सारा घटनाक्रम ऐतिहासिक है; पात्रों के नाममात्र कल्पित हैं। बल्कि मिर्ज़ा जाफ़रहुसैन और उनका निवास मुहल्ला शाहगंज के तो नाम भी वास्तविक हैं। मिर्ज़ा 'रुसवा' के उपन्यासों में उनकी आपबीती—उनके श्रम, अध्ययनशीलता, विद्वत्ता एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा का पूरा चित्र खीचती है। फ़ारसी के मूर्धन्य विद्वान सय्यद मासूदहसन रिज़वी (भारत सम्मानित) जैसे उनके समकालीन उनके सम्बन्ध में अनेक चमत्कारी चुटकुले कहते नहीं थकते। देवनागरी लिपि के माध्यम से 'लखनवी उर्दू' की बहार देखिए। 'लिप्यन्तरण' का सम्पादन डा० सय्यद असद अली एम.ए., पीएच. डी. देहलवी ने किया है।

उर्दू - देवनागरी वर्णमाला

ट ٹ	त ت	प پ	ब ب	अ ا
ख़ خ	ह ح	च چ	ज ج	स ث
ड़ ڑ	र ر	ज़ ذ	ड ڈ	द د
स़ ص	श ش	स س	झ़ ژ	ज़ ز
ग़ غ	अ़ ع	ज़ ظ	त ط	ज़ ض
ल ل	ग گ	क ک	क़ ق	फ़ ف
य ی	ह ہ	व و	न ن	म م
		य ے		
झ جھ	ठ ٹھ	थ تھ	फ پھ	भ بھ
ख کھ	ड़ ڑھ	ढ ڈھ	ध دھ	छ چھ
आ آ	उ اُ	इ اِ	अ اَ	घ گھ

अरबी में प्रथक उच्चारण होने के फलस्वरूप अरबी के कुछ वर्ण, जैसे से, सीन, साद को स, स, स़ इस प्रकार प्रथक ही देवनागरी लिपि में भी लिखा गया है। अरबी भाषा में, और विशेषकर क़ुर्आन के पठन में इस अन्तर को न रखने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। किन्तु उर्दू में लोग इनका समान उच्चारण करते हैं, इस लिए उन तीनों वर्णों के लिए 'स' मात्र प्रयुक्त हुआ है। ऐसे ही समानध्वनि वाले सन्देहपरक अन्य मुश्तबहुस्सौत अक्षर भी हैं—जैसे ज़ाद, ज़ो, ज़े, ज़ाल आदि।

क़ुर्आन शरीफ़

☪ १ सूरतुल्-फ़ातिहः ५ ☪ ❀

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीमि ●

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन ला (१) अर्रह़्मानिर्-
रह़ीमि ला (२) मालिकि यौमिद्दीनि त (३) अिय्याक नऽबुदु व
अिय्याक नस्तअीनु त (४) अिह्दिनस्-स़िरात़ल्मुस्तक़ीम ला (५)
स़िरात़ल्लजीन अन्अम्त अलैहिम् ۵ ला (६) ग़ैरिल् - मग़्ज़ूबि
अलैहिम् वलज़्ज़ा'ल्लीन (७) ★

अरबी फ़ारसी (देवनागरी वर्णमाला)			
स ث	त ت	ब ب	अ إ
द د	ख़ خ	ह़ ح	ज ج
स س	ज़ ز	र ر	ज ذ
त़ ط	ज़ ض	स़ ص	श ش
फ़ ف	ग़ غ	अ़ ع	ज ظ
म م	ल ل	क ک	क़ ق
य ي	ह ه	व و	न ن
फ़ारसी के शेष अक्षरों के लिए उर्द-देवनागरी वर्णमाला का चार्ट देखिये।			त़ ة

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार (रब) है, (१) निहायत दयावान बेहद मेहरबान है, (२) जज़ा (अन्तिम न्याय) के दिन का मालिक। (३) (या अल्लाह!) हम तेरी ही इबादत (भक्ति) करते हैं और तुझही से मदद चाहते हैं। (४) हमको सीधी राह चला, (५) उन लोगों की राह जिनको तूने निअ़मत§ (से पुरस्कृत) किया, (६) न कि उनकी (राह) जो तेरे ग़ज़ब (प्रकोप) में पड़े और न भटके हुओं (पथभ्रष्टों) की। (७) ★

❀ सूरे फ़ातिहः सम्पूर्ण क़ुर्आन का मंगलाचरण है। इस सूरत के उतरने की क्रम-संख्या ५ होते हुये भी धर्मग्रंथ के शुरू में दिये जाने से इसकी अहम्मीयत (महत्ता) ज़ाहिर है। महज़ अल्लाह की तारीफ़ और इबादत इस सूरत का सार है। नमाज़ व अनेक मौक़ों पर इसका पाठ ज़रूरी है। यह इस्लाम धर्म की आत्मा (रूह) है और क़ुर्आन के सारे पाठ में सूरे फ़ातिहः का भाव घुलामिला है। § पारितोषिक।

कृत्तिवास रामायण (बंगला)

रामचरितमानस से एक शती प्राचीन, बंगला की अति लोकप्रिय 'कृत्तिवास रामायण' के लंका एवं उत्तर काण्ड का सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तर 'वाणी सरोवर' में धारावाहिक प्रकाशित हो रहा है। आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा और सुन्दर इन पाँच काण्डों का अवधी पद्यानुवाद सहित देवनागरी लिप्यन्तर 'भुवन वाणी, रानीकटरा, लखनऊ' से प्रकाशित हो चुका है। भुवन वाणी का प्रस्तुत कार्यक्रम बहुमुखी और अति विशद हो जाने के फलस्वरूप लंका और उत्तर काण्डों के पद्यानुवाद के लिए अपने पास समयाभाव के कारण पंक्तियों के लेखक ने बंगला के यशस्वी अनुवादक श्री प्रबोध मजुमदार से आग्रह कर उनको गद्यानुवाद का भार अपने ऊपर लेने के लिए तत्पर किया।

बंगला - देवनागरी वर्णमाला

অ अ	আ आ	ই इ	ঈ ई	উ उ
ঊ ऊ	ঋ ऋ	ঌ लृ	এ ए	ঐ ऐ
ও ओ	ঔ औ		অং अं	আঃ अः
ক क	খ ख	গ ग	ঘ घ	ঙ ङ
চ च	ছ छ	জ ज	ঝ झ	ঞ ञ
ট ट	ঠ ठ	ড ड	ঢ ढ	ণ ण
ত त	থ थ	দ द	ধ ध	ন न
প प	ফ फ	ব ब	ভ भ	ম म
য য	র र	ল ल	ব व	শ श
ষ ष	স स	হ ह	ক্ষ क्ष	জ্ঞ ज्ञ
শ্র श्र	ড় ड़	ঢ় ढ़	ৎ त्	য় य

बंगला और देवनागरी लिपि में वर्णों की संख्या समान है। संवृत-विवृत-भेद अथवा भौगोलिक कारणों से बंगभाषी 'जल' को 'जोल' उच्चारण करते हैं। किन्तु ज्ञातव्य है कि लेखन में 'जल' ही लिखते हैं न कि 'जोल'। यही परिपाटी देवनागरी लिप्यन्तर में भी अपनाई गई है। बंगला अथवा हिन्दीभाषी—दोनों ही अपनी-अपनी बोलने की पद्धति, अथवा रुचि होने पर एक दूसरे की पद्धति को अपना सकते हैं। लेखन पर इसका कोई प्रभाव नहीं।

—सम्पादक

मलयाळम महाभारतम्

मलयाळम भाषा के ५ 'वर्ण' देवनागरी लिपि में उपलब्ध नहीं है। अतः उनके लिए ळ, ऴ ऱ, ट़, ऩ,—हिन्दी में निर्धारित इन अक्षरों का उच्चारण इस प्रकार है:—'ळ' मूर्धन्य वर्ण, जिह्वा को उलट कर जिह्वाग्र से 'ष' के स्थान पर तालु स्पर्श कर 'ल' का उच्चारण करने पर प्रकट होता है। 'ऴ' मूर्धन्य वर्ण, जिह्वा उलटकर जिह्वाग्र से 'ष' के स्थान पर तालु स्पर्शकर 'र' का उच्चारण करने पर 'ळ' के समान ध्वनि उत्पन्न करता है। 'ऱ' यह मूर्धन्य वर्ण हिन्दी 'र' की अपेक्षा जिह्वा को कुछ अधिक उलटकर जिह्वाग्र को अधिक स्फुरण करते हुये नागरी 'र' का उच्चारण करना, अन्यथा 'ऱ' के बजाय 'ऴ' जैसा सुनाई देगा। 'ट़' हिन्दी के 'ट' के समीप है। उसके उच्चारण के लिए जीभ को वर्त्स्य पर एक क्षण चिपका कर तुरंत हटा लेना चाहिये, 'That' के अंतिम 'टी' के उच्चारण के सदृश। 'ऩ' का उच्चारण जिह्वाग्र को दोनों दन्तावलियों के बीच में मुहँ के भीतर ही रखकर किया जाता है। इस दन्त्य वर्ण से मिलता-जुलता देवनागरी का 'न' है जिसमें 'ऩ' की अपेक्षा जीभ को ज़रा ऊपर रखकर स्पर्श किया जाता है।

मलयालम - देवनागरी वर्णमाला

അ अ	ആ आ	ഇ इ	ഈ ई	ഉ उ
ഊ ऊ	ഋ ऋ	ൠ ॠ	ഌ ऌ	ൡ ॡ
എ ऍ	ഏ ए	ഐ ऐ	ഒ ऑ	ഓ ओ
	ഔ औ	അം अं	അഃ अः	
ക क	ഖ ख	ഗ ग	ഘ घ	ങ ङ
ച च	ഛ छ	ജ ज	ഝ झ	ഞ ञ
ട ट	ഠ ठ	ഡ ड	ഢ ढ	ണ ण
ത त	ഥ थ	ദ द	ധ ध	ന ऩ न
പ प	ഫ फ	ബ ब	ഭ भ	മ म
യ य	ര र	ല ल	വ व	ശ श
ഷ ष	സ स	ഹ ह	ള ळ	ക്ഷ क्ष
	ഴ ऴ	റ ऱ	ററ ट़	

मलयाळम में ए और ओ की मात्राएँ ह्रस्व और दीर्घ दो प्रकार की होती हैं। इनमें ह्रस्व के लिए ॅ और ॉ तथा दीर्घ के लिए े और ो देवनागरी में क्रमशः प्रयुक्त हैं। यथा 'जॅहिं' और 'जेठ' एवं 'घॉड़दौड़' और 'घोड़ा'। 'एक्का' और 'एक' को इस प्रकार लिखा जायगा—'ऍक्का', 'एक'। देवनागरी लिपि में मलयाळम के उकारांत शब्दों के ऊपर किन्हीं अवसरों पर चन्द्र ' ँ ' भी लगा देते हैं। ऐसी अवस्था में उच्चारण उकार नहीं वरन् असम्पूर्ण अर्थात् ह्रस्व 'अकार' जैसा होता है। जैसे 'वलियतुँ' का उच्चारण होगा 'वलियत'। 'त' के अकार को विस्तार से न पढ़ें। पाठक यह भी ध्यान रखें कि मलयाळम में अन्त में भी 'अ' स्वर आने पर सस्वर पाठ होगा; हिन्दी के समान हलन्त जैसा नहीं। राम को Rama पढ़ें न कि हिन्दी के अनुकरण पर राम्।

जपुजी तथा सुखमनी साहब

गुरमुखी वर्णमाला का कदाचित ही कोई अक्षर हिन्दी-भाषी के लिए अपरिचित हो। पाठक सरलता से उसका अध्ययन कर गुरमुखी के भक्ति और ज्ञानमय साहित्य का आनन्द-रस पान कर सकते हैं। गुरमुखी लिपि में श्री गुरु गोविन्दसिंह द्वारा रचित कृष्णचरित्र, रामचरित्र—दशावतारचरित्र आदि ब्रजभाषा का अनूठा काव्य भी उपलब्ध है।

'वाणी सरोवर' के इस अंक से श्री जपुजी तथा श्री सुखमनी साहब का सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण धारावाहिक प्रकाशित होता रहेगा। भूमिका में, पद्यानुवादक ख़ानबहादुर ख़्वाजः दिल-मुहम्मद साहब, लाहौर की ही लेखनी से इन अनमोल 'बानियों' का परिचय प्राप्त कीजिये। ख़्वाजः साहब ने श्रीमद्भगवद्गीता का भी उर्दू में ललित पद्यानुवाद किया है। अंग्रेज़ी शासनकान में पंजाब सरकार ने 'गीता' और 'जपुजी तथा सुखमनी साहब' इन दोनों रचनाओं पर स्वर्णपदक तथा एक-एक सहस्र रुपया देकर उनको पुरस्कृत एवं सम्मानित किया था।

पंजाबी (गुरुमुखी)-देवनागरी वर्णमाला

ਅ अ	ਆ आ	ਇ इ	ਈ ई	ਉ उ
ਊ ऊ	ਰੀ ऋ	ਏ ए	ਐ ऐ	ਓ ओ
	ਔ औ	ਅਂ अं	ਅः अः	
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ਸ਼ श
	ਸ स		ਹ ह	

सिंधी भाषा बनाम सिंधी लिपि ❀

सिन्धी का उद्गम संस्कृत से हुआ है। सौभाग्य से यह अब भी विदेशी शब्द-जाल से सुरक्षित है। प्राकृत के मर्मज्ञ वैयाकरण आज भी अपभ्रंश के स्फुट एवं निखरे हुए स्वरूप का दर्शन वर्तमान सिन्धी बोली में विना हिचकिचाहट के कर सकते हैं। भाषा-शास्त्र की दृष्टि से एवं भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से सिन्धी में—हिन्दी, मराठी और बंगला से भी बढ़कर—संस्कृत और प्राकृत से घनिष्टता दृष्टिगोचर होती है। ठेठ प्राकृत धातुओं एवं शब्दों के विद्यमान प्रचुर प्रयोग इसकी अत्यन्त सन्निकटता व्यक्त करते हैं। सुतरां, सिन्धी अपनी संस्कृतपरायणता के कारण अन्य बहनों की स्पर्धा की पात्री बनी हुई है। अन्य भारतीय भाषाओं की तरह अपनी परम्परागत शैली का समुचित सम्मान कर, तथा प्रचलित ढीली-ढाली और सीधीसाधी नवीन बनावट को न अपना कर, तदर्थ व्याकरण के नियमों को भी अनुकूल बना, परिष्कृत एवं परिमार्जित शब्दों के गठन में अपनी एकतारिता (Internal-harmony), मधुरता, रुचिरता एवं सुन्दरता में यह अन्य भाषाओं से अधिक समुन्नत है।

प्राकृत के मर्मज्ञ वैयाकरण क्रमादीश्वर ने जो-जो नियम अपभ्रंश के सम्बन्ध में निर्धारित किये हैं, उन सब नियमों का पालन सिन्धी-भाषा में ठीक-ठीक हो रहा है, जब कि दूसरी भाषाओं में किसी भी प्राकृत के नियमों का पालन नहीं हो रहा है। अतएव एक उद्गम होने पर भी सिन्धी एक स्वतन्त्र भाषा बन गई है, जो स्वरूप में दूसरों से सर्वथा भिन्न है।

सिन्धी सिन्ध में बोली जाती है, जो तीन भागों में बिभाजित है। व्याकरण की दृष्टि से विशेष अन्तर न रखते हुए भी तीनों का उच्चारण प्रायः भिन्न-भिन्न है। 'लारी' पश्चिमी सिन्ध (Lower-Sind) में, 'सिराइकी' हैदराबाद के पश्चिमोत्तर प्रदेश (Upper-Sind) में, और 'थरेली' थरपारकर प्रदेश (Thar) में बोली जाती है।

'लारी' अधिकांशतया गद्य में प्रयुक्त होने पर भी सर्वथा शुद्ध नहीं है, जिसमें स्वरों को ख़ूब तोड़मरोड़ कर व्यंजनों को भी उसके अनुरूप बनाने के लिए कोमल बना दिया है। 'सिराइकी' बोली ने 'लारी' से अत्यधिक शुद्ध होने के बावजूद भी अपने उच्चारण को बिलकुल बिगड़ने नहीं दिया है। 'सिराइकी' की सरसता एवं शुद्धता के फल-स्वरूप सिन्धी में एक कहावत प्रचलित है—"लारजो पढ़चो, सिरेजो ढगो।" इसका तात्पर्य यह है कि 'लारी' का पंडित भी 'सिराकी' का बैल ही है। 'थरेली' भाषा जोशीली और इन दोनों से निराली ही है। वह प्रायः मारवाड़ी में मिल गई है जिसको शिकारी एवं जरायम पेशा लोग बोलते हैं। 'थरेली' का अपना विशिष्ट साहित्य नहीं है। ये उपर्युक्त वाक्य डा० ई० ट्रम्प के "सिन्धी-भाषा के व्याकरण का अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बन्ध" नामक पुस्तक से लिये गये हैं, जिसको १८७२ में भारत-सरकार की आज्ञा से लिफ़जिग (Liefzig) जर्मनी में छपवाकर ट्रबनर एण्ड कंपनी ने प्रकाशित किया था। संस्कृत की प्राकृत अवस्था से ही अपभ्रंश का आविर्भाव

❀ 'माधुरी' पत्रिका के अप्रैल, १९४६ के अंक में प्रकाशित। श्री डी० बी० मीरचंदानी के अंग्रेज़ी-लेख का श्री रघुनन्दन विद्यार्थी द्वारा अनुवाद। तदर्थ धन्यवाद।

हुआ है। अपभ्रंश दो भागों में विभक्त है—नागरी और विराचद (ब्राचड़)। यह 'विराचद' अपभ्रंश ही घिस-घिसाकर सिन्धी-भाषा में परिणत हुई है। प्राकृत के वैयाकरण मार्कण्डिव ने भी इसको स्पष्ट किया है कि जो अपभ्रंश सिन्धुदेश में प्रचलित है, उसे 'विराचद' कहते हैं। दुर्भाग्य से सिन्ध के बाहर बहुत ही थोड़ा शिक्षित-समाज सिन्धी के इस इतिवृत्त को जानता है। अधिकतर लोग इसका प्रादुर्भाव अरबी तथा फ़ारसी से मानते हैं। इस भ्रान्त धारणा का मूलस्रोत इसकी अरबी-सिन्धी-लिपि है। अतः यह बतलाना नितान्त आवश्यक है कि सिन्धी-भाषा अरबी-लिपि में कैसे लिखी जाने लगी और इसी को प्रमाणित करने के लिए आपका ध्यान हम भारत के प्राचीन इतिहास की ओर आकृष्ट करते हैं।

सिन्ध में ७१२ A. D. तक आर्यों का शासन था। बौद्धधर्म के प्रभाव से भी यह अछूता नहीं रहा था। बौद्धकाल के भग्नावशेष, जो भिन्न-भिन्न स्थानों में पाये जाते हैं, इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। भारत का सीमान्तप्रदेश यह बृहस्पतिक्षेत्र सर्वप्रथम ७१२ A. D. में अरबों के शिकंजों में ग्रथित हो रौंदा जाने लगा। हिन्दू मुसलमान बनाये जाने लगे। परिणामतः बहुत थोड़े काल में सिन्ध की अधिकांश जनता अरबी संस्कृति एवं सभ्यता का स्वागत कर मुसलमानी रीति-रिवाजों को अंगीकृत करने लगी। लगभग ग्यारह सौ वर्ष तक सिन्ध की यही दशा रही, बल्कि उत्तरोत्तर बिगड़ती ही गई। तथापि हिन्दू रूढ़िवादी एवं सनातनी होने के कारण बचे हुए अति अल्पसंख्यक भी अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने में समर्थ हुए। सन् १८४३ में जब अंग्रेज़ों ने सिन्ध को जीता, उस समय हिन्दू-संस्कृति अपने जीर्णशीर्ण स्वरूप में विद्यमान थी।

सिन्ध की लिपि उस समय वणिकी देवनागरी थी, जो बहीखातों आदि में लिखी जाती थी। संस्कृत भी पाठशालाओं में पढ़ाई जाती थी, जिनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। मीरों के शासनकाल में शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। मुल्ला और मौलवी क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ाया करते थे। ऐसे मदरसों की संख्या अंग्रेज़ी राज्य के प्रारम्भ में छः सौ थी। अंग्रेज़ों ने जब शिक्षाप्रसार की ओर ध्यान दिया तो उन्हें ख़ूब कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हिन्दू और मुसलमानों की एक भाषा होने पर भी लिपि एक न थी। राजभाषा फ़ारसी थी। हिन्दू अपना हिसाब-किताब 'मोड़ी वणिकी' (मुड़िया) में रखते थे, जिसमें मात्राओं का अभाव होने से पढ़ने में कठिनता पड़ती थी।

अंग्रेज़ों ने फ़ारसी के स्थान पर सिन्धी को राज-भाषा बनाना चाहा, किन्तु उनकी दृष्टि में कोई स्वतन्त्र सिन्धी-लिपि न थी। सिन्धी की वास्तविक और ठीक लिपि देवनागरी ही थी, परन्तु सर रिचर्ड बर्टन ने अरबी-लिपि को, जो सिन्धी के विशिष्ट उच्चारण से समन्वय नहीं रखती थी, नये-नये लात और नूनों का आविष्कार करके भी अपनाने का आग्रह किया। केप्टेन स्टेक (Stack) जो सिन्धी के सर्वश्रेष्ठ विद्वान् थे तथा जिन्होंने सिन्धी-अंग्रेज़ी-कोष 1854, अंग्रेज़ी-सिन्धी-कोष 1847 और सिन्धी-व्याकरण 1849 नामक तीनों पुस्तकों का देवनागरी में ही निर्माण किया था। नागरी को ही सिंधी की अधिकारिणी बतलाते हुए प्रान्त में चलती 'वणिकी' को आवश्यक सुधार के साथ स्वीकृत करने की प्रार्थना की। पर उस समय के सिन्ध के कमिश्नर सर बार्टल फ़ेअर ने इस पर अपनी विवशता प्रकट की। उनका मत था कि न हिन्दू अरबी-लिपि को मानने को तैयार होंगे और न मुसलमान नागरी को ही स्वीकार करेंगे।

एक भाषा के विना कारोबार चलना कठिन था, अतः सन् १८५३ में ईस्ट इंडिया कम्पनी के कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स ने अरबी-लिपि को प्रयोग में लाने का निश्चय किया;

तदर्थ दस सहस्र रुपयों का प्रचार-व्यय भी सेंकशन कर दिया। उसी वर्ष मि० इलियस (Mr. Ellias) के नेतृत्व में सिन्धी के कतिपय विद्वानों की एक समिति ने अरबी के उनतीस अक्षरों को सिन्धी बोली की विशिष्ट कण्ठ्य, तालव्यादि ध्वनियों का प्रतिपादन करने में असमर्थ जान बावन वर्णों की एक लिपि अरबी-सिन्धी निर्धारित की। तत्पश्चात् उसी लिपि में फ़ारसी, मराठी, अरबी और गुजराती ग्रन्थों के अनुवाद होने लगे। वही अरबी-सिन्धी १८६६ में पुनः दुहराई गई। इसी तरह सुरभारती से उद्भूत सिन्धी का राज्य-कारणों से अनावश्यक लिपि-परिवर्तन मोटी भूल ही नहीं, सिन्धी का अधःपतन था। ठीक डाक्टर ट्रम्प ने घोषणा की—

"No alphabet suits the Sindhi letters, than the Sanskrit alphabets, the Sindhi being the genuine daughter of Sanskrit."

सिवा देवनागरी के सिन्धी बोली को कोई भी लिपि अनुकूल नहीं हो सकती। सिन्धी-व्याकरण (1972) के २६ वें पृष्ठ पर फिर उसी बात को दुहराते हुए डाक्टर साहब ने लिखा है कि भारतीय भाषाओं को अरबी अथवा अन्य विदेशी लिपि में लिखना उनकी हत्या करना है।

सिन्धी के विदेशी लिपि में लिखी जाने का मुख्य दुष्परिणाम यह हुआ है कि इतरप्रांतीय इसका आविर्भाव अरबी तथा फ़ारसी से मानते हैं। यहाँ तक कि भाषाशास्त्रज्ञ भी सिन्धी की इस वंशपरम्परा को नहीं जानते। दूसरे हम सिन्धी हिन्दुओं का भारत के अन्य हिन्दुओं से सांस्कृतिक सम्बन्धविच्छेद हो गया। हम धार्मिक ग्रंथों के परिशीलन से सर्वथा वंचित रहते, जो केवल संस्कृत और हिन्दी में ही पाये जाते हैं। यही तो कारण है कि सिन्ध के हिन्दू नये-नये मत-मतान्तरों को अपनाते हैं; पाश्चात्य सभ्यता के उपासक बन आमोद-प्रमोद में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सिन्ध में हिन्दुओं की अल्प संख्या होने के कारण देवनागरी को ठुकराना इष्ट नहीं था, जब कि संस्कृत से आविर्भूत अन्य भारतीय भाषाएँ देवनागरी में ही लिखी जाती हैं। साम्प्रदायिकता का कारण केवल बहाना-मात्र था; क्योंकि बंगाल में बंगला, महाराष्ट्र में मराठी और गुजरात में गुजराती को तत्-तत्प्रांतीय ईसाइयों, मुसलमानों और यहूदियों ने प्रेम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं के रूप में अपनाया है। सिन्ध में भी सिन्धी मुसलमान इसे प्रेम से अपनाते, यदि यह स्वीकार की जाती। सुतरां इसके दोषी अंग्रेज़ ही हैं।

यह भी ध्यान में रखने योग्य बात है कि सिन्धी केवल सिन्ध में ही नहीं बोली जाती। सिन्ध के निकटवर्ती कच्छ और काठियावाड़ के उत्तरी प्रदेश में बोली जानेवाली 'कच्छी' भी सिन्धी ही है। ठीक इसी तरह उत्तर में भावलपुर से मुलतान तक बोली जानेवाली 'लहंदा' भी सिन्धी से घना सम्बन्ध रखती है। १८९२ ई० में सिन्धी-भाषा के नवीन व्याकरणकार श्री झमटमल नारूमल ने अपनी पुस्तक के उपोद्घात में बतलाया है कि यद्यपि सिन्धी शुद्ध संस्कृतभाषा है, तथापि आठवीं शताब्दी से अरबी के साथ सम्पर्क होने के कारण सिन्धी में फ़ारसी तथा अरबी-शब्दों का सम्मिश्रण हो गया है। उनके मतानुसार सिन्धी की शब्दसंख्या बीस हज़ार है, जो इस तरह से विभाजित है—

संस्कृत १२०००, देशी (संस्कृत के तद्भव शब्द) ३५००, फ़ारसी २०००, अरबी २५००

इस सम्बन्ध में हमें यह बतलाते हुए प्रसन्नता होती है कि सिन्धी की समस्त क्रियाएँ, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, प्राकृतिक और भौगोलिक नाम, पशु और पक्षियों की बोलियाँ, उद्योग-धन्धों के नाम तथा अन्यान्य आवश्यक शब्द, जो भाषा के मुख्य अंग हैं, केवल संस्कृत के ही शब्द हैं। फ़ारसी और अरबी के केवल राजकीय, शिकार, युद्ध, सेना और ओषधियों के नाम ही सिन्धी में स्थान पा सके हैं।

अतः यह निर्विवाद सत्य है कि प्रचलित अरबी-सिन्धी-लिपि अप्राकृतिक (unnatural) और अयोग्य होने के साथ-साथ अग्राह्य भी थी। किन्तु यह लगभग अस्सी वर्षों से प्रयोग में आ रही है। प्रान्त की बहुसंख्यक मुसलिम जाति भी इसी के पक्ष में है। इस वक़्त लिपि-परिवर्तन के प्रश्न को हल करना अतीव दुष्कर ही नहीं, असाध्य भी है।

अतः भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए पाश्चात्य सभ्यता को श्रेयस्कर माननेवाले, पतन के कगारे पर खड़े हुए भी विनाशकारिणी तन्द्रा में झूमते हुए आर्य-सन्तानों को बचाना हमारा पुनीत कर्तव्य है। उसके लिए हम अधोलिखित कार्यक्रम को यथाशक्य अपनाना चाहते हैं—(१) सिन्धी-भाषा में लिखी जानेवाली समस्त धार्मिक, सामाजिक और शिक्षाप्रद (moral) पुस्तकें देवनागरी में लिखी जायँ। (२) समस्त घरेलू पत्रव्यवहार नागरी में हो। (३) सम्पूर्ण कन्या-शालाओं में सिन्धी, देवनागरी-लिपि में लिखाई-पढ़ाई जाय। (४) इतरप्रान्तीय बन्धु, जैसे कि गुजराती, पंजाबी, दक्षिणी, संयुक्तप्रान्तीय और मारवाड़ी आदि, जो सिन्ध के निवासी बन चुके हैं, अनिवार्य रूप से सिन्धी को देवनागरी में पढ़ें। ❀

इन सब बातों की ओर ध्यान देकर ही आज सिन्ध ने अपने प्रांगण में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का आवाहन किया है। अतएव हम भारती हिन्दी के कर्मनिष्ठ अनन्य उपासकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि इस शुभ अवसर पर समस्त आपदाओं को झेलते हुए भी आप सिन्ध में पधारें और भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्र-भाषा हिन्दी को समुन्नत एवं पल्लवित बनाने के लिए गन्तव्य पथनिर्देश करें।

❀ सिन्धु समाज के अनेक विद्वानों से भेंट करने पर विदित हुआ कि उनमें का एक समुदाय, यह जानते हुये, कि मौजूदा सिन्धी लिपि सवा सौ वर्ष पूर्व उनके पूर्वजों के विरोध के बावजूद अंग्रेज़ी शासन द्वारा जबरन लादी गई थी, आज देवनागरी लिपि को अपनाने में, अपनी आर्थिक क्षति समझ रहा है। इस लेख से प्रेरणा लेकर उन्हें समझना चाहिये कि देवनागरी लिपि के अपनाने-मात्र से लेखकों-प्रकाशकों का साहित्य नष्ट न होकर सारे राष्ट्र में फैल जायगा। सिन्धी लिपि को त्यागने की ज़रूरत नहीं है। उसको क़ायम रखते हुए, सिन्धी-साहित्य को देवनागरी लिपि के माध्यम से सारे राष्ट्र में प्रसारित करना राष्ट्र-एकीकरण के लिए नितांत आवश्यक है। —सम्पादक

[ॐ]

सिर्रे अक्बर*

(५१ उपनिषदों की फ़ारसी-व्याख्या)

कर्ता—

दाराशिकोह

अनुवादक

(मूल संस्कृत तथा फ़ारसी से)

डॉ॰ हर्षनारायण एम-ए., पीएच. डी.

सर्वं खल्विदं ब्रह्म

['बिस्मिल्लाह' की]† 'बे' का बिन्दु नित्य रहस्य के समान है

[भूमिका]

१. स्तुति उस सत्ता की जिस की बिस्मिल्लाह[1] की 'बे' का बिन्दु समस्त आस्मानी (अपौरुषेय) ग्रंथों में उस के नित्य रहस्यों में से है और क़ुर्आनि शरीफ़ की शास्त्र-योनि[2] (सूरतुल्फ़ातिहः)[3] [अल्हम्द आदि १:७] में संकेत 'इस्मे' आज़म [महन्नाम] से किया गया है और जिस नाम के अन्तर्गत समस्त फ़िरिश्तों, आस्मानी ग्रंथों, ईश-दूतों (नबिओं) तथा महात्माओं का उल्लेख है। परमेश्वर अपनी श्रेष्ठतम सृष्टि मुहम्मद, उन की सन्तान, उन के सम्पूर्ण मित्रमण्डल का मंगल करे!

---

* प्रस्तुत अनुवाद 'सिर्रे अक्बर' के तेहरान-संस्करण पर आधृत है। दाराशिकोह ने उपनिषद् के मूल मंत्र नहीं दिये हैं; अनुवादक डॉ॰ हर्षनारायण ने उन्हें दे दिया है, और उनका अनुवाद भी कर दिया है।

† प्रस्तुत पुस्तक में बड़े कोष्ठ [ ] में रखे शब्द हिन्दी अनुवादक द्वारा अपनी ओर से जोड़े गये हैं।

१ क़ुर्आनि शरीफ़ का प्रथम पद, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर के नाम के साथ (आरम्भ करता हूँ)'। २. अरबी में 'उम्मुलकिताब' जिस का शब्दार्थ है 'पुस्तक की माता'। ब्रह्मसूत्र(१.१.३) का शब्द 'शास्त्र-योनि' इस का सुन्दर पर्याय है। क़ुर्आन की प्रथम सूरः, 'सूरतुलफ़ातिहः', को 'उम्मुलकिताब' या 'उम्मुलक़ुर्आन' कहा जाता है। ३. सूरतुल्फ़ातिहः 'अल्हम्द' से आरम्भ होती है १: १-७

२. इसके पश्चात् जब यह निर्द्वन्द्व भिक्षुक मुहम्मद दाराशिकोह सन् १०५० हिज्री में स्वर्गोपम कश्मीर गया था तो उसे ईश्वर की अनुकम्पा और अनन्त अनुग्रह से सिद्धों में सिद्ध, ज्ञानियों में वरेण्य, गुरुओं के गुरु, स्थविरों के स्थविर, शास्ताओं के शास्ता, तत्त्ववेत्ता, एकेश्वरवादी, महात्मा, मुल्लाशाह (जिन्हें परमेश्वर का संरक्षण प्राप्त हो) के शिष्यत्व का गौरव प्राप्त हुआ। क्योंकि [विनीत को] प्रत्येक सम्प्रदाय को देखने तथा एकेश्वरवाद के उत्तम प्रवचनों के सुनने का चाव भी साथ था, और [उस ने] ब्रह्मज्ञान (तसव्वुफ़) की बहुत सी पोथियों का अनुशीलन और पुस्तकों का प्रणयन किया था, और अद्वैत की प्राप्ति की तृष्णा, जो एक अथाह समुद्र है, निरंतर बढ़ती ही जाती थी और जटिल प्रश्न मन में आते ही जाते थे, जिन का समाधान ईश्वरीय वाणी तथा अनन्त सत्ता-सम्बन्धी आप्त वचनों के विना सम्भव न था, और क्योंकि महान् क़ुर्आन, उदार विवेकपुरस्सर ग्रंथ, प्रायः रहस्यात्मक है और आज उन रहस्यों का ज्ञाता दुर्लभ है; विनीत ने चाहा कि समस्त आस्मानी पुस्तकों का अनुशीलन करे जिस से कि ईश्वरीय वाणी, जो अपनी व्याख्या आप है, यदि एक पुस्तक में संक्षिप्त है तो दूसरी में विशद और विस्तृत रूप में उपलब्ध हो जाय और उस विस्तर से वह संक्षेप ज्ञात हो जाय।

३. उस ने तौरात, इंजील, ज़बूर, और अन्य ग्रंथों पर दृष्टि डाली, परन्तु अद्वैत का प्रवचन उन में भी संक्षिप्त तथा गूढ़ था। सरल अनुवादों से जिन्हें स्वार्थियों ने किये थे अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हुई। तब इस बात की धुन सवार हुई कि हिन्दुस्थान में किस ओर से अद्वैत-तत्त्व प्रकाशित है, अद्वैतवाद की चर्चा इतनी अधिक है, और प्राचीन हिन्दुस्थान के पण्डितों और ज्ञानियों को ब्रह्म के एकत्व से नकार और एकेश्वरवादियों पर आपत्ति नहीं है, अपितु पूर्ण विश्वास है; वर्तमान काल के मूर्खों के विपरीत जो अपने आप को उलमा (धर्माचार्य) मान बैठे हैं, गाल बजाने तथा ब्रह्मज्ञानिओं और अद्वैतवादियों की यातना और नास्तिकीकरण में निरत हैं, अद्वैतवाद के उन समस्त वचनों को जो प्रशस्त, विवेकपुरस्सर ग्रंथ [क़ुर्आने शरीफ़] तथा नबी[1] की प्रामाणिक हदीसों से स्पष्टतः सिद्ध हैं, ठुकराते हैं, और ईश-मार्ग के बटमार हैं।

४. इन सोपानों की खोज के पश्चात् पता चला कि इस प्राचीन [हिन्दू] जाति में सारी आस्मानी पुस्तकों से पूर्व चार आस्मानी पुस्तकें, जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, तथा अथर्ववेद हैं, समस्त विधि-विधानों के सहित तत्कालीन ऋषिओं पर जिन में श्रेष्ठतम ब्रह्मा अर्थात् ईश्वर के सुहृत्स्वरूप आदम हैं, प्रकट हुईं और कि यह अर्थ इन्हीं पुस्तकों से प्रकट है।

---

१. हज़्रत मुहम्मद (स०)।

५. और क़ुर्आने शरीफ़ से यह भी विदित होता है कि कोई जाति ऐसी नहीं है जो निर्ग्रन्थ और निर्दूत हो। जैसा कि उस का वचन है—"....व मा कुन्ना मुअज्जिबीन ह़त्ता नब्अ़स रसूलन्" [१७:१५]। दूसरी आयत में—"....व अिम्मिन् अुम्मतिन् अिल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीरुन्" [३५:२४], और अन्यत्र कहता है—"लक़द् अर्सल्ना रुसुलना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना मअ़हुमुल्-किताब वल्मीज़ान...." [५७:२५]। अतः इस से निश्चित हुआ कि महान् परमेश्वर किसी जाति को दण्डित नहीं करता जब तक उस जाति में अपना दूत नहीं नियुक्त कर देता, और कोई जाति ऐसी नहीं जिस में [परमेवश्र का] संदेशहर न हुआ हो। और निश्चय जानो कि उस ने दूतों को प्रकट चमत्कारों के साथ भेजा है और उन पर पुस्तक तथा [सत्-असत् का] विवेक उतरा है।

६. और इन चार पुस्तकों के सार को जिस में ही एक ईश्वर की भक्ति और साधना का निरूपण है, उपनिषद् नाम से पुकारते हैं। और उस युग के पुरस्कर्त्ताओं ने उसे पृथक् कर उस पर सुव्यक्त और सुविस्तृत भाष्य लिखे हैं और [लोग] सदा श्रेष्ठतम उपासना के रूप में ग्रहण करते हुए उस का पाठ करते हैं।

७. क्योंकि इस आत्मदर्शन से हीन जिज्ञासु की दृष्टि मूल अद्वैत-तत्त्व पर थी, न कि अरबी, सुरयानी, इब्रानी, और संस्कृत पर, ऐसी इच्छा हुई कि इन उपनिषदों को जो अद्वैत का भांडार हैं और जिन के ज्ञाता उस [हिन्दू] जाति में भी कम रह गये हैं, फ़ारसी भाषा में बिना न्यूनाधिक्य के, निःस्वार्थ भाव से वाक्यानुवाक्य, शब्दानुशब्द अनूदित करके समझे कि यह [हिन्दू] समाज जो उसे मुसलमानों से इतना छिपा कर रखता है, उस में क्या रहस्य है।

८. क्योंकि आजकल वाराणसी नगर का, जो इस जाति का विद्यापीठ है, इस जिज्ञासु से सम्बन्ध था, [उस ने] पण्डितों और संन्यासियों को जो अपने काल के अग्रणी तथा वेद और उपनिषद् के ज्ञाता थे जमा करके इस अद्वैत-सार को जो उपनिषद् अर्थात् 'गोपनीय रहस्य' है और जो परमेश्वर के सभी भक्तों का साध्य-लक्ष्य है, सन् १०६७ हिज्री में निःस्वार्थ भाव से अनूदित किया। और हर कठिनाई तथा हर ऊँची शिक्षा जो [वह] चाहता था, जिसे पाने की [उस की] इच्छा थी, जिसे [वह] खोजता लेकिन पाता नहीं था, [उसे उस ने] पुरातन ग्रन्थ के इस सार से, जो निस्सन्देह आस्मानी पुस्तकों में प्रथम, सज्ज्ञान का आदि स्रोत, और अद्वैत-तत्त्व का सागर है, और क़ुर्आने शरीफ़ के अनुकूल बल्कि उस का भाष्य हैं, प्राप्त किया। और स्पष्ट आभास होता है कि यह आयत साक्षात् इसी प्राचीन पुस्तक के विषय

में है—"अिन्नहू लक़ुर्आनुन् करीमुन् (७७) फ़ी किताबिम्-मक्नूनिन् (७८) ल्'ला यमस्सुहू अिल्लल्-मुतह्हरून (७६) तन्ज़ीलुम्-मिर्रब्बिल्-आलमीन (८०)" [५६:७७-८०]।

९. अर्थात् उदार क़ुर्आन एक पुस्तक में है जो एक गुप्त पुस्तक है जिस की जानकारी पवित्र आत्माओं के अतिरिक्त किसी को नहीं होती। और वह संसार के पालनहार के द्वारा अवतीर्ण हुई है। और स्पष्ट ज्ञात होता है कि यह आयत ज़बूर, तौरात, और इंजील के बारे में नहीं है। और शब्द 'तन्ज़ील' [अवतरण] से ऐसा प्रकट होता है कि यह लौह मह्फ़ूज़ [सुरक्षित पट][1] के सम्बन्ध में भी नहीं है। और क्योंकि उपनिषद् जो गोपनीय रहस्य है, इस पुस्तक का मूल है और क़ुर्आने शरीफ़ की आयतें उस में ज्यों की त्यों पाई जाती हैं, अतः निश्चय जानो कि 'गुप्त पुस्तक' (किताबे मक्नून) यही प्राचीन पुस्तक है और इस से इस भिक्षुक के लिए 'अज्ञात' ज्ञात हो गया और 'न समझा हुआ' समझा हुआ हो गया।

१०. अनुवाद आरम्भ करते समय क़ुर्आने शरीफ़ से शकुन निकालने पर उस की सूरए आराफ़[2] निकली जिस का आरम्भ यह है—"अलिफ़् लाम् मीम् स्वाद् (१) किताबुन् अुन्ज़िल अिलैक फ़ला यकुन् फ़ी स्द्रिक ह़रजुम्-मिन्हु लितुन्ज़िर बिही व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन (२)" [७:१-२] अर्थात् "हे मुहम्मद! (परमेश्वर उन का कल्याण और त्राण करे!)[3] अलिफ़् लाम् मीम् साद् एक पुस्तक है जिसे तुम्हारी ओर उतारा गया है। अतः तुम्हारे हृदय में इस पुस्तक के विषय में संशय नहीं होना चाहिए, ताकि उस पुस्तक से लोगों को डराओ, और वह विशेषतः आस्थावानों (मोमिनों) के लिए उपदेशप्रद है।" और स्वयं अपने, अपनी संतानों और मित्रों, और सत्य के जिज्ञासुओं के लाभान्वित होने के अतिरिक्त [उस का] कोई अन्य उद्देश्य अथवा प्रयोजन नहीं था।

११. जो भाग्यवान् शुद्ध भगवान् की प्रसन्नता के लिए क्षुद्र मन के स्वार्थ का परित्याग कर इस अनुवाद को जो 'सिर्रे अक्बर' नाम से अभिहित है ईश्वर-वचन का अनुवाद समझकर और हठधर्मी छोड़कर पढ़े और समझेगा वह संशयरहित, निर्भय, निरापद, और सदा के लिए मुक्त हो जायगा।

---

१. क़ुर्आने शरीफ़ [सू० वाक़िअ़ति ५६:७८] के अनुसार वह स्वर्ग में एक सुरक्षित पट पर लिपिबद्ध है। २. क़ुर्आने शरीफ़ की सातवीं सूरः। ३. अरबी मूल—'सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम्'।

शाहज़ादः दाराशिकोह

[विक्टोरिया मेमोरियल, कलकत्ता के सौजन्य से]

[ॐ]

ईशावास्योपनिषद्

[शुक्लयजुर्वेदीय काण्वशाखीय]

[पूर्णमदः, पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते;
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।][1]

[ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः]

[अक्मल आँ, वऽक्मल ईं, ज़ेऽक्मल हमी उफ़्तद अक्मल;
ज़ेऽक्मल अक्मल चुँ फ़तद, बाज़ बमानद अक्मल ।][2]

(हिन्दी अनुवाद) [वह (ब्रह्म) पूर्ण है, यह (जगत्) पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण निकलता है; पूर्ण से पूर्ण के निकलने पर पूर्ण ही शेष रहता है ।][1]

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा, मा गृधः, कस्य स्विद्धनम् ? ।।१।।

अनु०—धरती पर जो जगत् है वह ईश्वर द्वारा आच्छादित है। तू उस के त्याग से भोग कर; लोभ न कर, धन किस का ? (१)

व्याख्या–'ईश' का अर्थ है सब का स्वामी और 'वास्य' का अर्थ है आच्छादित, अर्थात् समस्त जगत् जगदीश्वर से आच्छादित है। वह जगदीश्वर प्रकट है तथा जगत् उसमें निहित है। जो कुछ नाम और रूप वाला है वह जगदीश्वर से निःसृत हुआ है, जगदीश्वर में स्थित है, और जगदीश्वर में लय हो जाता है। जगत् की मूल सत्ता जो आत्मा है ऋत और सत्य है, और जगत् का नाम-रूप जो अविद्या है असत् और मिथ्या है। इस सत्ता में आत्मा जो ऋत और सत्य है व्याप्त हो रहा है और इसे भी ऋत और सत्य प्रदर्शित कर रहा है, अर्थात् जगत् का नाम और रूप सत्याभ असत्य है [अर्थात् है असत्य किन्तु सत्य के समान प्रतिभासित होता है], और कोई अस्तित्व नहीं रखता।

---

१ यह मंत्र दाराशिकोह ने नहीं दिया है, यद्यपि इसे प्रायः उपनिषद् के आरम्भ में लगा देने की परिपाटी है। २. उक्त मंत्र का हिन्दी-अनुवादक का किया हुआ यह फ़ारसी-अनुवाद है।

अतः चाहिए कि इस सत्यवत् प्रतीत होने वाले असत्य की, जिस की तू ने स्वयं कल्पना कर ली है और जिस से दिल लगा लिया है, आसक्ति और कामना त्याग कर निष्काम भाव से और उस से बिना किसी आसक्ति के उन समस्त कर्मों, समस्त सुखों, और समस्त व्यसनों का (जो अभीष्ट हों) उपभोग कर और हृदय में आसक्ति की भावना न रख। संसार और धन किस का है ? और किस का हुआ है ? देखा जाता है कि एक के पास से दूसरे के पास चला जाता है, और एक से दूसरे को प्राप्त होता है। [१]

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

अनु०—संसार में सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करे। ऐसा [ही है।] इस के सिवा कोई और मार्ग नहीं है, जिस से मनुष्य में कर्म की आसक्ति न हो। (२)

व्या०–यदि सौ वर्ष तक जीवित रहे तो भी शुभ कर्मों का त्याग न कर और उन के फल की इच्छा न कर। अर्थात् फल की कामना से रहित साधना तथा कर्म सदैव करता रह, क्योंकि साधक की मुक्ति का यही मार्ग है और उस के लिए कोई अन्य मार्ग नहीं है। जब तू शुभ कर्म करे और उस का फल दृष्टि में न रखे तो इस के कारण तुझे दुष्कर्म भी हानि नहीं पहुँचायेंगे और तू मुक्ति लाभ कर लेगा। [२]

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस् ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥

अनु०—वे असुरों के लोक घोर अन्धकार से आच्छादित हैं। जो लोग आत्मा का हनन करने वाले हैं वे मृत्यु के पश्चात् उन्हें ही प्राप्त होते हैं। (३)

व्या०–जो कोई इस अर्थ को नहीं समझता और कर्म फल के लिए करता है और उस बुद्धि के होते हुए जिस से वह आत्मा को जान सकता है, उस ने नहीं जाना और प्रमाद किया, वह असुरों के लोक में, जो शैतानों का लोक है, और जिस लोक को अन्धकार ने ऐसा आच्छादित कर रखा है कि उस में कोई भी वस्तु अवभासित नहीं होती, जाता है। उन्हों ने अपना रक्त अपने ही हाथ से बहाया है। [३]

अनेजदेकं, मनसो जवीयो; नैनद् देवा आप्नुवन्, पूर्वमर्षत् ।
तद् धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्, तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ।।४।।

अनु०—[वह] निःस्पन्द है, एक है, मन से भी तीव्रगामी है, उसे इन्द्रियाँ प्राप्त नहीं कर सकीं, क्योंकि यह पहले ही पहुँचा हुआ है। वह स्थिर होते हुए भी अन्य दौड़ने वालों का अतिक्रमण कर जाता है। उस में ही वायु जलों को धारण करता है। (४)

व्या०—यह आत्मा यद्यपि गतिशून्य है, अद्वितीय है, और दूसरा नहीं रखती, और मन के भाव से भी अधिक शीघ्रगामी है, उस तक समस्त बाह्य और आभ्यन्तर ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं पहुँच सकतीं। जहाँ कहीं इन्द्रियाँ अपने को पहुँचा सकती हैं, वहाँ वह इन्द्रियों से पूर्व ही विद्यमान होता है। और यद्यपि वह गति नहीं करता तथापि वह समस्त द्रुतगामियों के पूर्व वहाँ पहुँचा होता है। हिरण्यगर्भ जो सभी से कर्म कराता है और कर्मों के फल की प्राप्ति कराता है उसी आत्मा में है। अर्थात् आत्मा सर्वव्यापक है।[४]

तदेजति, तन् नैजति; तद् दूरे, तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य, तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ।।५।।

अनु०—वह चलता है, वह नहीं चलता है; वह दूर है, वह निकट है। वह इस सब के भीतर है, वह इस सब के बाहर भी है। (५)

व्या०—गतिमान वही आत्मा है और गतिशून्य वही, दूर वही आत्मा है और निकट वही, और भीतर वही आत्मा है और बाहर वही। [५]

यस् तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ।।६।।

अनु०—जो भी समस्त भूतों को आत्मा में ही देखता है और समस्त भूतों में आत्मा को, वह इस के कारण [किसी से] घृणा नहीं करता। (६)

व्या०—जो कोई समस्त भूतों और समस्त जगत् को अपने में देखता है और अपने को समस्त भूतों में और समस्त जगत् में, उस को कोई वस्तु कुत्सित नहीं दीखती, और वह किसी वस्तु से घृणा नहीं करता, और कोई भी वस्तु उसकी दृष्टि में बुरी नहीं होती।[६]

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः
तत्र को मोहः, कः शोक, एकत्वमनुपश्यतः ? ॥७॥

अनु०—जिस दशा में ज्ञानी के लिए समस्त भूत आत्मा ही हो गये उस में एकत्व-द्रष्टा को क्या शोक और क्या मोह ? (७)

व्या०—जो ज्ञानी कि स्वयं सर्वमय हो गया है और जिस में द्वैत की भावना नहीं रह गयी है, वह किस से मोह करे और किस से घृणा प्रकट करे ? क्योंकि वह आत्मा हो जाता है।[1] [७]

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम्,
अस्नाविरं, शुद्धमपापविद्धम्,
कविर्, मनीषी, परिभूः, स्वयंभूर्
याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

अनु०—वह सर्वगत, निर्मल, अशरीरी, अक्षत, स्नायु से रहित, शुद्ध, अ-पापग्रस्त, क्रान्तदर्शी, मनीषी, सर्वोत्कृष्ट, और स्वयंभू है। उसने युगानुयुग के लिए यथायोग्य रीति से अर्थों का विभाग किया है। (८)

व्या०—वह सर्वव्यापक है, वह पवित्र है, वह शरीर-रहित है, वह अक्षत है, उस का कोई रंग नहीं है, वह उत्पत्ति, जीवन, तथा मरण तीनों गुणों से मुक्त है, वह निष्पाप है, वह निष्कर्म है, वह शुभाशुभ कर्मों से परे है, वह सर्वज्ञ तथा सर्वद्रष्टा है, वह महानों से महान् है, वह उच्चों में उच्च है, वह अपनी सत्ता से सत्तावान् [स्वयम्भू] है, और समस्त लोक-लोकान्तर को सृष्टि के विविध रूपों में उसी ने रचा है। [८]

---

१ यह वाक्य (फ़ारसी मूल—'व आँ आरिफ़ व ग्यानी कि आत्मा शुदः') वस्तुतः इसी सातवें मंत्र का भाग है जो (मूल ग्रंथ में) मंत्र ८ के आरम्भ में आ गया है। किन्तु उस का रूप यों होना चाहिए—'क्योंकि वह ज्ञानी आत्मा हो जाता है' ('कि आँ आरिफ़ व ग्यानी आत्मा शुदः अस्त')।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ॥९॥

अनु०—वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं जो अविद्या की उपासना करते हैं । [और] वे मानो उस से भी घोरतर अन्धकार में [प्रवेश करते हैं] जो विद्या में रत हैं । (९)

व्या०–जो लोग कर्मों के फल पर दृष्टि रखते हैं, और उसी में रत हैं, वे घोर अंधकार में पड़ते हैं । और वे, जिन्होंने कर्म नहीं किया है और जिन का अन्तःकरण साधना द्वारा शुद्ध नहीं हुआ है, और बिना समझे हुए केवल अनुकरण में ब्रह्म-ज्ञान की बातें करते हैं, उन लोगों की अपेक्षा जो कर्मफल पर दृष्टि रखने के कारण घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं, अधमतर हैं और घोरतर अंधकार में प्रवेश करते हैं । [९]

अन्यदेवाहुर् विद्यया, ऽन्यदाहुरविद्यया ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस् तद् विचचक्षिरे ॥१०॥

अनु०—विद्या से अन्य ही [फल] कहते हैं और अविद्या से अन्य कहते हैं । ऐसा हम ने विद्वानों से सुना है, जिन्हों ने हमारे लिए उस की व्याख्या की । (१०)

व्या०–वे हैं जो कहते हैं कि 'सुकर्मों' का फल दूसरा है और 'ज्ञान' का फल दूसरा । [१०]

विद्यां चाविद्यां च यस् तद् वेदोभयं स ह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥११॥

अनु०—विद्या और अविद्या दोनों को जो साथ-साथ जानता है वह अविद्या से मृत्यु को तर कर विद्या से अमृत को प्राप्त कर लेता है । (११)

व्या०–इसे स्वीकार न कर, क्योंकि दोनों का फल एक है । क्योंकि उस कर्म से, जो फलाकांक्षा के बिना किया जाता है, निष्पाप और शुद्ध होकर ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, और साक्षात् ब्रह्म हो जाते हैं । [११]

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्यां रताः ॥१२॥

अनु०—घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं जो असंभूति की उपासना करते हैं, मानों उस से घोरतर अन्धकार में [प्रवेश करते हैं] जो संभूति में रत हैं। (१२)

व्या०–जो निर्गुण की उपासना करते हैं वे असम्भूति हैं और जो सगुण की उपासना में रत हैं वे सम्भूति हैं। [१२]

अन्यदेवाहुः संभवादन्यदाहुरसंभवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस् तद् विचचक्षिरे ॥१३॥

अनु०—सम्भव (सम्भूति) से अन्य ही फल कहते हैं। असम्भव (असम्भूति) से अन्य कहते हैं। (१३)

व्या०–दोनों ही दल कहते हैं कि निर्गुणोपासना का फल दूसरा है और सगुणोपासना का फल दूसरा। ये दोनों दल भी घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। [१३]

संभूतिञ्च विनाशं च यस् तद् वेदोभयं सह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा संभूत्याऽमृतमश्नुते ॥१४॥

अनु०—संभूति और विनाश (असंभूति) दोनों को जो साथ-साथ जानता है वह विनाश से मृत्यु को तर कर संभूति से अमृत को प्राप्त कर लेता है। (१४)

व्या०–चाहिए कि असम्भूति और सम्भूति [निर्गुण और सगुण] को, निरुपाधि और सोपाधि ब्रह्म को, एक समझ कर, चित्त को उस की उपासना से शुद्ध कर के, और ज्ञान प्राप्त कर के मुक्ति प्राप्त करें। [१४]

[मंत्र ९ से १४ का सारांश–]

(जो कोई शुभ कर्म करता है और फल उस की दृष्टि का विषय नहीं रहता, और जो कोई उपासना करता है और कर्म-फल पर दृष्टि नहीं रखता, और जिस किसी ने ज्ञान की प्राप्ति की है, इन तीनों ही दलों का परिणाम मुक्ति है जिसे ब्रह्म-निर्वाण से अभिहित किया जाता है।)

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥

अनु०—चमकीले पात्र से सत्य का मुख ढका हुआ है। हे पूषन् (जगत् के पालक)! उसे तू सत्यधर्मा को दर्शन कराने के लिए अनावृत कर दे। (१५)

व्या०–सत्य का मुख सुवर्ण के पात्र से ढका हुआ है। हे पूषन्! तू उसे खोल दे, ताकि हम, जिन्हें सत्य अभीष्ट है, उस के दर्शन से कृतार्थ हों। [१५]

पूषन्नेकर्षे ! यम ! सूर्य ! प्राजापत्य ! व्यूह रश्मीन् समूह ।
तेजो यत् ते रूपं कल्याणतमं तत् ते पश्यामि । योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥१६॥

अनु०—हे पूषन् ! हे एकाकी गतिमान् ! हे यम ! हे सूर्य ! हे प्रजापति-नन्दन ! तू अपनी रश्मिओं को हटाकर एक ओर कर ले। जो तेरा अत्यन्त कल्याणमय रूप है उस तेरे [रूप को] देखता हूँ। वह जो पुरुष है, वह मैं हूँ। (१६)

व्या०–हे पूषन्! हे एकाकी पथिक (एकर्षे)! हे यम! हे सूर्य! हे प्रजापति-नन्दन! अपनी रश्मिआँ सृष्टि में विखेर और अपनी ज्योति को पुंजीभूत कर ले, ताकि मैं तेरी मनोहारी छटा देखूँ। जो वह पुरुष है वह मैं हूँ। [१६]

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।
ॐ क्रतो स्मर, कृतं स्मर, क्रतो स्मर, कृतं स्मर ॥१७॥

अनु०—वायु सूत्रात्मा को और यह भस्मान्त शरीर अमृत को [प्राप्त हो]। हे संकल्पात्मक मन! स्मरण कर, किये हुए का स्मरण कर; हे संकल्पात्मक मन ! स्मरण कर; किये हुए का स्मरण कर। (१७)

व्या०–मेरा जीवन उस अमर वायु में लीन हो जाय! और मेरा शरीर भस्म में बिखर जाय! हे मन! अपने कर्मों का स्मरण कर। हे मन! अपने कर्मों को अपने ही में देख। [१७]

अग्ने ! नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव ! वयुनानि विद्वान् !
युयोध्यस्मज् जुहुराणमेनो, भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥१८॥

अनु०—हे अग्नि ! हे समस्त ज्ञान-कर्म के ज्ञाता देव ! हमें अभ्युदय के लिए सन्मार्ग पर चला। हमारे कुटिल पापों को नष्ट कर। हम तुझे बारम्बार नमस्कार करते हैं। (१८)

व्या०—हे अग्नि ! हे प्रकाश-स्वरूप देव ! हमें सन्मार्ग पर ले चल और मुक्ति रूपी महान् ऐश्वर्य को प्राप्त करा। हे हमारे समस्त कर्मों के ज्ञाता ! हमारे पापों को क्षमा कर, तुझे अनेक नमस्कार ! [१८]

[उपसंहार—]

जो कोई मुक्त हो जाता है उस की समस्त बाह्य और आभ्यन्तर ज्ञानेन्द्रियाँ उस के सूक्ष्म शरीर के साथ मृत्यु के पश्चात् हिरण्यगर्भ में, जो सूक्ष्म तत्त्वों की समष्टि होता है, लय हो जाती हैं। और उस का जीवात्मा (परम) आत्मा के साथ एकीभूत हो जाता है। और उस का स्थूल शरीर भस्म हो जाता है। और मृत्यु के समय ज्ञानी अपने कर्मों और कर्म-फलों से कहते हैं, कि हे हमारे कर्मो ! हमें याद रखना, और हे हमारे कर्मों के फलो ! हमें स्मरण रखना, क्योंकि हमारी दृष्टि कभी कर्म और कर्म-फल पर नहीं रही है; और ब्रह्म की ज्योति से कहते हैं कि हे ज्योतिःस्वरूप ! अर्थात् हे प्रकाश-स्वरूप देव ! हमें सन्मार्ग पर चला और मुक्ति के महान् ऐश्वर्य को प्राप्त करा, क्योंकि तू हमारे सभी कर्मों का ज्ञाता है, और हमारे पापों को क्षमा कर। तुझे बहुत-बहुत नमस्कार, अर्थात् तेरी बारम्बार वन्दना।

ज्ञानी उस पुरुष को जानता है जो सूर्य में है, और वह सत्ता है जो साक्षात् ज्योति है। वह मैं हूँ। और चिदाकाश जो निरपेक्ष तत्त्व है मैं हूँ, और ब्रह्म जो सर्वस्रष्टा है मैं हूँ।

समाप्त हुई ईशावास्योपनिषद् जो महान् ब्रह्मविद्या है, अर्थात् महान् स्रष्टा की विद्या।

[पूर्णमदः, पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते;
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।]

[ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः]

[ॐ]

केनोपनिषद्

[सामवेदीय तलवकारोपनिषद्]

[ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि—वाक्, प्राणश्, चक्षुः, श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदम्। माऽहं ब्रह्म निराकुर्याम्। मा मा ब्रह्म निराकरोत्। अनिराकरणमस्त्वं निराकरणमस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास् ते मयि सन्तु, ते मयि सन्तु।]

[ॐ. शान्तिः शान्तिः शान्तिः]

[मेरे अंग पुष्ट हों—वाणी, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, बल, और सभी इन्द्रियाँ। यह सब औपनिषद ब्रह्म है। मैं ब्रह्म का निराकरण[1] न करूँ, ब्रह्म मेरा निराकरण न करे, कदापि न करे। निराकरण न हो, मेरा निराकरण न हो। उपनिषदों में जो धर्म हैं वे आत्मा में निरत मुझ में हों, वे मुझ में हों।]

ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः ?
केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः ?
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति ?
चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ? ॥१॥

अनु०—प्रेरित मन किस के द्वारा प्रेरित होकर [विषयों पर] पड़ता है ? प्रथम प्राण किस की प्रेरणा से चलता है ? किस से प्रेरित होकर [प्राणी] यह वाणी बोलते हैं ? आँख और कान को कौन देव प्रेरणा देता है ? (१)

व्या०—प्रजापति के जिज्ञासुओं ने प्रजापति से पूछा कि मन किस की आज्ञा और प्रेरणा से क्रिया करता और चलता है, और प्राण जो सब का मूल है किस की आज्ञा और

---

१ निराकरण करना अर्थात् विमुख होना।

प्रेरणा से क्रिया करता और चलता है, वाणी किस की आज्ञा और प्रेरणा से कार्य करती है, चक्षु और श्रोत्र किस देव के आदेश से अपना-अपना कार्य करते हैं। [१]

श्रोत्रस्य श्रोत्रं, मनसो मनो, यद्
वाचो ह वाचं, स उ प्राणस्य प्राणः,
चक्षुषश् चक्षुरतिमुच्य धीराः
प्रेत्यास्माल् लोकादमृता भवन्ति ॥२॥

अनु०—जो श्रोत्र का श्रोत्र है, मन का मन है, निश्चय ही वाणी की वाणी है, वही प्राण का प्राण है, चक्षु का चक्षु है। [ऐसा जानकर] धीर पुरुष संसार से छूटकर अमर हो जाते हैं। (२)

व्या०–प्रजापति ने कहा––कान श्रवणों के श्रवण की आज्ञा से, मन मनों के मन से, वाणी वाणियों की वाणी से, प्राण प्राणों के प्राण से, चक्षु दृष्टिओं की दृष्टि से। जो कोई इस देवों के देव को, जो ज्योतिओं की भी ज्योति है, जान लेता है, हे धीर और दृढ़ ज्ञानियो! वह इस शरीर को छोड़ने के पश्चात् अमर तथा मुक्त हो जाता है। [२]

न तत्र चक्षुर् गच्छति, न वाग् गच्छति, नो मनो; न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यात्। अन्यदेव तद् विदितादथो अविदितादधि। इति शुश्रुम पूर्वेषां, ये नस् तद् व्याचचक्षिरे ॥३॥

अनु०—वहाँ न चक्षु जाता है, न वाणी जाती है, न मन। हम नहीं जानते, हम नहीं समझते, कि उस का अनुशासन किस प्रकार करें। वह विदित और अविदित [अथवा विद्या और अविद्या] से ऊपर है। पूर्वाचार्यों से हमने ऐसा ही सुना है, जिन्हों ने हमारे लिए उस का व्याख्यान किया था। (३)

व्या०–वह ऐसी सत्ता है जिस तक दृष्टि नहीं पहुँचती, जिस तक वाणी नहीं पहुँचती, और जिस तक मन नहीं पहुँचता। जो मन से नहीं जाना जा सकता और जो विद्या से नहीं जाना जा सकता, उसे किस प्रकार समझाया जा सकता है? वह ज्ञात तथा अज्ञात दोनों के ऊपर है, हम ने पूर्वाचार्यों से ऐसा ही सुना है। [३][1]

---

१ इस मंत्र के अंतिम वाक्य को 'सिर्रे अक्बर' में स्वतंत्र, चौथे मंत्र के रूप में परिगणित किया गया है, जिस के फलस्वरूप उपनिषद् के प्रथम खण्ड के मंत्रों की संख्या ८ के स्थान पर ९ हो जाती है। अनुवाद में मूल क्रम को ही मान्यता दी गयी है।

यद् वाचाऽनभ्युदितं, येन वागभ्युद्यते;
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ॥४॥

अनु०—जो वाणी से प्रकाशित नहीं होता, जिस से वाणी प्रकाशित होती है, उसी को तू ब्रह्म जान, न कि इसे जिस की [लोक] उपासना करता है।(४)

व्या०–जिस सत्ता तक वाणी नहीं पहुँचती और जो वाणी तक पहुँचती है, उसी को तू ब्रह्म जान। और जो वाणी में आ जाता है वह ब्रह्म नहीं है। वह असीम है, और जो वाणी में आ जाता है वह ससीम है; और जो ससीम होता है वह ब्रह्म नहीं है। [४]

यन् मनसा न मनुते, येनाहुर् मनो मतम्;
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ॥५॥

अनु०—जो मन से मनन नहीं करता, जिस से मन मनन किया हुआ कहा जाता है, उसी को तू ब्रह्म जान, न कि जिस की [लोक] उपासना करता है।(५)

व्या०–जिस सत्ता तक मन नहीं पहुँचता और जो मन तक पहुँचती है, उसी को तू ब्रह्म जान। जो मन में आ जाता है वह ब्रह्म नहीं है। वह असीम है, और जो मन में आ जाता है, वह ससीम होता है; और जो ससीम होता है वह ब्रह्म नहीं है। [५]

यच् चक्षुषा न पश्यति, येन चक्षूँषि पश्यति;
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ॥६॥

अनु०—जो चक्षु से नहीं देखता जिस से [लोक]चक्षुओं को देखता है, उसी को तू ब्रह्म जान, न कि जिस की [लोक] उपासना करता है। (६)

व्या०–जिस सत्ता तक दृष्टि नहीं पहुँचती और जो दृष्टि तक पहुँचती है, उसी को तू ब्रह्म जान। जो दृष्टि में आ जाता है वह ब्रह्म नहीं है। वह असीम है और जो दृष्टि में आ जाता है, वह ससीम होता है; और जो ससीम होता है वह ब्रह्म नहीं है। [६]

यच्छ्रोत्रेण न श्रृणोति, येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्;
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ॥७॥

अनु०—जो श्रोत्र से नहीं सुनता, जिस से यह श्रोत्र सुना जाता है, उसी को तू ब्रह्म जान, न कि जिस की [लोक] उपासना करता है। (७)

व्या०–जिस सत्ता तक श्रोत्र नहीं पहुँचता और जो श्रोत्र तक पहुँचती है, उसी को तू ब्रह्म जान। जो श्रोत्र में आ जाता है वह ब्रह्म नहीं है। वह असीम है और जो श्रोत्र में आ जाता है वह ससीम होता है; और जो ससीम होता है वह ब्रह्म नहीं है। [७]

यत् प्राणेन न प्राणिति, येन प्राणः प्रणीयते;
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ॥८॥

अनु०—जो प्राण से प्राणवान् नहीं है, जिस से प्राण प्राणवान् है, उसी को तू ब्रह्म जान, न कि जिस की [लोक] उपासना करता है। (८)

व्या०–जिस सत्ता तक प्राणों की क्रिया नहीं पहुँचती, और जो प्राण तक पहुँचता है, और जिस से प्राण क्रिया करता है, उसी को तू ब्रह्म जान। जिस तक प्राण की क्रिया पहुँचती है वह ब्रह्म नहीं है। वह असीम है, जिस तक प्राण की क्रिया पहुँचती है वह ससीम है; और जो ससीम है वह ब्रह्म नहीं है। [८]

॥ इति प्रथमः खण्डः ॥

यदि मन्यसे सुवेदेति, दभ्रमेवापि नूनं त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रूपम्।
यदस्यं त्वं यदस्य च देवेष्वथ नु मीमांस्यमेव ते। मन्ये विदितम् ॥१॥

अनु०—यदि तू मानता है कि अच्छी तरह जानता हूँ, तो तू ब्रह्म के रूप को निश्चय ही थोड़ा ही जानता है। इस का जो [रूप] तू है और इस का जो रूप देवताओं में है वह निश्चय ही तेरे जानने योग्य है। मैं जान गया। (१)

व्या–हे शिष्य! यदि तू समझता है कि तेरा गुरु बहुत अच्छी तरह समझ गया है, तो तेरी यह समझ कुछ नहीं है; क्योंकि तूने अपने को, अपने गुरु को, और अपने गुरु

कवि तुञ्चत्तुं एळुत्तच्छन्टें

श्री महाभारतम्

॥ हरिः श्री गणपतये नमः ॥

किळिप्पाट्टु

श्रीमयमाय रूपं तेटुं पॅङ्किळिप्पॅण्णे !
सीमयिल्लात सुखं नल्कणमॅनिक्कु नी । १
श्यामळकोमळनायीटुन्न नारायणन्-
तामरसाक्षन्कथ केळ्प्पानाग्रहिच्चु ञान् २

हिन्दी अनुवाद

कवि तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत श्री महाभारत

॥ हरिः श्री गणपतये नमः ॥

एक पक्षिगीत[1]

हे श्रीयुत्रूपवाली शुककन्ये ! मुझे असीम सुख प्रदान करो । मुझे श्यामल, कोमल और कमलनेत्र भगवान् नारायण की कथा सुनने की बड़ी इच्छा हुई है । उसे मुझे बड़ी भक्ति के साथ ठीक सुनानेवाला

---

१ 'पक्षिगीत' मलयाळम साहित्य का एक विशिष्ट काव्य-प्रकार है । इसमें कथा सुनाने वाली अथवा गानेवाली मादा पक्षी प्रायः एक शुकी (तोती) होती है । इस प्रकार के काव्य का उद्भव कवि एळुत्तच्छन् के महाभारत के पहले ही हुआ होगा । उसके बाद भी अनेक पक्षिगीत (की रचनाएँ) रची गयीं व आज भी रची जा रही हैं । एळुत्तच्छन् ने यह कल्पना की है कि जब नैमिषारण्य में द्वादशवार्षिक सत्र (द्वादशवर्षीय यज्ञ) हो रहा था और वहाँ सूत जी ने शौनक आदि मुनियों के प्रार्थना करने पर उनको जब महाभारत की कथा सुनाई, तब एक शुकी भी उसे सुन रही थी । कवि ने शुकी से प्रार्थना की कि मुझे भी उस कथा को सुनाओ । उसने जो सुनाया वही प्राकृत ग्रन्थ है । प्रायः भक्तिरस-प्रधान काव्यों में ही शुकी कथा सुनाती है । कवि एळुत्तच्छन् ने अपने महाभारत को भक्ति-रस-प्रधान बनाया है ।

आरुळ्ळतुरुतरभक्तिपूण्डॅन्नोटतु
नेरॉटे चोल्लीट्टुवानॅन्नतोर्त्तिरिक्कुम्पोळ् ३
कारणनाय करुणानिधि नारायणन्-
कारुण्यवशाल् निन्नॅ काणाय् वन्नितुमिप्पोळ् । ४
पैदाहादिकळ् तीर्त्तु वैकातॅ परयेणं
कैतवमूर्त्ति कृष्णनन्तन्नुटॅ कथामृतम् । ५
एतॉरु दिक्किल्निन्नु वन्नुवॅन्नतुं चोल्ली-
टादरवोटुमॅन्नु केट्टु पैङ्किळि चोन्नाळ् । ६
मामुनिश्रेष्ठन्मारां शौनकादिकळ् मेवुं
नैमिशारण्यं तन्निल्निन्नु वन्नितुमिप्पोळ् । ७
धीमानामुग्रश्रवस्साकिय सूतन् चोन्नान्
मामुनिमार्क्कु केळ्प्पान् भारतकथामृतम् । ८
अक्कथयोक्कक्केळ्प्पानित्र पार्त्तितु ञानुं
दुःखङ्ङळतु केट्टाल् पिन्नॅयुण्टाकयिल्ल । ९
सक्तियुं नशिच्चीटुं भक्तियुमुरच्चीटुं
भुक्तियिल् विरक्तियुं मुक्तियुं ताने वरुम् । १०
शक्तियोटनुदिनं युक्तनां शिवन् तन्टॅ
व्यक्तियुं विचारिच्चाल् व्यक्तमाय्क्काणाय् वरुम् । ११

कौन है—मैं ऐसा सोच ही रहा था, तब मूलकारण, करुणानिधि भगवान् नारायण की (दया) से तुम्हारा दर्शन हुआ । १-४ अब भूख और प्यास को शान्त करने वाला कैतवमूर्ति[1] श्रीकृष्ण का कथामृत पिलाओ । यह भी बतलाओ कि अभी कहाँ से आ रही हो । यह सुनकर शुककन्या ने कहा—५-६ मैं अभी नैमिषारण्य से आ रही हूँ, जहाँ शौनक आदि महामुनि रहते हैं । वहाँ बुद्धिमान सूत उग्रश्रवा ने महामुनियों को भारत-कथामृत सुनाया । उसे पूरा सुनने के लिए मैं भी इतनी देर वहाँ रही (कि जिससे पूरी कथा सुन सकी) क्योंकि उसे सुनने के बाद कोई दुःख नहीं पैदा होगा । विषयासक्ति का नाश हो जायगा, भक्ति स्थिर हो जायगी, भुक्ति[2] से विरक्ति[3] और मुक्ति सहज ही उत्पन्न होंगी । जो शिवजी सदा

१ छली दैत्य-राक्षसों को छल से मारने के कारण श्रीकृष्ण जी को कैतवमूर्ति कहा जाता है २ विषयभोग ३ वैराग्य ।

युक्तनायीटुं जीवन् परनोटरिङ्ङालुम्
भक्तवत्सलनाकुं कृष्णन्टॅ कारुण्यत्ताल् । १२
एङ्किलक्कथयॅल्लामेन्नॅ नी केळ्प्पिक्कणम्
सङ्कटमुण्टु पारं संसारं निनच्चु मे । १३
पङ्कजविलोचनन्तङ्कथ चॉल्लामॅङ्किल्
पङ्कङ्ङळकन्नुपों पण्डुपण्टुळ्ळतेल्लाम् । १४
आदरवोटुकूटॅ नैमिशवनत्तिङ्कल्
द्वादशसंवत्सरंकॉण्टॉटुङ्ङीटुन्नोरु । १५
यागवुं तुटङ्ङिनार् शौनकादिकळायो-
रागमज्ञोत्तमन्मारोकिय मुनीन्द्रन्मार् । १६
आगमिच्चितु मुनिमारॅस्सेविप्पानप्पोळ्
वेगमोटुग्रश्रवस्साकिय सूतन्तानुम् । १७
आगतनाय सूतन्तन्नॅ मामुनिजन-
मेकान्ते सल्कारंचॅप्तासनादिकळ् नल्कि । १८
इक्कलिमलमुळ्ळिल् पट्टाय्वान् तक्कतॉरु
सल्कथ चॉल्लणं नीयॅन्नवर् चोन्ननेरम् । १९

अपनी शक्ति के साथ हैं, उनका प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त होगा। यह भी जान लीजिए कि भक्तवत्सल श्रीकृष्ण की दया से जीव परतत्त्व (ब्रह्म) से युक्त हो जायगा। ७-१२ (कवि ने कहा—) अगर ऐसा है तो वह पूरी कथा मुझे सुनाओ, क्योंकि इस संसार पर विचार करते हुए मुझे अपार दुःख होता है। अगर पंकजविलोचन (भगवान्) की कथा सुनाओगी तो मेरे पुराने से पुराने पाप-पंक भी धुल जायँगे। १३-१४ शौनक आदि उत्तम शास्त्र के ज्ञाता मुनीन्द्रों ने नैमिषवन के बीच बारह वर्ष में समाप्त होनेवाला एक याग बड़ी श्रद्धा के साथ प्रारम्भ किया। तब सूत उग्रश्रवा मुनियों की सेवा करने के लिए शीघ्र वहाँ पधारे। महामुनियों ने अभ्यागत सूतजी का एकान्त में सत्कार करके उनको आसनादि प्रदान किया, और कहा एक ऐसी सत्कथा सुनाओ, जिससे इस कलियुग का मल स्पर्श न कर सके, (व दूर हो जाय)। १५-१९ (सूतजी ने उत्तर दिया) अगर ऐसा है तो मैं 'भारत' सुना सकता हूँ, जिसे वैशम्पायन ने जनमेजय को भली प्रकार सुनाया था। 'भारत' सुनानेवालों और भक्ति

एँङ्किल् वैशम्पायनन् जनमेजयनोटुँ
भंगियिलरिुयिच्च भारतं चॉल्लामल्लो । २०
भारतं चोल्लुन्नोक्कुँ भक्तरायँ केळ्क्कुन्नोक्कुँ
पारातँ गतिवरुमॅन्नरुळ्चेय्तु मुनि । २१
पाराशर्याख्यन् कृष्णनॅन्नतुँ सत्यमल्ले ।
पारमार्थिकमाय तत्त्ववुमतिलल्ले । २२
भवणल्गीता श्रीमल्सहस्रनामादिकळ्
भगवान् वेदव्यासन् भारतमितिलाक्कि २३
निगमादिकळ्पोलुमतिनाल् वन्दिवकुन्नु
सकलपुरुषार्थङ्ङळुमुण्टतिल् नूनम् । २४
भोगीशवागीशलोकेशादिजनङ्ङळ्क्कु-
माकवालितिनुटँ महत्त्वं चॉल्लावल्ले । २५
ओर्क्कुम्पोळपौरुषेयत्वमुण्डितिन्नतो
साक्षाल् वेदङ्ङळ्क्कल्लेयॅन्नल्लो चॉल्लीटुन्नु । २६
एङ्किल् पौरुषेयमायार्षमायपौरुषे-
यांगियायँ वरुमेन्ने भारतं वन्नुकूटु । २७

के साथ सुननेवालों की गति शीघ्र ही अच्छी होगी—ऐसा, जो मु
पाराशर्य कृष्ण ने कहा है, वह सत्य है। यह भी सत्य है कि पारमार्थि
तत्त्व उसी में (प्रतिपादित) है। भगवान् वेदव्यासजी ने भगवद्गीत
और श्रीमत्सहस्रनामादि[1] को भारत के अन्तर्गत बनाया है और उसी
द्वारा निगमादि[2] की भी वन्दना करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं
सारे पुरुषार्थ (महाभारत) में हैं। २०-२४ इसी लिए भोगीश[3], वागीश
लोकेश[5] आदि इस (महाभारत) का महत्त्व बतला सकते हैं। विचा
किया जाय तो यह अपौरिषेय है, माना कि अपौरुषेयत्त्व साक्षात् वेदों
लिए ही कहा गया है। इस स्थिति में भारत पौरुषेय, आर्ष[6] औ
अपौरुषेयांगी[7] ही हो सकता है। इसको द्वैपायन (महर्षि व्यास) के ओ
से प्रकट हुआ कहा गया है, यह नहीं कि द्वैपायन का रचा हुआ। वेद त
चतुरानन (ब्रह्मा) के मुख से उत्पन्न हैं और यह तो वसुधात्मज (वेदव्यास

१ विष्णु-सहस्रनाम स्तोत्र २ वेद आदि ३ शेषनाग ४ वृहस्पति ५ इ
आदि लोकपाल ६ ऋषिरचित ७ किसी पुरुष के न बनाए हुए के समान।

द्वैपायनोष्ठस्फुटनिस्सृतमॅन्नाकुन्नु
द्वैपायनेन कृतमॅन्नतो चॉल्लीलल्लो । २८
चतुराननमुखसंभवं वेदमितु
वसुधात्मजमुखसंभवमेन्नेयुळ्ळु । २९
ब्रह्मजं वेदमितु विष्णुजमॅन्नाकयाल्
ब्रह्मत्तॅ प्रतिपादिच्चीटुन्नतितिलल्लो । ३०
संगमट्टुळ्ळ विषयङ्ङळिल् निवृत्तमायॅ
मंगलं वरुत्तुन्न भगवत्संगिसंगं ३१
कैवन्नुकूट्टुमितु केळ्क्किलॅन्नुरचेय्तु
कैवणङ्ङिनान् भूदेवतङ्ङळॅ सूतन् । ३२
दैवभक्तन्माराय शौनकादिकळप्पोळ्
पावनमाय सूतभाषितं केट्टु चॉन्नार् । ३३
वैशम्पायनन् चॉन्न भारतंतन्नॅ चॉल नी
संशयं तीरुमतिलिल्लातॅ मट्टॉन्निल्ल । ३४
पाशङ्ङळ् नशिच्चुं तन्नाशयं तॅळियिक्कुम्
केशवचरितवुमित्र मट्टॉन्निलिल्ल । ३५
कर्मकौशलङ्ङळुं सांख्ययोगादिकळुं
धर्मार्थिकाममोक्षं सधिप्पानुपायवुं ३६

के मुखसे, इतना ही भेद है। वेद ब्रह्मज[1] है और यह विष्णुज[2] और इसी में तो ब्रह्म का प्रतिपादन भी हुआ है। इसको सुनने से (संसार की ओर) आकर्षण पैदा करने वाले विषयों से निवृत्ति और भगवत्संगियों से मंगल पैदा करने वाला संग प्राप्त हो जाता है। इतना कहकर सूतजी ने ब्राह्मणों को हाथ जोड़े। २५-३२ देवभक्त शौनकादि मुनियों ने सूत जी के पावन कथन को सुनकर कहा—वैशम्पायन जी का कहा भारत ही सुनाओ। संदेह सब दूर हो जायँगे, क्योंकि ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो उसमें न हो। वह (काम, क्रोध आदि) पाशों को नष्ट करके मन को शान्त करेगा। केशवचरित का ऐसा वर्णन और कहीं नहीं है। सारे कर्म-कौशल, सांख्य, योग आदि दर्शन और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करने के उपाय निर्मल वेदव्यास जी ने इसमें बतलाये हैं। सुख की

---

१ ब्रह्मा जी से उत्पन्न २ विष्णु के अवतार वेदव्यास से उत्पन्न।

निर्मलन् वेदव्यासनितिङ्कल् प्रयोगिच्चु
शर्मसाधनमितिन्मीतॆ मट्रॊन्निल्लल्लो । ३७
अक्कथयॊक्कॆक्केळ्क्कानुण्टवसरमिप्पोळ्
सल्गुणनिधे सूत ! चॊल्लु नी मटियातॆ । ३८
तत्त्वज्ञनाय सूतन् विप्रमामुनिकळॆ-
ञ्चित्तत्तिलुरप्पिच्चु वन्दिच्चु भक्तियोटे । ३९
सत्यज्ञानानन्दानन्ताद्वयामृतनाकु-
मुत्तमोत्तमन् कृष्णनुतन्नॆयुं ध्यानंचॆय्तान् । ४०
पाराशर्याख्यन् परमाचार्यन् वेदव्यासन्
कारुण्यमूर्त्ति कृष्णनाकिय गुरुविनॆ ४१
पारातॆ वणङ्ङिङ्ङनान् भारतीदेवियेयुं
वारणाननाय विघ्नेशन् पादङ्ङ्ङळुम् ४२
वारिजोद्भवनादियाय देवन्मारेयुं
श्रीशुकसमनाय वैशम्पायननॆयुं
आशयं तन्निल् चेर्त्तु परञ्ञुतुटङ्ङिङ्ङनान् । ४३

सिद्धि के लिए इससे बढ़कर कोई साधन नहीं है। उन सब कथाओं को सुनने के लिए हमको बड़ी उत्सुकता है। हे सद्गुणनिधि सूत जी ! अविलम्ब सुनाओ। ३३-३८ तत्त्वज्ञ सूतजी ने विप्रों और महामुनियों का ध्यान किया और भक्ति के साथ वन्दन किया। और सत्यज्ञानानन्दात्मक, अद्वय, अमृत, उत्तमोत्तम श्रीकृष्ण जी का भी ध्यान किया; और परमाचार्य, गुरु, कारुण्यमूर्त्ति, पाराशर्य, वेदव्यास कृष्ण को, भारती देवी को और गजानन विघ्नेश जी (श्री गणेश) के चरणों को प्रणाम किया। और कमल से उत्पन्न ब्रह्मा आदि देवों को और श्रीशुक जी के समान वैशम्पायन को अपने मन में रखकर कहना प्रारम्भ किया। ३९-४३

संग्रहबिवरणम् ।

नालायि वेदङ्ङळॆप्पकुत्त वेदव्यासन्
पौलोमं तन्निल् चॊन्नान् भारतसंक्षेपवुम् । १
चित्रमामुदंकोपाख्यानवुं भृगुकुल-
विस्तारङ्ङळुं वह्नितन्नुटॆ शापदियुं- २
आस्तीकंतन्निल् नागगरुडारुणोत्पत्ति
दुग्धाब्धिमथनमुच्चैःश्रवस्सुण्टायतुं ३
अस्तिकन् सर्वसत्रमॊळिच्चप्रकारवुं
अस्तिकन्ननुग्रहं सर्वङ्ङळ् काॅटुत्ततुं ४
परिभाषारूपङ्ङळ् पौलोमास्तिकङ्ङळॆ-
न्नरुळिच्चॆय्तु वेदव्यासनां मुनिवरन् । ५
संभवपर्वं तन्निल् मुन्निले सोमान्वय-
संभवं नृपेन्द्रपारम्पर्यं देवासुर- ६
संभवं भुवि तेषामंशावतरणवुं ।
अम्भोजरिपुकुलसन्तति सन्धिप्पिप्पा- ७

विषयानुक्रमणिका

जिन वेदव्यास जी ने वेद को चार भागों में विभक्त किया, उन्होंने पौलोमपर्व में भारत का संक्षेप बतलाया है । और विचित्र उदंकोपाख्यान, भृगुकुल का विस्तार, अग्नि-शाप आदि की कथाएँ भी हैं। आस्तीक पर्व में नागों, गरुड और अरुण की उत्पत्ति, क्षीरसागर का मंथन, उच्चैःश्रवा का प्रादुर्भाव, अस्तीक का सर्पसत्र[1] को समाप्त कराना, सर्पों का अस्तीक पर अनुग्रह करना,—यह सब वर्णित है । मुनिवर वेदव्यास जी ने कहा है कि पौलोम और आस्तीक पर्व परिभाषा के रूप में हैं । १-५ और संभवपर्व में पहले सोमवंश की उत्पत्ति, राजाओं की परम्परा, देवों और असुरों का जन्म और पृथ्वी पर उनका[2] अंशावतार वर्णित है । चन्द्रवंश की सन्तति को जारी रखने के लिये कृष्णद्वैपायन ने आदर के साथ विचित्रवीर्य के क्षेत्रों (पत्नियों) में धृतराष्ट्र आदि तीन पुत्रों को उत्पन्न किया । ६-८ वेदव्यास जी ने सुन्दर ढंग से निम्नलिखित बातें

१ नागयज्ञ २ देव और दानव दोनों का अंशावतार ।

नम्पोटु विचित्रवीर्यक्षेत्रङ्ङळिल् कृष्णन्
संभविप्पिच्चु धृतराष्ट्रादि पुत्रत्रयम् । ८
मार्त्तण्डसुतन्नु माण्डव्यशापोत्पत्तियुं
शूद्रयोनियिलवन् विदुरनायवारुं ९
धार्तराष्ट्रोत्पत्तियुं पाण्डुपुत्रोत्पत्तियुं
पार्थिवनाय पाण्डु तापसशापवशाल् १०
माद्रीसंगमं कॉण्टु मरणं प्रापिच्चतु-
मास्थया शेषक्रिया पुत्रन्मार् चॅय्तवारुम् । ११
पाण्डवरुटॅ नगरप्रवेशनादियु
पाण्डुपूर्वजनवरोटु वर्त्तिच्चवारुम् १२
शारद्वतोत्पत्तियुं भरद्वाजोत्पत्तियुम्
भरद्वाजात्मजनामश्वत्थामोत्पत्तियुम् १३
विद्यभ्यासवुं गुरुदक्षिणादियुं तम्मिल्
विद्वेषं मुळुत्ततुं धृष्टद्युम्नोत्पत्तियुं १४
जातुषगृहदाहं काननप्रवेशवुम्
मातुराधिकळ् कण्टु वातनन्दनतापं १५
हिडुम्बवधं भीमहिडुम्बीसमागमं
हिडुम्बितन्निल् भीमतनयनुण्टायतुम् १६

संभवपर्व में लिखी हैं—माण्डव्य द्वारा मार्त्तण्डपुत्र का शाप और उसका शूद्रयोनि में विदुर के रूप में जन्म, धृतराष्ट्र और पाण्डु के पुत्रों की उत्पत्ति, राजा पाण्डु का तपस्वी के शाप के अनुसार माद्री के साथ संगम होने पर प्राप्त मृत्यु और उनके पुत्रों के द्वारा उनकी अन्त्येष्टि का अनुष्ठान, ९-११ पाण्डवों का नगर-प्रवेश आदि, उनके साथ पाण्डु के अग्रज (धृतराष्ट्र) का बर्ताव, शारद्वत की उत्पत्ति, भरद्वाज की उत्पत्ति, भरद्वाज के पुत्र अश्वत्थामा की उत्पत्ति, विद्याभ्यास, गुरुदक्षिणा आदि, परस्पर द्वेष का बढ़ना, धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति, लाक्षागृह का दाह, काननप्रवेश, माता के दुःखों को देखकर वात-नन्दन (भीमसेन) का अन्तस्ताप, हिडिम्ब का वध, भीम और हिडिम्बी का समागम, हिडिम्बी से भीमपुत्र (घटोत्कच) का जन्म, १२-१६ एकचक्र में निवास, बकासुर का निग्रह आदि, एकान्त में वेदव्यास जी का आगमन और उनके साथ संवाद

एकचक्रावासवुं बकनिग्रहादियुम्
एकान्ते वेदव्यासप्राप्तिसंवादादियुम् १७
द्वौपदीस्वयंवराकर्णनयात्रादियुम्
तापसद्विजसमागमसल्लापादियुम् १८
अंगारवर्णोपाख्यानत्तिल् वासिष्ठादिवुम्
श्रृंगाररसपूर्णसंवरणोदन्तवुम् १९
धौम्यतापसवरोपाध्यायोपलब्धियुम्
ब्राह्मणरायिप्पाञ्चालालयं पुक्कवारुम् २०
धार्मिकन् धृष्टद्युम्ननुत्सवं घोषिच्चतुम्
काम्यांगि पाञ्चालिक्कु भूपतिप्रबोधनम् २१
यन्त्रच्छेदवुं पंचेन्द्रोपाख्यानवुं पिन्नें-
क्कुन्तीनन्दनन् राजसञ्चयं जयिच्चतुम् २२
द्रौपदीस्वयंवरं विदुरागमनवुम्
भूपतिनियोगत्ताल् धर्मजाभिषेकवुम् २३
अर्धराज्यवुमिन्द्रप्रस्थलब्धियुं तत्र
सत्वरं श्रीनारदनॅळुन्नळ्ळियवारुम् २४
सुन्दोपसुन्दोपाख्यानादियुं पाञ्चालियां
सुन्दरितन्नॅप्पर्यायत्तोटॅ वहिच्चतुम् २५

आदि, द्रौपदी-स्वयंवर के समाचार का श्रवण और वहाँ की यात्रा आदि, तापसों और द्विजों के साथ मेल-मिलाप और बातचीत आदि, अंगारवर्णोपाख्यान के अन्तर्गत वासिष्ठोपाख्यान, श्रृंगाररस-पूर्ण संवरण का वृत्तान्त, तापसवर धौम्य की उपाध्याय के रूप में उपलब्धि, ब्राह्मण बनकर पाञ्चालदेश में प्रवेश, धार्मिक धृष्टद्युम्न की स्वयंवरोत्सव की घोषणा, काम्यांगी[1] पाञ्चाली को आये हुए भूपतियों का नामनिर्देश, यन्त्रच्छेद[2], पञ्चेन्द्रोपाख्यान, अर्जुन का राजाओं के समूह को जीतना, द्रौपदी का स्वयंवर, विदुर जी का आगमन, भूपति की आज्ञा से युधिष्ठिर का अभिषेक, अर्धराज्य और इन्द्रप्रस्थ की प्राप्ति, वहां नारद जी का पधारना, सुन्दोप-सुन्दोपाख्यान, सुन्दरी पाञ्चाली का पर्याय(बारी-बारी) से विवाह, १७-२५

१ कामनावाली २ मछली-भेदन ।

अर्जुनतीर्थयात्रा सुभद्राहरणवु-
मर्जुनसुतनभिमन्युवुण्टायतुम् २६
पञ्च द्रौपदेयन्मारुण्टाय प्रकारवुम्,
सञ्चितं द्रव्यं दानं चॅय्ततुं धर्मात्मजन् २७
खाण्डवदाहादियुं गाण्डीवलाभादियुम्
पाण्डवशौर्यवुमाखण्डलविजयवुम् २८
तक्षकसुतराय पक्षिकळ् नालुमाशु-
शुक्षणि दहियातॅ काननं दहिच्चतुम् २९
नन्दपालोपाख्यानमॅन्निव देदव्यासन्
सुन्दरमायि चॉन्नान् संभवपर्वं तन्निल् । ३०
इरुनूट्टिरुपत्तॅट्टध्यामुण्डु चोल्किल्
सरसमॅण्णायिरत्तिलूपुरं ताॅळ्ळायिर- ३१
त्तॅणपत्तिनालु पद्यमुम्पर्कु मनोहरम्
मुन्पिले पर्वमतु संभवमतु नामम् ३२
रण्टामतल्लो सभापर्वमॅन्नग्रियेण-
मुण्टतिल् कथ पलताॅट्टतुं संक्षेपिक्काम् । ३३
खाण्डवप्रस्थत्तिङ्कल् मयनां शिल्पिश्रेष्ठन्
पाण्डवन्तनिक्काॅरु सभयॅ निर्मिच्चतुम् ३४

अर्जुन की तीर्थयात्रा, सुभद्राहरण, अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का जन्म, द्रौपदी के पाँचों पुत्रों का जन्मक्रम, धर्मराज युधिष्ठिर को अपने संचित द्रव्य का दान करना, खाण्डवदाह और गाण्डीव का लाभ, पाण्डवशौर्य, आखण्डल (इन्द्र) की विजय, अग्नि का तक्षकपुत्र चार पक्षियों को बचाकर कानन को जलाना, और मन्दपालोपाख्यान—इस प्रकार (भगवान्) वेदव्यास ने संभव पर्व में सुन्दर वर्णन किया । २६-३० उसमें दो सौ अठाईस अध्याय हैं और आठ हज़ार नौ सौ चौरासी सरस एवम् मनोहर श्लोक हैं तथा पहले पर्व का नाम है, संभवपर्व । ३१-३२ (आप यह भी) जान लीजिये कि दूसरे पर्व का नाम है सभापर्व । उसमें अनेक कथाएँ हैं । उसका भी संक्षेप (वर्णन) करूँगा । खाण्डवप्रस्थ में शिल्पिश्रेष्ठ मय[1] का पाण्डव के लिए एक

[1] मयासुर नाम के एक शिल्पकला के विद्वान, ये दैत्यों के शिल्पी थे ।

पाण्डित्यमेऱ्युळ्ळ नारदनॅळुन्नळ्ळि
पाण्डुनन्दननोटु चोदिच्चप्रकारवुम् ३५
माधवन् मागधनॆ मारुतितन्नॆक्कॊण्टु
बाध भूपर्क्कु तीर्प्पिन् कॊल्लिच्चप्रकारवुम् ३६
मारुतिप्रमुखन्मार् दिक्कुकळ् जयिच्चतु-
मोरोरो राजाक्कन्मार् करङ्ङळ् कॊटुत्ततुम् ३७
धर्मजन् राजसूयं चॆय्ततुं भगवानाल्
दुर्मति शिशुपालन् मुक्तियॆ लभिच्चतुम् ३८
पार्थिवेन्द्रावभृतस्नानघोषादिकळुम्
धार्तराष्ट्रौघश्रेष्ठन् काट्टिय गोष्टिकळुन् ३९
स्थलतामतिकॊण्टु जळतकलन्र्ततुम्
बलवान् वृकोदरनुच्चत्तिल् चिरिच्चतुम् ४०
सत्रपं सुयोधनन् हस्तिनं पुक्कवारुम्
निस्त्रपं शकुनितान् चूतिनु कोप्पिट्टतुम् ४१
चूतिङ्कल् चतिचॆय्तु नाटॊक्कॆप्परिच्चतुम्
माधवन् पाञ्चालियॆप्पालिच्च प्रकारवुम् ४२

सभा का निर्माण, बड़ा पाण्डित्य रखनेवाले नारद जी का पधारना और पाण्डुनन्दन से प्रश्न पूछना, भूपतियों की पीड़ा समाप्त करने के लिए माधव (कृष्ण) का मारुति (भीमसेन) द्वारा मागध (जरासन्ध) का वध कराना। भीमसेन आदि का दिग्विजय करना, विभिन्न राजाओं द्वारा कर देना, युधिष्ठिर का राजसूयानुष्ठान, भगवान् के द्वारा दुर्मति शिशुपाल का मुक्ति प्राप्त करना, पार्थिवेन्द्र (युधिष्ठिर) के अवभृतस्थान[1] की घोषणा, धार्तराष्ट्रसंघ के श्रेष्ठ (दुर्योधन) की चेष्टाएँ, जल का स्थल समझने से (दुर्योधन का) अतिशय जड़-ज्ञान, बलवान् वृकोदर का उच्चस्वर से हँसना, लज्जा के साथ सुयोधन का हस्तिनापुर को लौटना, लज्जा के विना शकुनि की जुआ खेलने की तैयारियाँ, जुए में कूट[2] प्रयोग करके (पाण्डवों से) सारे देश को छीन लेना, माधव द्वारा पाञ्चाली[3] की रक्षा, ३३-४२ गान्धार (शकुनी) का दुबारा जुआ (खेलने) के लिए बुलाना, कुन्तीनन्दन (युधिष्ठिर) का हार जाना और वन चले जाना, तथा दुःखों का अनुभव करना—इस प्रकार

१ यज्ञ के उपरान्त स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं २ छल-कौशल ३ द्रौपदी।

गान्धारन् रण्टामतु चूतिनु तुनिञ्ञातुम्
कौन्तेयन् तोट्टु वनं पुक्कतुं दुःखङ्ङ्ळुम् ४३
इङ्ङनॆ पुनर्द्यूतपर्यन्तमायिच्चोन्नान्
मंगलं सभापर्वं कृष्णनां वेदव्यासन् ४४
अध्यायमेळुपत्तिरण्टुण्टॅन्नरिञ्ञालुम्
पद्यङ्ङ्ळ् नालायिरत्तञ्ञूरुं पतिनॊन्नुम् । ४५
धार्मिकन् धर्मात्मजन् काननं पुक्कशेषं
धौम्योपदेशाल् सूर्यन्तन्नॆ सेविच्चवारुम् ४६
सौदनमाय पात्रं सूर्यन् नल्कियवारुम्
भूदेवयतिजनभोजनमुट्टात्ततुम् ४७
कृम्मीरासुरन्तन्नॆ मारुति कॊन्नवारुम्
धर्मजादिकळ्तम्मॆक्काणमानायविटॅय्क्कु ४८
धर्मराजाङ्गभूतन् विदुरर् वन्नवारुम्
धर्मस्थापनकरन् गोविन्दन् नारायणन् ४९
निर्मलन् जगन्मयन् चिन्मयन् मायामयन्
सन्मयन् कर्मसाक्षि निर्मर्यादिकळ्क्कॊरु ५०
धर्मनायकन् परब्रह्मनां विष्णुमूर्त्ति
जन्मनाशादिहीनन् कल्मषविनाशनन् ५१
निर्ममन् निरुपमन् कृष्णनङ्ङॆळुन्नळ्ळि
सम्मोदं धर्मात्मजन्माविन्नु वळर्त्ततुम् ५२

कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी ने दुबारा जुआ खेलने (की कथा) तक मंगलमय सभापर्व सुनाया। जान लीजिये कि उसमें बहत्तर अध्याय और चार हजार पाँच सौ ग्यारह श्लोक हैं। ४३-४५ धार्मिक, धर्मराजपुत्र युधिष्ठिर के वन-प्रवेश के उपरान्त उनका धौम्य के उपदेशानुसार सूर्य की सेवा करना, और सूर्य का एक भात से भरे पात्र का दान करना और ब्राह्मणों तथा संन्यासियों आदि के भोजन का कष्ट न होना, मारुति (भीम) द्वारा कृम्मीरासुर का वध, धर्मज (युधिष्ठिर) आदि के दर्शन के लिए धर्मराज के सदृश धर्मात्मा विदुर जी का पधारना, धर्मसंस्थापक, गोविन्द, नारायण, निर्मल जगन्मय, चिन्मय, मायामय, सन्मय, कर्मसाक्षि, मर्यादारहितों के नाशकर्त्ता, परब्रह्म, विष्णुमूर्ति जन्मनाशादिहीन, पापहारी, निर्मम, निरुपम,

पाञ्चालादिकळाय संबन्धिसमागमं
पाञ्चालीशोकादियुं वेदव्यासागमनं ५३
फल्गुनन् तपस्सिन्नाय निर्गमिच्चतुंपिन्नॅ
भर्गनां भगवानुं पार्वतीदेवितानुं ५४
काट्टाळवेषत्तोटु प्रत्यक्षमायवारुम्
वाट्टमॅन्निये तम्मिल् कलहमुण्टायतु- ५५
मीशनाल् पाशुपतमवनु कॉटुत्ततु-
माशु दिक्पालादिकळविटॅ वन्नवारुम् ५६
अर्जुनन् वासवनॅक्कण्टवन् नियोगत्ताल्
निर्जरारिकळ्तम्मॅ वधिच्चप्रकारवुम् ५७
पार्थनुर्वशियुटॅ शापमुण्टायवारुम्
गोत्रारि तेळिञ्ञनुग्रहिच्चप्रकारवुम् ५८
पार्थनिङ्ङनॅ सुरलोकं वाळुन्नकालं
पार्थिवन्तन्नॅक्काण्मान् बृहदश्वागमनं ५९
धर्मजदुःखं तीर्प्पान् तापसनरुळ्चेय्तु
निर्मलनळोपाख्यानादियुमगस्त्यन्टॅ ६०
पवित्रचरित्रमां विचित्रकथादियुं
कलत्रप्राप्तिमुखवातापिदहनवुं ६१

श्रीकृष्णजी का पधारना और धर्मराज का सम्मोद बढ़ाना, पाञ्चाल आदि संबन्धियों का आगमन, पाञ्चालीका शोक, वेदव्यास जी का आगमन,४६-५३ अर्जुन का तप करने के लिए चले जाना और शिव जी और पार्वती जी का किरात[1] के रूप में प्रत्यक्ष हो जाना तथा शिव जी और अर्जुन का परस्पर युद्ध, शिव जी का अर्जुन को पाशुपतास्त्र का दान, तत्क्षण ही दिक्पालों का वहाँ पधारना, अर्जुन को इन्द्र का दर्शन और उनकी आज्ञा से देवताओं के शत्रुओं का संहार, उर्वशी द्वारा पार्थ (अर्जुन) को शाप, और इन्द्र का प्रसन्न होकर पार्थ पर अनुग्रह करना, पार्थ[2] (अर्जुन) का इस प्रकार सुरलोक में निवास करते समय, (युधिष्ठिर) को देखने के लिए बृहदश्व का आगमन, और उनके दुःखों को दूर करने के लिए नलोपाख्यान सुनाना,

१ भील २ पार्थ शब्द बहुधा कुन्ती के तीन पुत्रों के लिए ही प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं नकुल, सहदेव, कर्ण के लिए भी इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

शक्रनुमग्नियुमाय् शिबितन् धर्मस्थिति
पक्षिवेषत्ताल् परीक्षिच्चुकोण्टरिञ्ञतुं ६२
पण्डितश्रेष्ठनृष्यशृङ्गनायीट्टुन्न वै-
भण्डकनुटॆ तपोबलतुं माहात्म्यवुं ६३
जामदग्न्यनाल् बहुहेहयवधादियुं
कोमळमाय सुकन्योपाख्यानवुं पिन्नॆ ६४
च्यवनोपाख्यानवुमवनु नासत्यन्मार्
नवकोमलरूपं नल्कियप्रकारवुं ६५
तातनॆयष्टावक्रन् सोमकसुतेष्टिवि-
वादे वीण्टतुं सव्यसाचिवृत्तान्तङ्ङळुम् ६६
अमरेन्द्रानुज्ञया समरे शक्रात्मज-
नमरारातिकळॆयरुतिप्पॆट्टुत्ततुम् ६७
अर्जुनन्तन्नॆक्कण्टु मट्टुळ्ळोर् सुखिच्चतु-
मर्जुनाग्रजन् जटासुरनॆ वधिच्चतुम् ६८
मारुति सौगन्धिकं पुष्पत्तॆ हरिच्चतुम्
मारुतीरूपं कण्टु मारुति पेटिच्चतुम् ६९

फिर अगस्त्य मुनि के पवित्र चरित्र का विचित्र वर्णन, वातापि का भस्म होना, इन्द्र और अग्नि का राजा शिबि की धर्म-स्थिति की, पक्षिवेष[1] रूप धारण करके परीक्षा करना, विभाण्डकपुत्र, पण्डितश्रेष्ठ, ऋष्यशृंग का तपोबल और माहात्म्य ५४-६३ जामदग्न्य परशुराम द्वारा हैहयों[2] का वध, कोमल सुकन्या का उपाख्यान, च्यवनोपाख्यान और च्यवन को अश्विनी-कुमारों के द्वारा एक नया, कोमल रूप प्रदान करना, सोमक के पुत्र द्वारा इष्टियज्ञ के विवाद के अवसर पर अष्टावक्र का पिता जी की रक्षा करना, सव्यसाचि (अर्जुन) के वृत्तान्त, अमरेन्द्र की अनुज्ञा से शक्रात्मज (अर्जुन) का युद्ध में देवताओं के शत्रुओं का नाश करना, अर्जुन को देखकर औरों का सुखानुभव करना, अर्जुनाग्रज (भीम) द्वारा जटासुर का बध, मारुति का सौगन्धिक[3] पुष्प को ले आना, मारुति (हनुमान) का रूप देखकर मारुति

१ बाजपक्षी २ हैहयराज कार्त्तवीर्यार्जुन के पुत्र-पौत्रों का ३ सौगन्धिक तथा कल्हार ये दोनों शब्द सायंकाल में खिलने वाले श्वेतकमल को कहते हैं (अमर० वारिवर्ग ३६)।

अन्धनामन्धात्मजन्तन्नुटँ घोषयात्र
गन्धर्वाधिपकृतबन्धनमवर्कळॆ ७०
कुन्तीनन्दनन् तन्नॆ वीण्टुकॉण्टतु पिन्नॆ-
स्सिन्धुरगमनयां पाञ्चालीहरणार्थं ७१
सिन्धुराजागमनं गन्धवाहजकृत-
बन्धनं कुन्तीसुतबन्धुबन्धनहरं ७२
दण्डिपुत्रनॆक्काण्मान् मार्कण्डेयागमनं
पण्डितन् मार्कण्डेयन् मार्ताण्डान्वयत्तिङ्कल् ७३
कुण्डलीश्वरशायि रामनाय पिऱन्नतुम्
पुण्यकळाय नानाकथकळ् मट्टुळ्ळतुम् ७४
पाण्डवशोकं तीर्प्पान् अरुळ्चॅय्ततु पिन्नॆ
गाण्डीवधरप्रियन् माधवन् जगन्नाथन् ७५
पाण्डवन्मारॆक्काण्मानॆळुन्नळ्ळियवारुम्
द्रौपदीसत्यसंवादङ्ङळुम् भीष्मद्रोण- ७६
पावनकथकळुमिन्द्रद्युम्नन्टॆ कथ
एन्निव केट्टु तॆळिञ्ञिरुन्नीटिनकालं ७७
कर्णकुण्डलकवचादिकळमरेन्द्रन्
विप्रनाय् प्रतिग्रहिच्चीटिनप्रकारवुम् ७८

(भीम) का डर जाना, अन्धे अन्धपुत्र (दुर्योधन) की घोषयात्रा[1], गन्धर्वाधिप (चित्ररथ) द्वारा कौरवों का बन्धन और कुन्तीनन्दन का उनको छुड़वाना, गजगामिनी पाञ्चाली के हरण करने के लिए सिन्धुराज जयद्रथ का आगमन और भीमसेन द्वारा उसका बन्धन और युधिष्ठिर के कथन से उसका मोक्ष, ६४-७२ दण्डिपुत्र (युधिष्ठिर) के दर्शन के लिए मार्कण्डेय का आगमन, पाण्डवों का शोक दूर करने के लिए विद्वान मार्कण्डेय का शेषनाग पर शयन करने वाले भगवान् विष्णु द्वारा सूर्यवंश में श्रीराम का रूप धारण करने की तथा अन्य कथाएँ सुनाना, उसके बाद गाण्डीवधारी अर्जुन के प्रिय बांधव जगन्नाथ (श्रीकृष्ण) का पाण्डवों के दर्शन के लिए आना, द्रौपदी-सत्यसंवाद, भीष्म और द्रोण की पावन कथाएँ, इन्द्रद्युम्न की कथा—ये सब सुनकर जब प्रसन्न थे तब इन्द्र का एक विप्र का रूप धारण

१ घोसियों के ग्राम में जाना।

तल्प्रसादार्थमॉरु शक्ति नल्कियवारुम्
हरिणरूपनेकनरणियॅटुत्तुको- ७९
ण्टरण्यं पुक्कानन्नॉराररणन् दुःखं तीर्प्पान्
अटवितन्निल् तेटिनटन्ना पाण्डवन्मा- ८०
र्क्किटरायतुं दाहं मुळुत्तिट्टतुनेरं
तण्णीरन्वेषिप्पानाय् पोयनुजन्मारेल्लां ८१
तण्णीरुं कुटिच्चॉक्कं मरिच्चप्रकारवुम्
धर्मजन् तानुं चेन्नुं तण्णीर् कोरियशेषं ८२
धर्मराजेन कृत धर्मप्रश्नङ्ङ ळॅळ्ळां
धर्मजन् परिग्रहिच्चुत्तरं परञ्ञातुम् ८३
धर्मराजानुज्ञया जीविच्चॉरनुजन्मार्
धर्मराजात्मजनोटॉन्निच्चु वसिच्चतुम् ८४
मून्नामताय पर्वमरण्यंतन्निल् चोन्नान्
आम्नायव्यासन् कृष्णन् तापसन् द्वैपायनन् । ८५
अध्यायमतिलिरिनूऱ्ऱुपत्तॉम्पतिल्
पद्यङ्ङळुण्टु पतिनायिरत्तरुनूटि- ८६
नुत्तरमरुपत्तुनालुमॅन्नरियेणम् ।
उत्तमं पवित्रमितॅत्रयुं पार्त्तुकण्टाल् । ८७
पाराशर्याख्यन् मुनि नालां पर्वत्तिल् चोन्नान्
वैराटराज्यं तन्निल् धर्मजादिकळॆल्लां- ८८

कर कर्ण के कुण्डल और कवच का दान लेना ७३-७८ और उनकी प्रसन्नता के लिए एक शक्ति प्रदान करना, किसी का हिरन बनकर एक ब्राह्मण की अरणि चुराकर वन में घुस जाना, ब्राह्मण का दुःख दूर करने के लिए पाण्डवों का सारे वन में अरणि ढूँढना, थक जाना, प्यास के मारे पानी ढूँढने के लिए सहदेव आदि चार भाइयों को क्रमशः भेजना, उनका पानी पाकर व उसे पीकर मर जाना, फिर युधिष्ठिर का स्वयं पानी पीने जाना, वहाँ धर्मराज के धर्म-प्रश्नों का उत्तर देना और अन्त में धर्मराज का चारों भाइयों को जीवित करना, और फिर उनका धर्मराज के पुत्र के साथ सुख से रहना, ७९-८४ ये सब कथाएँ वेदव्यास, तापस, कृष्णद्वैपायन ने तीसरे अरण्य नामक पर्व में कही हैं, उनमें दो सौ उनहत्तर अध्याय हैं जिनमें कुल दस हजार छः सौ चौसठ श्लोक

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

लंका काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्द्दूलचर्म्माम्बरं-
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं-
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ॥ १ ॥

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमतिदुर्ल्लभम् ।
खलानां दण्डकृद् योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे ॥ २ ॥

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं-
योगीन्द्रध्यानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्व्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं-
वन्दे मन्दावघातं सरसिजनयनं देवमुर्व्वीशरूपम् ॥ ३ ॥

शुक-सारणेर गुप्तभावे रामसैन्य-परिदर्शन ओ विभीषणादि-कर्त्तृक निग्रह ।

बाँधा गेल सागर कटक हैल पार ❋ दिने दिने रावणेर टूटे अहंकार
फाँफर हइल राजा गनि मने-मने ❋ दुइ चर शुक आर सारणेरे भने

रावण के आदेश से शुक एवं सारण का गुप्तरूप से राम-सेना का निरीक्षण और विभीषण आदि द्वारा उनका निग्रह

सागर बाँधा गया और सारा कटक भी दूसरे तट पर पहुँच गया। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन रावण का अहंकार टूटने लगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़

शुन शुक-सारण, तोमरा बुद्धिमान ❋ चर्च्चे गिया रामेर कटक कि प्रमान
पाथरेते बाँधा गेल सागर गभीर ❋ त्रिभुवने हेन कर्म्म करे कोन वीर
भालमते जान विभीषणेर ये मति ❋ एके एके जान सब योद्धा सेनापति
बल-बुद्धि जान सब रामेर मन्त्रणा ❋ प्रथमे जानिह सब प्रधान ये जना
रामेर सहित थाके कोन महावीर ❋ लंकाय आसिया केवा रणे हवे स्थिर १
राजार आदेश चर बन्दिलेक माथे ❋ राज-प्रदक्षिण करि जाय मनोरथे
कपिरूपे सान्धाइल वानर-भितर ❋ लेखा जोखा नाइ, यत देखिल वानर
कत पार हैल कत हैते आछे पार ❋ लिखिवार शक्ति कार देखिते अपार
कटक चर्चिया भ्रमे चर दुइ जन ❋ दूरे थाकि देखे ताहा मित्र विभीषण
राक्षसेर माया से राक्षस भाल जाने ❋ विभीषण दुइ चरे चिने सेइ क्षणे
घरेर सेवक बलि ना करिल आस्था ❋ वानरेर हाते कैल पंचम अवस्था
आपनार प्रत्ययित्व जानावार तरे ❋ रथ हैते नामिया से दुइचरे धरे २

होकर राजा (दशानन) ने अपने दोनों चर शुक और सारण को बुलवाया। सुनो शुक-सारण ! तुम लोग बुद्धिमान हो, जाकर पता लगाओ कि राम की सेना का परिमाण क्या है। अथाह सागर को जिसने शिलाओं से बाँध दिया, तीनों लोक में ऐसा वीर वह कौन है। अच्छी तरह से विभीषण के चाल-ढाल का पता लगाओ और एक-एक कर उसके सारे योद्धा और सेनापतियों को भी जान लो। राम की मंत्रणा क्या होगी, यह बुद्धि-बल से ज्ञात कर लो। आरम्भ में जान लो कि (उसके दल में) प्रधान कौन-कौन हैं। राम के साथ-साथ कौन सा महावीर रहता है। लंका में आकर कौन युद्ध में स्थिर रहेगा ॥ १ ॥

राजा के आदेश को चरों ने सिर नवा कर ग्रहण किया और राजा की प्रदक्षिणा करके वे चल पड़े। कपि का रूप धारण कर वे वानरों के भीतर समा गये। देखा वानरों की संख्या अनगिनत है। कितनों को वे पार कर गये, फिर भी कितनों को पार करना बाकी है। इनकी संख्या लिखने की शक्ति किसमें है, देखने ही में इस सेना का कोई ओर-छोर नहीं। सेना का निरीक्षण करते हुए दोनों चर घूमते रहे। दूर से मित्र विभीषण ने यह देख लिया। निशाचर की माया निशाचर ही भली प्रकार समझ सकता है। विभीषण ने दोनों चरों को तत्काल पहचान लिया। घर के सेवक थे, यह जानकर भी उनकी आवभगत नहीं की उसने। बन्दरों के हाथ उनकी दुर्गति कर दी। अपनी विश्वस्तता जताने के लिए रथ से उतर कर उसने दोनों चरों को पकड़ लिया ॥ २ ॥

विभीषणे ठेलि चर जाय पलाइया ॐ दूरे थाकि सुग्रीव ता' देखिल चाहिया
शालगाछ उपाड़िया आने आचम्बिते ॐ महाकोपे धाय वीर राक्षसेर भिते
एड़िलेक शालगाछ मेघेरे समान ॐ राक्षसेर वाणे गाछ हैल खान-खान
आर गाछ आने, तार दश क्रोश गोड़ा ॐ गाछेर वाड़ीते रथ करिलेक गुँड़ा
पड़िल सारथि-घोड़ा नाहिक दोसर ॐ गदा हाते दुइजन जुझे घोरतर
गदार वाड़िते सब करे चूरमार ॐ सुग्रीव बलेन, गर्व्व करिस गदार
मार देखि गदा, बुक पेते दिनु तोरे ॐ तारे घा सहिया तोरे दिइ यमघरे
दुइ हात तुलिया पातिया दिनु बुक ॐ मार देखि गदा सबे देखुक कौतुक
पातिया दिलेक वक्षः सुग्रीव भूपति ॐ गदा मारे शुक आर सारण दुर्म्मति
वज्रसम वक्षः तार वज्रेते निर्म्माण ॐ ताहाते लागिया गदा हैल खान-खान
गदा मारि दुइजन हइल फाँफर ॐ दुइचर बाँधि निल रामेर गोचर
बसिया आछेन मध्य राम गुणवान ॐ वामदिके उपविष्ट अनुज लक्ष्मण
दक्षिणेते मंत्रि ताँर शोभे जाम्बवान ॐ जोड़ हाते बसियाछे यत मंत्रिगण ३
हेन काले दुइचर धेये आगुसरे ॐ प्रणाम करिल दोंहे राजव्यवहारे
भयेते छाड़िल तारा जीवनेर आश ॐ कहिते लागिल किछु गदगद भाष

विभीषण को ढकेल कर चर भागने लगे। दूर से सुग्रीव ने यह देख लिया। तुरन्त ही साखू का एक पेड़ उखाड़ कर वह राक्षस की ओर सक्रोध लपका। बादलों जैसे उस साखू के पेड़ से वे कतरा गये, राक्षस के वाण से वह पेड़ खंड-खंड हो गया। दूसरा पेड़ लाया गया जिसकी दस-कोस वाली जड़ थी। उसी पेड़ के प्रहार से रथ को चूर्ण-चूर्ण कर डाला गया। सारथि और घोड़े काम आ गये, अब कोई दूसरा सहाय न रहा। दोनों चर हाथ में गदा लेकर घोरतर युद्ध करने लगे। गदा के प्रहार से वे सब कुछ चूर-चूर करने लग गये। सुग्रीव ने कहा, तू अपनी गदा पर इतराता है? ले, मैं सीना तान देता हूँ, इस पर गदा की चोट तो कर भला। दोनों हाथ उठा कर मैं सीना ताने देता हूँ, चला तो अपनी गदा। तेरा प्रहार सहकर तुझे यमलोक भिजवा देता हूँ, और लोग यह तमाशा देखें। भूपति सुग्रीव ने अपना वक्ष उन्मोचित कर दिया और मतिभ्रष्ट शुक और सारण ने उस पर गदा का प्रहार किया। वज्र के समान कठिन वक्ष से टकराकर गदा चूर-चूर हो गयी। गदा मारने के बाद दोनों भौचक्के रह गये। दोनों चरों को बाँध कर राम के समक्ष लाया गया। गुण के सागर रामचन्द्र बीच में विराजमान हैं, उनके बाएँ लक्ष्मण और दाहिने मंत्री जाम्बवान शोभायमान हैं। सारे सचिवगण हाथ जोड़े बैठे हैं॥ ३॥

कटक चर्च्चिते मोरे पाठाय रावणे ❊ कि जाने एमन दाय घटिबे एखाने
लुकाइया आसिलाम, ह'लाम विदित ❊ बुझिया करह प्रभु जे हय उचित
शुनिया चरेर कथा श्रीरामेर हास ❊ उभयेरे दयामय दिलेन आश्वास
विभीषण धरिलेन काटिवार मने ❊ रावण करेन राम तारे सेइ क्षणे
क्षान्त हओ, चर-हत्या नहे राजधर्म्म ❊ सेवक मारिले सिद्ध हबे कोन कर्म्म
गोपने आइसे चर, भ्रमे सर्व्वस्थाने ❊ दुई चारि कथा एइ बलिह रावणे
शून्यघरे सीता हरि आनिल आमार ❊ भये पलाइया एल सागरेर पार
सेइ त सागर आमि हइलाम पार ❊ जिज्ञास, रावण राजा कि बलिबे आर
हरिया आनिल सीता मम अगोचरे ❊ सेई हेतु सेतुबन्ध हइल सागरे
शुनियाछ खर-दूषणेर ये प्रकार ❊ प्रभाते हइबे सेइ प्रकार तोमार
ये कोन प्रकारे आजि पोहाउक राति ❊ एक जन ना राखिब वंशे दिते वाति
कृत्तिवास कविर कवित्व विचक्षण ❊ लंका-काण्डे गाइलेन गीत रामायण ४

ऐसे ही समय दोनों चरों ने आगे बढ़कर राजकीय सम्मान प्रदर्शित करते हुए राम को प्रणाम किया। भय के मारे दोनों ने प्राणों की आशा छोड़ दी और भयातुर भाषा में गिड़गिड़ाने लगे। रावण ने सेना के निरीक्षण के लिए हमें भेजा है, कौन जानता था कि यहाँ ऐसी विपत्ति आ पड़ेगी। हम छिप कर आए थे लेकिन भेद खुल गया। अब हे प्रभु, जैसा आप उचित समझें करें। चर की बातें सुनकर श्रीराम हँस पड़े और उनको आश्वासन देने लगे। विभीषण ने निश्चय किया था कि इनको काट डाला जाय किन्तु रामचन्द्र ने तत्काल उनको मना किया। रुको, चर की हत्या करना राजधर्म नहीं है, सेवक की हत्या करने से कौन सा काम सफल होगा। चर गुप्तरूप से आता है और सभी जगहों में विचरता है। (हे चर युगल!) रावण से मेरी ये दो-चार बातें बता देना। सूनी कुटिया से मेरी सीता को वह चुरा लाया और डर के मारे सागर लाँघ कर इस ओर आ गया। उस सागर को भी मैं लाँघ आया हूँ। पूछना, अब राजा रावण को क्या कहना है। मेरे अगोचर सीता को वह हर लाया और इसी कारण सागर पर सेतुबन्ध बना। खर-दूषण की दशा के बारे में तो सुना होगा, सबेरे तुम्हारी भी वही दशा हो कर रहेगी। आज किसी प्रकार रात तो बीत जाने दो, फिर मैं उसके वंश में किसी को भी दीया दिखाने के लिए भी जीवित नहीं छोड़ूँगा। कवि कृत्तिवास का यह विचक्षण कवित्व है—लंकाकांड में उन्होंने रामायण का गीत गाया॥ ४॥

शुक-सारण-समीपे श्रीराम-कर्त्तृक रावणेर भर्त्सना

त्रिभुवन से जिनिया, सुन्दरी सब आनिया, नाना अलंकार दिया साजे।
ता' सबार प्राणनाथ, डरे नाहि हाँटे वाट, अनाथा हइया तारा भजे॥
सीतार से शापानले, आमार ए कोपानले, रावणेर नाहिक निस्तार।
विश्वकर्म्मार निर्म्माण, ए कनक लंका खान, पुड़िया हइल छारखार॥
राजा ह'ये चर मारे, अपयश ए संसारे, कह गिया तोरे लंकेश्वर।
देखुक से दशकन्ध, सागरेते सेतुबन्ध, लंकापुरी घेरिल वानरे॥
कपिगण ये प्रचण्ड, मेघकरे खण्ड-खण्ड, मार्त्तण्ड धरिते पारे बले।
सागर ना सहे टान, रणे नाहि परित्राण, हनुमान बधिबे सकले॥
एले सैन्य चर्च्चिवारे, जाबे केन अगोचरे, ब'लो तारे कथा दुइचारि।
काटि तार दशमुण्ड, विभीषण छत्रदण्ड, दिब आर राणी मन्दोदरी॥
बन्दि रामेर चरण, कृत्तिवास विचक्षण, विरचिल सरस्वती वरे।
सर्व्वपाप-विनाशन, सारग्रन्थ रामायण, मुक्तिपाय श्रवण जे करे॥५॥

शुक-सारण के निकट श्रीराम द्वारा रावण की भर्त्सना

तीनों लोक पर विजय प्राप्त कर सारी सुन्दरियों को लाकर उसने आभूषणों से सजाया है। वे नारियाँ अनाथा सी हो कर उसको प्राणनाथ के रूप में सेवा करने को विवश हैं और वह निडर होकर घूमता-फिरता है। सीता के अभिशाप की आग से और मेरे क्रोधानल से रावण का निस्तार नहीं। विश्वकर्मा-निर्मित यह स्वर्ण-लंका जल कर खाक हो गयी (समझो)। राजा होकर जो चर को मारता है उसका अपयश सारे संसार में व्याप्त हो जाता है। जाकर अपने लंकेश्वर से बताना, वह दशस्कन्ध देख ले कि सागर पर सेतुबन्ध रच कर वानरों ने लंकापुरी को घेर लिया है। ये कपि इतने प्रचंड हैं कि मेघ को खंड-खंड कर देते हैं और मार्त्तंड को भी अपनी शक्ति से पकड़ ला सकते हैं; सागर भी इनके बल का सामना नहीं कर सकता और रण में भी किसी को छुटकारा नहीं—हनुमान सभी का वध करेगा। तुम लोग सैन्य का भेद लेने के लिए आए थे, अनजाने ही क्यों चले जाओगे। उसको भी जाकर दो-चार बातें बताना। उसके दस मुंडों को काटकर विभीषण को राजछत्र और राजदंड प्रदान करूँगा—साथ में रानी मन्दोदरी भी। राम के चरणों की वन्दना कर विचक्षण कृत्तिवास ने सरस्वती के वरदान से इस सर्व-पाप-विनाशकारी सारग्रन्थ रामायण की रचना की। जो भी इसे सुनता है, मुक्ति पा जाता है॥ ५॥

रावण-समीपे शुक-सारण-कर्त्तृक श्रीरामेर प्रशंसा ओ सम्वाद-ज्ञापन

दिया राज प्रसाद पाठान राम चर ❋ रावणेरे भेटे गिया लंकार भितर
दाण्डाइते नारे चर, नाहि नाड़े पाश ❋ ऊर्द्ध वमुखे वार्त्ता कहे घने ऊर्द्ध वश्वास
तोमार आज्ञाय गेनु कटक भितरे ❋ यावामात्र विभीषण चिनिल आमारे
विभीषण धरि निल काटिवार मने ❋ प्राणदान करिलेन राम निजगुणे
श्रीराम लक्ष्मण विभीषण कपिराजे ❋ देखिलाम चारिजने आनन्दे विराजे
रामेर येमन धनु, शर तुल्य तारि ❋ आछुक अन्येर काज, एका रामे नारि
भुवन सहाय यदि अष्ट लोकपाल ❋ तबु ना जिनिबे राम विक्रमे विशाल
शतेक योजन सेतु हइल सागरे ❋ बान्धिल योजन शत वृक्ष ओ पाथरे
उत्तर कूलेर सेतु ठेकिल दक्षिणे ❋ पार हैल राम-सैन्य जुझिवार मने
पाले-पाले कपिगण पर्व्वत आकार ❋ देखिया डराय, येन महा अन्धकार
केह वा पिंगलवर्ण केह वा श्यामल ❋ रक्तवर्ण केह, केह वरण उज्ज्वल
उभे परिमाण देखि पर्व्वत प्रमाण ❋ रणे प्रवेशिते चाइ, किन्तु काँपे प्राण

रावण के समक्ष शुक-सारण द्वारा श्रीराम की प्रशंसा और समाचार-निवेदन

राज-प्रसाद प्रदान कर राम ने चरों को विदा किया। चरों ने जा कर लंका में रावण से भेंट की। बेतहाशा भागते हुए जाने के कारण चरों की साँस फूलने लगी। फिर भी सिर उठाकर एक साँस में कहने लग पड़े; (शुक ने कहा)—आपकी आज्ञा से हम राम-सेना के भीतर पहुँच गये। पहुँचते ही विभीषण ने हमको पहचान लिया। विभीषण ने हम लोगों को काट डालने का निश्चय करके पकड़ लिया। राम ने सदय हो कर प्राणदान दिया। श्रीराम, लक्ष्मण, विभीषण और कपिराज (सुग्रीव), इन चारों को आनन्द से विराजमान देखा। जैसा राम का धनुष है उनके वाण भी उसी के योग्य हैं। दूसरों का चाहे जो कुछ कर लो, राम अकेले हों तो भी उनसे निबटा नहीं जा सकता। यदि आठों दिक्‌पाल अथवा जगत् आपका सहायक बन जाय, फिर भी राम से जीत नहीं सकते, वे इतने प्रबल पराक्रमी हैं। सागर पर उन्होंने वृक्ष और पत्थरों से सौ योजन का सेतु बना डाला है। उत्तर तट का सेतु आकर दक्षिण से लगा। युद्ध का निश्चय लेकर राम-सेना इस पार आ गई है। पर्वत के आकार वाले वानरों के कितने ही दल हैं—महान् अन्धकार स्वरूप उनको देखकर डर लगता है। इनमें कोई तो पिंगल वर्ण का है तो कोई श्याम वर्ण का, कोई रक्त वर्ण का है तो कोई गोरे रंग का। ऊँचाई में ये पर्वत के समान हैं। रण में प्रवेश करने

एक चापे कपि सेना जाय पृष्ठे-पृष्ठे ❋ ओर नाहि पाइ, यत चाइ एक दृष्टे
गणिते यद्यपि पारि वरिषार धारा ❋ दृष्टे संख्या करि यदि आकाशेर तारा
यदि ओ निर्णय करि सागरेर पाणि ❋ तथापि वानर सैन्य निश्चय ना जानि
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाञ्चाली ❋ लंकाकाण्ड गाय तार प्रथम शिकलि ६

शुक-सारण-कर्त्तृक रावण के परिचय सह राम-सैन्य-प्रदर्शन

हइल शुकेर वाक्य यदि अवसान ❋ सारण बलिछे दशानन विद्यमान
आमादेर वाक्ये यदि न हय प्रत्यय ❋ प्राचीरे उठिया देख, हय कि ना हय
अति उच्च लंकार प्राचीर स्वर्णमय ❋ चर सह उठिल रावण दुराशय
चतुर्द्दिके जल-स्थल व्यापिल वानर ❋ देखिया रावण राजा सभय अन्तर
सहस्र वत्सर युद्ध करि निरन्तर ❋ तथापि ना फुराइबे कटक विस्तर ७
वानर चिनिते चाहे राजा दशानन ❋ तुलिया दक्षिण हस्त देखाय सारण
वानर सहस्र कोटि याहार संहति ❋ ऐ देख नीलवर्ण नील सेनापति
नील सेनापति से हेलाय यदि नड़े ❋ द्वादश प्रहर पथ सैन्य आड़े जोड़े

की चाह है लेकिन दिल धड़कता है। आगे-पीछे कपि सेना की टुकड़ियाँ चली ही गयी हैं—कितनी ही दृष्टि दौड़ाऊँ उनका ओर-छोर नहीं दिखाई पड़ता। चाहे बरसात में वृष्टि की बूँदों को गिन लूँ, चाहे गगन के तारों को आँखों से देखकर गिन लूँ, समुद्र के जल का परिमाण भी चाहे कूत लूँ, लेकिन फिर भी वानर-सेना की संख्या का अनुमान नहीं लगा सकता। पंडित कृत्तिवास की यह मधुर गीत-गाथा है—लंकाकांड में जिसका प्रथम खंड गाया जा रहा है ॥ ६ ॥

शुक-सारण द्वारा रावण के समक्ष परिचय-सहित राम-सैन्य-प्रदर्शन

शुक का कहना समाप्त हुआ तो सारण ने कहा, हे दशानन! यदि आप को हमारी बातों पर विश्वास न हो तो प्राचीर पर चढ़ कर देखिये, भला हम सही हैं कि नहीं। लंका का स्वर्ण-मय प्राचीर बहुत ऊँचा है। दुष्ट रावण अपने चरों के साथ उस पर चढ़ गया। देखा, चारों ओर जल-थल में वानर व्याप्त हैं। देखकर राजा रावण का अन्तर भय से भर गया। कटक इतना विशाल है कि हजारों वर्ष तक निरन्तर युद्ध करने पर भी उसका अन्त नहीं होगा ॥ ७ ॥

राजा दशानन ने वानरों को पहचानना चाहा। दाहिना हाथ उठाकर सारण उनको दिखाने लगा। वह देखो नीले वर्ण का सेनापति नील है जिसके संग सहस्र-कोटि वानर हैं। नील सेनापति यदि तनिक भी

वानर सत्तर-कोटि यार पाछु लागे ❋ सुग्रीव भूपति देख श्रीरामेर आगे
विशकोटि कपि सह ओइ ये गवाक्ष ❋ त्रिशकोटि वानरेते देखह धूम्राक्ष
सम्पाति वानर देख गौरवर्ण धरे ❋ रणे गेले विपक्ष पलाय यार डरे
हिंगुली पर्व्वतेर हिंगुल येन अंग ❋ पञ्चशत कोटि कपि संगे शरभंग
मलय पर्व्वते कपि वर्ण येन गेरि ❋ सहित सत्तर कोटि देखह केशरी
शरभ वानर देख सहस्र कोटि सह ❋ रणेते पशिले तारे नाहि पारे केह
हेलाय सम्पाति कपि कभु यदि नड़े ❋ शरीर योजन-दश तार आड़े जोड़े
एकादश कोटिते वानर महामति ❋ सहस्र कोटिते ऐ कुमुद सेनापति
शत शत उत्तरेर वीर महाबली ❋ यादेर चरणे उड़े गगनेते धूलि
देख धूम्र-धूम्राक्ष राजार दुइ शाला ❋ वानर कटक मध्ये येन मेघमाला ८
देख गय-गवाक्ष से साक्षात् शमन ❋ पञ्चशत कोटि द्वय भायेर भिड़न
वैद्यराज सुषेण से राजार श्वसुर ❋ तिनकोटि वृन्दवीर याहार प्रचुर
नल वीर देख विश्वकर्म्मार नन्दन ❋ ये बाँधिल पारावार शतेक योजन

हिलता है तो उसकी सेना बारह पहर का पथ छेंक लेती है। श्रीराम के सम्मुख सुग्रीव राजा को देख रहे होंगे—उसके पीछे सत्तर करोड़ वानरों की सेना है। बीस करोड़ की सेना लेकर वह देखो गवाक्ष खड़ा है और तीस करोड़ वानर लेकर धूम्राक्ष। वह गोरे रंग का वानर सम्पाति है जिसके रणक्षेत्र में पहुँचते ही विपक्ष की सेना में मारे डर के भगदड़ मच जाती है। हिंगुली पर्वत के अंग के समान (बीरवर) हिंगुल है जिसके साथ पाँच सौ करोड़ कपि हैं। मलय-पर्वत के कपियों के शरीर का रंग गेरू जैसा है—ऐसे सत्तर करोड़ कपियों के संग केशरी है। शरभ नामक वानर सहस्र-कोटि वानरों के साथ है, वह युद्ध में उतर पड़े तो कोई सामना नहीं कर सकता। यदि सम्पाति कपि ने कभी अँगड़ाई भी ली तो उसका दश-योजन का शरीर लम्बाई-चौड़ाई में डोल जाता है। महामति वानर के पास ग्यारह करोड़ की सेना है। उस कुमुद नामक सेनापति के पास सहस्र कोटि की सेना है। उत्तर के सैकड़ों वीर महाबलियों को देखो जिनके पदचाप से गगन में धूल उड़ती है। राजा (सुग्रीव) के दो साले धूम्र और धूम्राक्ष मानों वानर-सेना में मेघमाला के समान हों ॥ ८ ॥

मूर्तिमान् यम जैसे गय और गवाक्ष को देखो—दोनों भाइयों की सेना पाँच सौ करोड़ की है। राजा के श्वसुर वैद्यराज सुषेण के पास तीन करोड़ वीर हैं। विश्वकर्मा-नन्दन नल वीर को देखो जिन्होंने सौ-योजन समुद्र

गाछ पाथरेते जेइ बाँधिलेक सेतु ❊ लंकापुरी विनाशिबे एइमात्र हेतु
देखह सुग्रीव राजा वानराधिपति ❊ त्रिभुवन नाहि आँटे याहार संहति
बालिर विक्रम तुमि जान भालमत ❊ तार भाइ सुग्रीव लंकाते समागत
महेन्द्र-देवेन्द्र देख सुषेणनन्दन ❊ आशी कोटि वीर दुइ भायेर भिड़न
भल्लुक कटक देख मंत्री जाम्बवान ❊ आशी कोटि वानरेते देख हनुमान
युवराज अंगद से बालिर कुमार ❊ कुड़ि लक्ष कपि तार निज परिवार ९
रामेर वानर संख्या कि कब काहिनी ❊ शत कोटि वानरेते एक वृन्द गनि
शत कोटि वृन्द एक महावृन्द हय ❊ शत कोटि महावृन्द अर्व्वुद निश्चय
शत कोटि अर्व्वुदेते महार्व्वुद लेखा ❊ शत कोटि महार्व्वुदे एक खर्व्व शिक्षा
शत कोटि खर्व्व एक महाखर्व्व हय ❊ शत कोटि महाखर्व्व शंख सुनिश्चय
शत कोटि शंखे एक महाशंख जानि ❊ शत कोटि महाशंख एक पद्म जानि
शत कोटि पद्मे एक महापद्म हय ❊ शतकोटि महापद्म सागर निर्णय
शत कोटि सागरे महासागर जानि ❊ शत कोटि महासागरे एक अक्षौहिनी
शतकोटि अक्षौहिणीते एक अपार ❊ अपारेर अधिक गणना नाहि आर १०

को बाँध डाला। लंकापुरी के विनाश के निमित्त उन्होंने पेड़-पत्थरों की सहायता से सेतु का निर्माण किया। वानरों के अधिपति सुग्रीव राजा को देखो जिनका तीनों लोक में कोई मुकाबला नहीं कर सकता। तुम को बालि का पराक्रम तो भली प्रकार विदित ही है, उसी के भाई सुग्रीव लंका में पधारे हैं। सुषेण के पुत्र महेन्द्र की अस्सी कोटि बीरों की सेना है। मंत्री जाम्बवान के अधीन भालुओं का कटक और अस्सी कोटि वानरों सहित हनुमान को देखिये। बालि का पुत्र युवराज अंगद है जिसके अपने परिवार में बीस लाख कपि हैं॥ ९॥

राम की वानरी-सेना की संख्या के बारे में क्या वर्णन करूँ। शत-कोटि वानरों से एक वृन्द की गिनती होती है। शत-कोटि वृन्द से एक महावृन्द। शत-कोटि महावृन्द से एक अर्बुद। शत-कोटि अर्बुद से एक महार्बुद। शत-कोटि महार्बुद से एक खर्ब। शत-कोटि खर्ब से एक महाखर्ब। शत-कोटि महाखर्ब से एक शंख। शत-कोटि शंख से एक महाशंख। शत-कोटि महाशंख से एक पद्म। शत-कोटि पद्म से एक महापद्म। शत-कोटि महापद्म से एक सागर। शत-कोटि सागर से एक महासागर। शत-कोटि महासागर से एक अक्षौहिणी। और शत-कोटि अक्षौहिणी से एक अपार। अपार से अधिक आगे कोई गिनती नहीं है॥१०॥

हेथा विभीषण बले श्रीराम गोचर * हेर राजा दशानने प्राचीर उपर
झाट वाण मारि तुमि काटह सत्वर * घुचुक मनेर दुःख जुड़ाक अन्तर
धनुर्व्वाण लये राम करेन सन्धान * ताहा देखि रावण पलाय लये प्राण
शुकसारण बले, छाड़ जीवनेर आस * कटकेर चाप देखि लागये तरास
जीवनेर वासना यद्यपि थाके मने * सीता देह रामेरे रावण, एइक्षणे
सीता दिया रामेरे ना कर यदि प्रीत * श्रीरामेर हाते राजा, मरिबे निश्चित
गरुड़ पाइले सर्प गिले ततक्षणे * अव्याहति नाहि तव श्री रामेर वाणे
शुक ओ सारण दोंहे कहे एइ रूपे * कोपे दुइ चरे भर्त्से दशानन भूपे
कृत्तिवास पण्डित भाविया नारायण * लंकाकाण्ड गाइलेन गीत रामायण ११

शुक-सारणेर प्रति रावणेर भर्त्सना

कोपे कहे लंकेश्वर, मृत्युर नाहिक डर, शत्रुर प्रशंसा वारे-वारे।
कि छार मिछार नर, भये काँपे चराचर, सदा खाटे आमार दुयारे ॥
स्वर्ग-मर्त्य-त्रिभुवने, देवता-गन्धर्व्वगणे, यक्ष कि किन्नर-विद्याधर।
कम्पित आमार डरे, कि भय नर-वानरे, कि बलिल हीन बुद्धि चर ॥

इधर विभीषण ने श्रीराम से कहा, वह देखिये राजा दशानन प्राचीर के ऊपर खड़ा है। शीघ्र ही वाण मारकर उसका वध कीजिये—मेरे मन का क्लेश दूर हो, दिल ठंडा हो। धनुष-वाण लेकर राम निशाना लगाने लगे। देख कर रावण अपने प्राण लेकर भाग खड़ा हुआ। शुक-सारण ने कहा, अपने प्राणों की आशा त्याग दें। कटक की अधिकता देखकर त्रास लगता है। यदि मन में प्राणों की आकांक्षा है, तो हे (लंकाधिपति) रावण! सीता को तत्काल राम के हाथों में सौंप दें। सीता को देकर यदि राम को प्रसन्न नहीं किया तो राम के हाथों आपकी मृत्यु निश्चित है। राजन्! जिस प्रकार गरुड़ के ग्रास से सर्प का बचाव नहीं उसी प्रकार श्रीराम के वाण से आपका कोई बचाव नहीं। शुक और सारण दोनों चर मिलकर इस प्रकार भूपति दशानन की भर्त्सना करने लगे॥ ११॥

रावण द्वारा शुक-सारण की भर्त्सना

क्रोध में आकर लंकेश्वर ने कहा, तुझे मृत्यु का भय नहीं, बार-बार शत्रु की प्रशंसा कर रहा है। यह तुच्छ मानव किस बूते का है, सारा चराचर मेरे भय से काँपता रहता है और मेरे दरवाजे पर बेगार झेलता रहता है। स्वर्ग-मर्त्य—त्रिभुवन में देवता, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, विद्याधर मेरे भय से सभी कम्पित रहते हैं। मुझको नर-वानर से कौन सा डर है।

कपि देखि लक्ष-लक्ष, राक्षस जानिर भक्ष्य, तारे भय कर कि कारणे।
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे, बले मम तुल्य नहे, इंगिते बधिब दुइजने॥
कुपिले कुमार भागे, के आसि जुझिबे आगे, भय कर मानुष-वानरे।
कृत्तिवास रचे गीत, दशानन क्रोधान्वित, वारे वारे भर्त्से दुइ चरे॥१२॥
पर सैन्य चच्चिते पाठाइलाम तोरे ❋ परेर बड़ाइ करिस आमार गोचरे
याहार प्रसादे वाड़े हेन राजा निन्दे ❋ मारिते आइले वैरी तार गुण वन्दे
पूर्व्वे उपकार ये करिलि स्थाने-स्थाने ❋ आजि कोपे एड़ाइलि एइ से कारणे
दूर हरे बेटा चर ना कर बाखान ❋ आपनार दोषे पाछे हाराइस प्राण
एत यदि दशानन बलिलेक रोषे ❋ प्रान लये धाय शुक-सारण तरासे १३

कटक-निर्णये शार्द्दूलेर गमन ओ विभीषणादि-कर्त्तृक लाञ्छना

जोड़ हात करि बले वीर महोदर ❋ ये ना जाने किछुइ, पाठाओ हेन चर
कहिते ना जाने कथा सभा विद्यमाने ❋ हेन चर आपनि पाठाओ कि कारणे

हीन बुद्धि चर! तू क्या बकवास कर रहा है। यह जो लाख-लाख कपि देख रहे हो वे राक्षस जाति के भक्ष्य हैं, उनसे डरने का कौन सा कारण है। श्रीराम-लक्ष्मण को कहते हो कि दोनों मेरे वश के नहीं हैं—अरे इनका वध तो मैं संकेतमात्र से कर डालूँगा। इन राजकुमारों में कौन युद्ध के लिए अग्रसर हो सकेगा? (निरीह) नर-वानरों से भय कैसा? कृत्तिवास गीत की रचना कर रहा है। दशानन मारे क्रोध के बार-बार दोनों चरों को डाँट-फटकार रहा है॥ १२॥

तुम दोनों को दूसरे की सेना का भेद लेने के लिए मैंने भेजा और तुम आकर मेरे ही सामने उन्हीं की बड़ाई करने लग गये। जिस राजा के अनुग्रह से तुम्हारा पालन-पोषण हो रहा है उसी की निन्दा करने लग गये। जो वैरी मारने आ रहा है उसी का गुण बखानने लग गये। इससे पूर्व तुम दोनों ने कभी-कभार जो उपकार किया है उसी के कारण आज मेरे क्रोध से बच रहे हो। रे अधम चर! दूर हो जाओ, आगे मत बखानो। कहीं अपने ही दोष से अपने प्राणों से हाथ न धो लो। दशानन ने सरोष यह सब कहा तो शुक-सारण त्रास से वहाँ से प्राण लेकर भाग खड़े हुए॥ १३॥

कटक-निर्णय के लिए शार्दूल का जाना और विभीषण आदि द्वारा उसका निग्रह

वीर महोदर ने हाथ जोड़ कर कहा, ऐसे चर को आप क्यों भेजते हैं जो कुछ भी नहीं जानता और सभा में बात करने की भी जिसको तमीज नहीं। रावण ने फिर शार्दूल नामक राक्षस को बुलवाया। वह पाँच

रावण डाकिया आने शार्दूल-राक्षसे ❋ पञ्चजन संगे से आइल तार पाशे
पञ्चजन मध्ये तार शार्दूल प्रधान ❋ दशानन दिल तार हाते गुया-पान
कोन खाने राम सैन्य पोहाय रजनी ❋ कोन बाटे कपिगण करिल उठानि
चरेर प्रसादे राजा सर्व्व वार्त्ता जाने ❋ चरेर प्रसादे राजा परचक्र जिने
लक्ष्मण सुग्रीव रामे जान भालमते ❋ परचक्र जानि तुमि आइस त्वरिते १४
राजार आदेश चर बन्दिलेक माथे ❋ गतमात्र ठेकिलेक विभीषण हाते
विभीषण बले कोथा गेलि रे वानर ❋ हेथा आसियाछे देख रावणेर चर
सेइ वाक्ये वानर चरेर चुले धरे ❋ चारि दिके वेड़िया ताहारे किल मारे
घरेर सेवक बलि ना करिल खून ❋ वानर ताहारे दिल कष्ट पुनः पुनः
आपन प्रत्यय रामे जानावार तरे ❋ पञ्चचर लये गेल रामेर गोचरे
दाण्डाइते नारे चर, नाहि नाड़े पाश ❋ ऊर्द्ध्वमुखे वार्त्ता कहे घन बहे श्वास
चर्च्चिते तोमार सैन्य पाठाय रावणे ❋ विभीषण धरे प्रभु काटिवार मने १५
श्रीराम बलेन आमि चर नाहि मारि ❋ रावणे कहिओ मोरे कथा दुइचारि
सर्व्वदा पाठाओ चर कोन प्रयोजने ❋ तोमाय आमाय देखा हइवेक रणे

राक्षसों के साथ वहाँ उपस्थित हुआ। इन पाँचों में शार्दूल प्रधान था। दशानन ने उसके हाथों में पान-सुपारी दी। किस स्थान पर राम की सेना रात बितायेगी, किस रास्ते से कपि आयेंगे ? चर की सहायता से राजा सब कुछ जान लेता है, चर की सहायता से राजा को शत्रु का सारा कूट-कौशल प्रकट होता है। लक्ष्मण, सुग्रीव और राम को भली-भाँति जान लो और शत्रु-पक्ष के सम्बन्ध में सारी बातों का पता लेकर तुम शीघ्र लौट आना ॥ १४ ॥

राजा का आदेश चर ने शिरोधार्य किया। किन्तु जाते ही विभीषण के हाथ पकड़ा गया। विभीषण ने कहा, अरे वानर किधर गये तुम सब, वह देखो रावण का चर आया है। यह वाक्य सुनते ही बन्दरों ने चरों के केश धर लिये और चारों ओर से घेर कर मुष्टि प्रहार करने लगे। घर के सेवक होने के कारण उनको प्राणों से तो नहीं मारा गया, किन्तु वानरों ने उनको बार-बार उत्पीड़ित किया। (विभीषण ने) अपना विश्वास राम के समीप सिद्ध करने के लिए पाँचों चरों को राम के समक्ष ले जाकर पेश किया। वे खड़े भी नहीं हो पा रहे हैं और न हिलडुल पा रहे हैं। तीव्र श्वास चल रही है। वे मुँह उठाकर बोले, हे प्रभु ! रावण ने आपकी सेना का भेद लेने के निमित्त हमको भेजा है और विभीषण ने हमारे वध की मन्शा से हमको पकड़ लिया है ॥ १५ ॥

आपनि देखिबे एइ कटक दुर्व्वार ✻ कि रूपे रावण, तुमि पाइबे निस्तार
मारिब रावण तोरे करि खण्ड-खण्ड ✻ विभीषण उपरे धराब छत्र-दण्ड
आमार विक्रम घुषिवेक त्रिभुवने ✻ रावणे मारिया राजा करि विभीषणे १६

रावण-समीपे शार्द्दूलेर कटक-वार्त्ता-कथन ओ श्रीरामेर प्रशंसा

प्रसाद पाइया चर विदाय हइल ✻ लंकार मध्येते गिया रावणे भेटिल
दाँड़ाइते नारे चर नाहि नाड़े पाश ✻ ऊर्द्ध्वमुखे वार्त्ता कहे, घन बहे श्वास
तोमार आज्ञाय गेनु सैन्य चर्च्चिवारे ✻ यावामात्र विभीषण चिनिल आमारे
रक्ते रांगा ह'ये गेनु रामेर गोचरे ✻ रघुनाथ प्राणदान दिलेन आमारे
कहिल सारण-शुक सैन्य यतोधिक ✻ देखिलाम कटक नयने ततोधिक
कि कब रामेर रूप से अति सुठाम ✻ ज्ञान हय देखिले, मानुष नहे राम
विराट् पुरुष राम सुदृश्य शरीर ✻ आजानु लम्बित बाहु नाभि सुगभीर
उन्नत नासिका ताँर श्रीखण्ड कपाल ✻ फलमूल खान, तबु विक्रमे विशाल
दूर्व्वादल श्याम तनु अति मनोहर ✻ कन्दर्प जिनिया रूप परम सुन्दर
आकार प्रकार ताँर हेरि हय ज्ञान ✻ त्रिभुवने वीर नाइ ताँहार समान

श्रीराम ने कहा, मैं चरों का वध नहीं करता हूँ। रावण से मेरी दो-चार बातें बता देना। सदा किस कारण तुम चर भेजते रहते हो। मेरी और तुम्हारी भेंट रणक्षेत्र में होगी, तब स्वयं इस दुर्जय सेना को देख लेना। हे रावण! तुम कैसे इससे निस्तार पाओगे? तुमको खंड-खंड मार कर विभीषण (के शीश) पर राजछत्र अर्पण करूँगा। त्रिभुवन में मेरा विक्रम घोषित होगा कि रावण को मार कर विभीषण को राजा बनाया ॥१६॥

रावण के निकट शार्दूल द्वारा कटक का वर्णन और श्रीराम की प्रशंसा

प्रसाद पाकर चर ने बिदा ली और लंका में जाकर रावण से भेंट की। चरों में खड़े होने या हिलने-डुलने की शक्ति नहीं रह गयी थी। तेज साँस चल रही थी। वे ऊर्द्ध्वमुख होकर सुनाने लगे—आपकी आज्ञा से हम सेना का भेद लेने गये और जाते ही विभीषण ने हमको पहचान लिया। (वानरों द्वारा किये गये) लहूलुहान दशा में हम राम के समक्ष पहुँचे। रघुनाथ ने हम लोगों को प्राण दान किया। सारण और शुक ने सेना की जो वृहद् संख्या बताई थी अपनी आँखों से उससे अधिक सेना हमको देखने को मिली। राम के रूप का क्या वर्णन करूँ, उनकी कद-काठ इतनी सुन्दर है कि क्या बताऊँ। देखने से यह लगता है कि राम मनुष्य नहीं हैं। राम अति विशाल व सुदर्शन शरीर वाले हैं—जांघ तक

धर्म्मेते धार्म्मिक राम, गुणेर सदन ❋ विपक्षे देखिते राम प्रलय ज्वलन
ना मारेन राम तारे यार नम्रवाणी ❋ जे बड़ाइ करे तार उपरे उठानि
आछुक अन्येर काज देबे तारे नारे ❋ राक्षस हाजार चौद्द एका राम मारे
पात्र मित्र बुझाय ना लय तव चिते ❋ विधिर निर्व्वन्ध बुझि गेल विपरीते
सीता लागि रावण मरिल हाय हाय ❋ पांचालीप्रबन्धेगीतकृत्तिवासगाय १७

श्रीरामेर माहात्म्य-वर्णन

शमन-दमनरावणराजारावण-दमनराम❋शमनभवन नाहयगमन येलयरामेरनाम
राम नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे ❋ सर्व्व कर्म्म धर्म्म रामनाम बिना मिछे
मृत्युकाले यदि नर राम बलि डाके ❋ विमान चड़िया सेइ जाय देवलोके
श्रीरामेर महिमार कि दिब तुलना ❋ ताहार प्रमाण देख गौतम-ललना
पापी जन मुक्त हय वाल्मीकिर गुणे ❋ अश्वमेध फल पाय रामायण शुने

लम्बी भुजाओं और गंभीर नाभिवाले हैं। उनकी नासिका समुन्नत और चन्दन सा माथा है। फल-मूल खाते हैं फिर भी महा-पराक्रमी हैं। दूर्वादल सा श्यामल उनका अति-मनोहर तन है और कन्दर्प को भी नीचा दिखानेवाला उनका सौन्दर्य। उनका आकार-प्रकार देखकर ऐसा लगता है कि तीनों लोक में उनके समान कोई वीर नहीं। राम धार्मिक हैं, गुणों का आलय हैं, शत्रु को भस्म करने के लिए प्रलय की अग्नि के समान हैं। जो नम्रभाषी है उसे राम नहीं मारते, लेकिन जो बढ़-बढ़ कर बोलता है उसी पर वे आक्रमण करते हैं। दूसरों की क्या बताऊँ अकेले राम चौदह हजार (खरदूषणादि) राक्षसों को मार डालते हैं। आपके पात्र-मित्र सभी समझा रहे हैं किन्तु आपकी समझ में कोई बात आ नहीं रही है। लगता है भाग्य आपके विपरीत हो गया है। हाय-हाय सीता के कारण (लंकपति) रावण की मृत्यु आ गयी। कृत्तिवास गीत-गाथा के माध्यम से राम की महिमा गाता है॥ १७॥

श्रीराम का माहात्म्य-वर्णन

जिस यम का दमन रावणराज ने किया उस रावण का दमन करने वाले राम हैं। जो राम का नाम लेता है, उसको यमलोक नहीं जाना पड़ता। भाई ! राम-नाम जपो, दूसरा काम बाद में। राम-नाम के बिना सारे धर्म-कर्म व्यर्थ हैं। मृत्यु के समय यदि मनुष्य राम का नाम ले लेता है तो विमान पर सवार होकर वह देवलोक चला जाता है। श्रीराम की महिमा की कौन सी तुलना दूँ। प्रमाण के रूप में गौतम-पत्नी अहल्या

राम नाम लइते ना कर भाइ हेला ❋ भवसिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
अनाथेर नाथ राम प्रकाशिला लीला ❋ वनेर वानर वन्दी जले भासे शिला
राम-जन्म-पूर्व्वे षाटि सहस्र वत्सर ❋ अनागत पुराण रचिला मुनिवर
रामनाम स्मरणे यमेर दाय तरि ❋ भवसिन्धु तरिवारे रामपद तरी
चण्डाले याँहार दया बड़ सकरुण ❋ पाषाणे निशान आछे श्रीरामेर गुण
श्रीराम-नामेर गुणे कि दिब तुलना ❋ पाषाण मनुष्य हय, नौका हय सोना
राम नाम लैते भाइ ना करिह हेला ❋ संसार तरिते राम नामे बाँध भेला
श्रीराम स्मरणे येबा महारण्ये जाय ❋ धनुर्व्वाण लये राम पश्चाते गोड़ाय
राम-राम बल भाइ मुखे वार-वार ❋ भावि देख राम विना गति नाहि आर
करिलेन अश्वमेध श्रीराम यतने ❋ अश्वमेध फल पाय रामायण शुने
एमन रामेर गुण कि दिब तुलना ❋ पादस्पर्शे शिला नर, नौका हय सोना १८
पार कर रामचन्द्र पार कर मोरे ❋ दीन देखि नौका राम लये गेल दूरे

को देख लो। बाल्मीकि की कृपा (अर्थात् रामकथा) से पापियों को मुक्ति मिली। रामायण सुनने से अश्वमेध-यज्ञ का फल प्राप्त होता है। भाई, राम-नाम लेने में आलस मत करना, भवसागर पार करने के लिए राम-नाम नौका के समान है। अनाथ के नाथ राम ने अपनी लीला प्रदर्शित की—वन के वानर वन्दी बन गये और जल पर शिला तैरने लगी। राम-जन्म से साठ-हजार वर्ष पूर्व मुनिवर ने अनागत-पुराण की रचना की। राम-नाम के स्मरण से यम के हाथों से निस्तार मिल जाता है। भवसिन्धु को पार करने के निमित्त राम के चरण, तरणि (नौका) के समान हैं। जिनकी करुणा चंडाल पर भी है और जिनके गुणों के चिह्न पाषाण पर भी अंकित हैं। राम-नाम लेने में भाई कतई काहिली मत करना, संसार तरने के लिए राम-नाम की भेला बाँधो। श्रीराम का स्मरण कर जो घनघोर जंगल में भी जाता है तो राम उसके पीछे-पीछे धनुष-बाण लिये चलते हैं। भाई, राम-नाम बार-बार मुँह से बोलो, सोच कर देखो, बिना राम के कोई गति नहीं। श्रीराम ने तो यत्न करके अश्वमेध-यज्ञ किया और केवल रामायण के श्रवणमात्र ही से अश्वमेध का फल मिल जाता है। राम के ऐसे ही गुण हैं, उनकी क्या तुलना दूँ। उनके चरणों के स्पर्श से पत्थर प्राणी में बदल जाता है और नाव सोने की बन जाती है॥ १८॥

पार लगाओ हे रामचन्द्र, मुझे पार लगाओ। मुझे दीन देखकर तुम नाव लेकर दूर हट गये। जिनके पास (उतराई देने के लिए) कौड़ी थी

यार सने कड़ि छिल गेल पार ह'ये ❋ कड़ि बिना पार करे तारे बलि नेये
ध्यान पूजा तंत्र मंत्र यार नाहिं ज्ञान ❋ तारे यदि करे पार तबे जानि राम
योग-याग तंत्र-मंत्र जेइ जन जाने ❋ तुमि कि तराबे तारे तरे निजगुने
मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे ❋ कर बा न कर पार कूले आछि व'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भालेभाले ❋ कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले
कारे भांग कारे गड़ एइ तव काज ❋ कारो मुण्डे छत्रदण्ड कारो मुण्डे वाज
एक शत पुत्र कारो अक्षय करि दाओ ❋ एक पुत्र दिया कारे ताओ हरि लओ
आपनि से भांग प्रभु आपनि से गड़ ❋ सर्प ह'ये दंश तुमि ओझा ह'ये झाड़
सकलि तोमार लीला सब तुमि कर ❋हाकिम ह'ये हुकुम दाओ पेयादा ह'येमार
अधम देखिया यदि दया ना करिबे ❋ पतितपावन नाम कि गुणे धरिबे
साधु जने तराइते सर्व्व देव पारे ❋ असाधु तरान जिनि, ठाकुर बलि ताँरे
अहल्या पाषाण ह'ये छिल दैव दोषे ❋ मुक्ति-पद पाय तव चरण परशे
पार कर रामचन्द्र रघुकुलमणि ❋ तरिवारे दुटि पद क'रेछ तरणी

वे पार लग गये, बिन-कौड़ी के भी पार लगाओ तो समझूँ कि नाविक हो। जिसको ध्यान-पूजा, तंत्र-मंत्र का ज्ञान न हो उसको पार लगाओ तो जानूँ कि राम हो। जो व्यक्ति योग-याग और तंत्र-मंत्र में कुशल है वह तो अपने ही गुण के बूते पार हो जायगा, तुम उसे क्या पार लगाओगे ? मेरे पास कौड़ी नहीं है, मैं पार कैसे जाऊँगा ? चाहे पार लगाओ या न लगाओ मैं तो तट पर बैठा ही रहूँगा। केवटों की आदत से मैं भली-भाँति परिचित हूँ—कौड़ी न मिलने पर भी वे शाम को पार कर देते हैं। किसी को बिगाड़ते हो तो किसी को बनाते हो—यही तुम्हारा काम है। किसी के सिर पर राजछत्र है तो किसी के सिर गाज गिराते हो। किसी को तो सौ पुत्रों से अक्षय बना देते हो और किसी को एक पुत्र देकर भी छीन लेते हो। हे प्रभु, तुम स्वयं तोड़ते हो, स्वयं गढ़ते हो। साँप बनकर डस लेते हो और ओझा बनकर विष उतार देते हो। सभी कुछ तुम्हारी लीला है, तुम ही सब कुछ करते हो। हाकिम बनकर हुक्म देते हो और कारिन्दा बनकर ताड़ित करते हो। अधम देख कर यदि दया नहीं करोगे तो अपना पतितपावन नाम किस बल पर रख सकोगे। साधुओं को तारने में तो सभी देवता समर्थ हैं, असाधु को जो तारे वही सबका स्वामी (देवताओं का देवता) है। दैव-दोष से अहल्या पाषाण बन गयी थी, तुम्हारे चरणों के स्पर्श से उसे मुक्ति मिल गयी। हे रघुकुलमणि रामचन्द्र ! मुझको पार लगाओ, तुम्हारे दोनों चरणों को मैंने अपनी तरणी बना लिया है। यदि

शरीफ़ज़ादः (आर्यपुत्र)

हमारे इनायतफ़रमा मिर्ज़ा आबिदहुसैन साहब के वालिद माजिद मिर्ज़ा बाक़रहुसैन मरहूम हज़रत अब्बास की दरगाह के पास कहीं रहते थे, पुख़्ता मकान था। दस रुपया माहवार बिला शर्त ख़िदमत नवाब मुकर्रमुद्दौला बहादुर की सरकार से पाते थे। उसमें ख़ुदा ने यह बरकत दी थी कि बाफ़राग़त बसर करते थे। तीन सौ रुपये का बीबी के हाथ गले में गहना था। सौ पचास का घर में असासा था। दस बीस रुपये वक़्त बे वक़्त सन्दूक़चे से निकल भी आते थे। आबिदहुसैन की वाल्दः ने कभी आप चूल्हा नहीं फूंका। मामा हमेशा नौकर रही। आबिदहुसैन की कोई तक़रीब[1] ऐसी नहीं हुई जिसमें दस बीस गरीब जमा न हुए हों। डोमिनियाँ[2] न आई हों। आबिदहुसैन की शादी अपने मिक़दार और हौसले के मुआफ़िक़ अच्छी तरह की। अगरचे इस तक़रीब में मिर्ज़ा साहब मरहूम किसी क़द्र मक़रूज़ हो गए थे मगर जहेज़ बेचने की नौबत नहीं आई। शादी के बरसवें दिन एक लड़का पैदा हुआ और उसकी छठी भी बड़ी धूमधाम से हुई। जब तक माँ बाप ज़िन्दः रहे मिर्ज़ा आबिदहुसैन को खाने पीने की तरफ़ से फ़राग़त थी। महल्ले में एक मौलवी साहब रहते थे उनसे फ़ारसी पढ़ते थे। स्कूल में अंगरेज़ी पढ़ने जाते थे।

जब मिर्ज़ा बाक़रहुसैन ने इन्तक़ाल किया आबिदहुसैन मिडिल क्लास तक पहुँच गए थे। अगरचे वालिद के मरने का सदमा बहुत सख़्त हुआ मगर जों तों करके मिडिल पास हो गए।

वालिद के मरने के बाद घर के इन्तज़ाम का कुल बार उनके सर पर पड़ा मगर इख़राजात से किसी क़द्र इत्मीनान था इसलिए कि नवाब की सरकार से सात रुपया माहवार उनकी वाल्दा को मिलता रहा मगर उनकी बदक़िस्मती से पूरा साल न गुज़रने पाया था कि नवाब करबलाए मुअ़ल्ला चले गये और वहाँ जाके दो ही महीने के बाद इन्तक़ाल फ़र्माया।

---

१ उत्सव २ उत्सवों में मेहतरानियों के आकर गाने बजाने का रवाज़ था।

अब यह इन्ट्रेंस क्लास में थे। जब बाहर की आमदनी बिल्कुल मौक़ूफ़ हो गई तो इखराजात रोज़मर्रः के लिए घर का असासा बिकने लगा। यहाँ तक कि सोने चाँदी का असबाब सब बिक गया। ताँबे के बर्तनों की नौबत आई वह भी एक एक करके बिक गए यहाँ तक कि सिवाए दो तीन पतीलियों और दो लोटों के कुछ बाक़ी न रहा।

यह अब तक स्कूल में पढ़ने जाते थे और तमाम उम्मीदें इम्तहान के पास होने पर मुनहसिर[१] थीं। यहाँ तक कि इम्तहान का ज़माना क़रीब आया। हेडमास्टर ने फ़ीस तलब की। बीवी की चूड़ियाँ गिरवी रख के दस रुपये फ़ीस के जमा किए। इम्तहान के दो दिन बाक़ी थे कि वाल्दा हैज़े में मुब्तिला हुईं और ठीक उसी दिन इन्तक़ाल किया कि जिस दिन उन्हें इम्तहान में शरीक होना चाहिये था। इस हादसः नागहानी की वजह से बेचारे इम्तहान से महरूम रहे। सारी मेहनत की-कराई खाक में मिल गई।

माँ का मरना था गोया उनके सर पर आसमान टूट पड़ा। खानादारी का पूरा पूरा बोझ दफ़्अतन[२] आन पड़ा। घर का असबाब और बीवी का जहेज़ माँ के जीते जी बिक कर सर्फ़ हो चुका था और जो कुछ रहा सहा था वह उनकी तजहीज व तकफ़ीन[३] और रस्म फ़ातिहः वग़ैरह में सर्फ़ हो गया। अब घर में एक हब्बा नहीं है जिसे गिरवी रखें या बेच लें। घर में एक खुद हैं, एक बीवी, एक लड़का कोई तीन बरस का। एक लड़की छः महीने की गोद में। अभी तक सूरते रोज़गार नहीं और न कहीं से उम्मीद है मगर इस्तिक़लाल[४] यह है कि अभी तक पढ़े जाते हैं। इम्तहान के छै महीने और बाक़ी हैं। किसी तरह हो अबकी ज़रूर पास होना चाहिए। आखिर कुछ न बन पड़ा। एक फ़त्तू कुंजड़ा रहता था। मकान उसके पास सौ रुपये पर गिरवी रखा; रेहन बाक़ब्ज़ः था। खुद महमूदनगर के नाले पर एक कच्चा सा मकान एक रुपया माहवार किराये पर लेकर रहने लगे। खैर इम्तहान के ज़माने तक के लिए इत्मीनान हो गया। जी तोड़ के मेहनत की, खुदा खुदा करके पास भी हो गए। अब नौकरी की तलाश है।

आज बहुत ही परेशान घर से निकले हैं। मुंह उतरा हुआ है, आंखों में हल्के पड़ गए हैं। मारे ज़ोफ़[५] के क़दम नहीं उठता। (दिल में कहे जाते हैं) अफ़सोस! आज हमारे बीवी बच्चों का दूसरा फ़ाक़ः है। रास्ते में जो लोग मिलते हैं उनके चेहरे किस क़द्र बश्शाश[६] नज़र आते हैं। कुंजड़ों की दूकानें मेवों और तरकारियों से भरी हुई हैं। नानबाई गरम गरम शीरमालें और खमीरी रोटियाँ तन्दूर से निकाल रहे हैं। नहारी[७] के पतीले से गरम गरम भाप निकल रही है। फ़त्तू की दूकान पर हलवासोहन भी ताज़ा

१ निर्भर २ सहसा ३ दफ़न-कफ़न की व्यवस्था ४ दृढ़ता ५ कमज़ोरी
६ खुश ७ सुबह को पकनेवाले गोश्त का बरतन।

ताज़ा बना हुआ है। तमाम रास्ता महका हुआ है। हलवाइयों की दूकानों पर पूरियाँ, कचौरियाँ, हलवे, मिठाइयाँ कैसी पटी पड़ी हैं। इसमें से कुछ भी हमारे और हमारे ग़रीब बीवी बच्चों का हिस्सा नहीं। सर्राफ़ की दूकानों पर पैसों का ढेर है, लोग कैसे छना-छन रुपये भुनाते हैं। हमको एक पैसा तक मयस्सर नहीं कि अपने बच्चों के लिए चने भुना के ले जायँ।

इंट्रेंस का सार्टिफ़िकेट जेब में है। अगर थोड़ा सा शीरा मुमकिन होता तो बला से उसी को चाटते या बीवी बच्चों को चटाते। अफ़सोस मैंने बड़ी ग़लती की। जैसे ही मिडिल पास हुआ था रुड़की कालेज में चला जाता। दो साल किसी न किसी तरह गुज़र ही जाते। देखो रामचरन मेरे ही साथ मिडिल में पास हुआ था। अब सुना है कि रायबरेली में उसे सबओवरसियरी मिल गई है। काश मेडिकल कालेज ही चला जाता। हेडमास्टर ने उस ज़माने में कैसा कैसा कहा। अफ़सोस मैंने अपने हाथ से अपने पावों में कुल्हाड़ी मारी। तीन बरस मुफ़्त ज़ायः हुए। अब क्या हो सकता है। इन्हीं खयालात में ग़लताँपेचाँ लड़खड़ाते ठोकरें खाते गोलदरवाज़े तक पहुँच गए। अब क़रीब दस बजे का वक़्त था। जो लोग दफ़्तरों में नौकर थे, इक्कों पर सवार हो हो के दफ़्तर जा रहे थे। दो एक इक्केवालों ने इन्हें भी टोका।

"मुन्शी साहब इधर आइये। हज़रतगंज चलियेगा।" यह बेचारे हज़रतगंज ही की तरफ़ जाने वाले थे मगर पैसा कहाँ था जो सवार होके जाते। चुपके हो रहे। सड़क के किनारे पा प्यादः रवाना हुए।

मियाँ तो नौकरी की तलाश में गए। अब बीवी का हाल सुनिए। यह बेचारी सुबह से उठ के टोपी काढ़ने में मसरूफ़ थीं। एक पल्ला तो कई दिन से तैयार था। दूसरे में कुछ काम बाक़ी था। बारे[1] उस वक़्त दोनों पल्ले तैयार हो गए। अब उसके फ़रोख़्त करने की फ़िक्र हुई। मकान में एक खिड़की थी। वहाँ जाके पुकारीं—हमसाई! हमसाई[2] खिड़की के पास आई।

आबिदहुसैन की बीवी—हमसाई, तुम्हारे मियाँ घर में हैं?

हमसाई—हाँ, क्या टोपी तैयार हो गई?

आबिदहुसैन की बीवी—हाँ बहन। ख़ुदा ख़ुदा करके आज तैयार हुई। ज़रा अपने मियाँ को दिखा दो। हमसाई टोपी मियाँ के पास ले गईं।

मियाँ—हाँ, यह यह टोपी खूब तैयार हुई।

हमसाई—भला कितने की होगी?

---

१ अस्तु २ पड़ोसिन।

मियाँ—बाज़ार में दिखाने से हाल मालूम होगा। मेरे अन्दाज़े में तो कोई दस ग्यारः आने की होगी।

बीबी—अच्छा तो बेच लाओ। बेचारी के यहाँ आज तीसरा फ़ाक़ः है। बच्चे ग़श की हालत में पड़े हैं।

मियाँ—तीसरा फ़ाक़ः! तुमने मुझसे न कहा। बनिये के यहाँ से कुछ ला देता।

बीबी—चुप रहो। खिड़की के पास खड़ी हैं। कहीं सुन न लें। बड़े ग़ैरतदार लोग हैं। चाहे दम निकल जाए मुंह से न कहेंगे। क़र्ज़ दाम भी नहीं लेते। बीवी-मियाँ दोनों की एक राह है। जब फ़ाक़ः होता है, बच्चों तक को घर से निकलने नहीं देते।

मियाँ—बड़े आला ख़ान्दान हैं। ख़ुदा ने मुसीबत डाली है। इनके बाप के कारख़ाने ही और थे। अच्छा तो लाओ मैं जल्दी से टोपी बेच लाऊँ।

यह कहके मियाँ हुसैनअली ने अलगनी पर से अंगरखा उतार के पहना, टोपी पहनी, वह टोपी जेब में रखी। घर से निकले, जल्दी जल्दी पारचे वाली गली पहुंचे। दो एक दूकानदारों को वह दोनों पल्ले दिखाए। किसी ने ग्यारह आने लगाए किसी ने बारह आने लगाए। एक साहब शौक़ीन एक दूकान पर टोपियाँ देख रहे थे। उन्होंने यूं ही सरसरी निगाह से दोनों पल्ले देख के आँख से इशारा किया। यह दूकानदार से टोपी ले के थोड़ी दूर आगे जा के खड़े हो रहे। थोड़ी देर में वह आ गए।

ख़रीदार—अच्छा तो कितने की दीजिएगा?

हुसैनअली—हज़रत मेरा तो माल नहीं है। जिसका माल है उसने कह दिया है कि एक रुपये से कम न देना। अब आपको इख़्तियार है लीजिए या न लीजिए।

ख़रीदार—दूकानदार बारह आने लगाता है, आप एक रुपया माँगते हैं, इतना फ़र्क़?

हुसैनअली—दूकानदार तो चाहते हैं कमली डाल के लूट लें। जब बेचनेवाला भी दे।

ख़रीदार—अच्छा चौदह आने ले लो।

हुसैनकेली—रुपये से हरगिज़ कम न होंगी।

ख़रीदार—(फिर एक मरतबा टोपी के दोनों पल्लों को उलट पलट के देखा) अच्छा, ख़ैर एक ही रुपया ले लो। तुम्हारी ही ज़िद सही।

हुसैनअली—दुरुस्त है। ऐ हुज़ूर, माल नहीं है?

ख़रीदा—इसमें शक नहीं, बनी अच्छी है और इसके पास की मिल सकती है?

हुसैनअली—जी और कहाँ! मेरे पास एक ही कारीगर है। इस काम की दस बारह दिन में एक टोपी तैयार होती है।

ख़रीदार—अच्छा तो अबकी टोपी जो बने तो हम ही को देना। तुम्हारा मकान कहाँ है?

हुसैनअली—आप अपना दौलतखाना बता दीजिए, जिस दिन टोपी तैयार हो जायगी लेकर हाज़िर हो जाऊँगा।

खरीदार—यह क्या झवाई टोला है, हकीम साहब के मकान के क़रीब नवाब मुहम्मद अब्बास साहब कमरे में बैठे रहते हैं। उन्हीं से पूछ लेना। मीर साहब कहाँ रहते हैं, बल्कि मैं वहीं मिलूँगा। ऐ लो यह रुपया तो लो। बातों में देना ही भूल गया।

हुसैनअली—क्या हर्ज है फिर मिल जाता।

खरीदार तो रुपया देकर उधर रवाना हुआ। इधर मियाँ हुसैनअली खुश खुश क़दम बढ़ाते हुए घर की तरफ चले।

अहा! क्या ऐसे लोग भी ज़िन्दः हैं जो दूसरों का काम करके खुश होते हैं? हाँ हैं। और ऐसे लोगों में हैं जिनको मग़रूर बन्दएज़र[1] हिक़ारत की नज़र से देखते हैं जिनका चाल-चलन बहुत ही सीधा सादा है। इसलिए लोग उन्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं। उन्होंने वह आला दरजे की तालीम नहीं पाई जो खुदग़रज़ी के असूल सिखाती है, इसलिए उन्हें सादःलौह[2] का खिताब दिया जाता है। उन्होंने वह इल्म-मजलिस नहीं हासिल किया जिसमें ज़ाहिरदारी और बनावट इन्सानियत के असली जज़बात को छुपा देती है। इसलिए बेचारे बेतमीज़ खयाल किए जाते हैं। उन्होंने वह लग़ो फ़लसफ़ा नहीं पढ़ा जो मज़हब के मुक़द्दस[3] उसूल में शक डाल देता है। इसलिए जाहिल के लक़ब से याद किये जाते हैं। यह लोग गवर्नमेन्ट की मसलहतों को नहीं समझते न उसमें नुक़्ताचीनी करते हैं इसलिए उन्हें आला दरजे की या तमद्दुनी[4] इज्ज़त हासिल करने का खयाल ही नहीं। क़ौमी इस्लाह की उन्हें फ़िक्र नहीं रहती। इसलिए कि शौहरत की हवस उन्हें होती ही नहीं।

जब हुसैनअली रुपया लेके आए तो उन्होंने अपनी बीवी को दिया। बीवी खुशी खुशी दौड़ी गई। मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी को खिड़की के पास बुलाया, रुपया हवाले किया। उस वक़्त की खुशी उस नेकबख्त और ग़रीब बीवी की, ज़बानेक़लम से अदा नहीं हो सकती। उस रुपये की क़द्र उसी को हो सकती है जिसके बच्चों ने दो दिन से कुछ न खाया हो। जिसका शौहर रोज़ सुबह से भूखा प्यासा नौकरी की तलाश में निकल जाता हो और शाम को मायूस घर में आकर चुपके सो रहे। बीवी ने फ़ौरन मियाँ हुसैनअली से रुपया भुनाया, बनिए की दूकान से खाने के लिए नाज मंगाया। बच्चों को जल्दी से दो टिकियाँ डाल के खिलाईं। पानी पिला के सुला रखा। खुद कुछ नहीं खाया। एक टोपी का कपड़ा और रखा था। उसे बुक़ची से निकाला, छापे निकाले। गेरू की स्याही

१ घमण्डी धनी २ बुद्धू ३ पवित्र ४ सांस्कृतिक।

में थोड़ा सा पानी डाल के टोपी छापी, काढ़ना शुरू कर दी। मारे भूक के आँख से टाँका नहीं सूझता। फूल से गाल मुरझाये जाते हैं। हाथ काँप रहे हैं। मगर क्या मुमकिन कि बे मियाँ के कुछ खालें। दिल क़वी[1] है, चार दिन के खाने को सामान घर में मौजूद है। शाम को मियाँ आयेंगे। खुदा करे आज कहीं नौकरी हो जाए। क्या ही अच्छी बात है। इसी खयाल के साथ ही एक आह सर्द दिल से निकली और उसके साथ दो आँसू ढुलक के गालों तक आ गए। हाथ रुक गया। डुपट्टे के आँचल से आँसू पोछे। फिर छपाछप सुइयाँ निकलने लगीं।

अब चार बजे होंगे। खाना पकाने का वक़्त है। उन्हें यह खयाल है कि यह फूल और तमाम कर लूँ तो उठूँ। फूल बन गया। टोपी को हाथ में ले के पल्ले को दोनों हाथों से फैला के शिकन मिटाई। जै फूल बन गए थे उनको ग़ौर से देखा। फिर सुई लगा के टोपी बुक़्ची में बाँध दी। उठीं, वज़ू किया, ज़हरीन की नमाज़ पढ़ी। फिर कोठरी से तौल के आटा दाल निकाल लाईं। नमक मसाला अलाहिद: अलाहिद: करके रखा। चूल्हे में आग सुलगाई, दाल धो के चढ़ाई, आटा गूंधने बैठ गईं। उधर आबिद-हुसैन सरेशाम घर की तरफ़ पलट रहे हैं। दिन भर में कई दफ़्तर छान मारे, दस बारह बंगलों पर गए मगर जहाँ गए और अर्ज़ी दी, यही सदा सुनाई दी—कोई जगह खाली नहीं है। एक साहब ने यह राए दी, सदर बाज़ार में जाओ। शायद गोरों को उर्दू पढ़ाने के लिए नौकर हो जाओ। सदर गए। बारिकों में मारे मारे फिरे। दो एक गोरों ने बुलाया भी। मगर न उनकी यह समझे, न वह इनकी समझे। बात यह है कि उन्होंने अंगरेज़ी अव्वल तो पढ़ी ही क्या थी, दूसरे जो कुछ पढ़ी थी वह हिन्दुस्तानी मास्टरों से पढ़ी थी। इंट्रेंस क्लास में जो साहब अंगरेज़ी पढ़ाते थे उनका तलफ़्फ़ुज़ बहुत साफ़ था। वह भी मुश्किल से समझते थे। गोरों का लहज़: भला उनकी समझ में क्या आता। खुलासा यह कि जहाँ गए वहाँ से डैमफ़ूल बना के निकाले गए। इस आवार:गर्दी में शाम हो गई। अब ज़ोफ़[2] के मारे चला नहीं जाता। हर क़दम पर चक्कर आते हैं। मगर मजबूरी, घर तो किसी न किसी तरह पहुंचना ही है। घर में बीवी बच्चों को जिस हालत में छोड़ आए थे उसकी तसवीर तो दिन भर पेश-नज़र रही मगर उम्मीद बड़ी चीज़ होती है जिसने दिन भर बहाल रखा, खूब दौड़ाया, जब अच्छी तरह थका चुकी तो छोड़ दिया। अब उसी पुराने रफ़ीक़[3] से काम पड़ा जिसे यास[4] कहते हैं। उससे और कुछ न हो सका। मौत के तसव्वुर को सामने लाकर खड़ा कर दिया। आखिर होना ही क्या है? अगर यही हाल है तो मर भी जायँगे। हाय, अपना मर जाना तो कुछ ऐसा दुश्वार न था, छोटे बच्चों को एड़ियाँ रगड़-रगड़ के जान देना किससे देखा जायगा। अुफ़? मुफ़्लिसी

१ मज़बूत २ बेहोशी ३ साथी ४ निराशा।

क्या बुरी बलाए है; उससे अब निजात हो, मुमकिन नहीं। काश बीवी बच्चे न होते, मेरे साथ इन कम्बख़्तों की भी मिट्टी ख़राब हुई। कुछ बन नहीं पड़ता। करूँ तो क्या करूँ। इसी ख़याल में थे कि एक चक्कर आया। उसने सड़क के किनारे एक जगह घास पर बैठा दिया। अब उठते हैं तो उठा नहीं जाता। साथ ही यह ख़याल आया, घर जा के क्या करेंगे। यहाँ से सीधे मोतीमहल के पुल की मुण्डेर से अपने को दरया में गिरा दो, डूब मरो। नाउम्मेदी की राय पसन्द आई थी कि इसके साथ ही बीवी बच्चों की बेकसी का ख़याल आया। बेइख़्तियार आँखों से आँसू निकल पड़े। ख़ैर कुछ न सही। मेरे दम से बेचारों को किसी क़द्र सहारा तो है। किसी की आस तोड़ना अच्छा नहीं है। यह क्या बोदापन है। आलाख़ान्दानी और बेजा शरम को तर्क करना चाहिए। नौकरी इस ज़माने में मिले, मुमकिन नहीं। कल से टोकरी लेके चौक में जाना चाहिए। क्या कहीं मज़दूरी भी नहीं मिलेगी। मिहनत-मज़दूरी में कोई ऐब नहीं। शाम तक दो आने तो मिलेंगे, बच्चे फ़ाक़े से तो न पड़े रहेंगे। अच्छा अगर यह भी न हो सके, मकान जो गिरवी है उसे बेच डालना चाहिए। दस बीस जो बढ़ें उससे नख़ास में काट-कबाड़ की दूकान रख लें। शायद उसी से काम चले।

यह इन्हीं ख़यालात में थे। इतने में एक गवाँर सा आदमी, सर में फेंटा बँधा हुआ, मिरजई पहने, धोती बाँधे, इन्हीं के क़रीब आके बैठ गया। यह उठने ही को थे कि उस शख़्स ने पूछा—मियाँ साहब, आप कुछ फारसी (फ़ारसी) पढ़े हैं।

आबिदहुसैन—हाँ पढ़ा तो हूँ, क्यों ?

वह शख़्स—मुझे एक खत (ख़त) पढ़वाना है।

आबिदहुसैन—पढ़ तो देता मगर यहाँ रौशनी कहाँ है ?

वह शख़्स—सामने लाइट के पास चलके पढ़ दीजिए।

आबिद—चलो। यह कहके लालटेन के पास आए। उसने मिरजई की जेब से ख़त निकाल के दिया। ख़त काहे को एक तूमार का तूमार था।

ख़त का ख़ुलासा यह था कि बल्देव मिस्तरी की मार्फ़त एक हज़ार रुपये का लोहा ख़रीदकर भेज दो। मुबलिग़ दो सौ रुपया नक़द इस ख़त के साथ रवाना किया जाता है, वह दे देना। बाक़ी रुपया बरवक़्त पहुँचने लोहे के भेज दिया जायगा। इसके बाद लोहे की फ़िहरिस्त थी जिसे अटक-अटक कर पढ़ते जाते थे और वह बताता जाता था। ख़ुदा ख़ुदा करके अब वह ख़त तमाम हुआ। अब वह शख़्स कहने लगा—अच्छा तो अब इसका जवाब मैं किससे लिखवाऊँगा। आप ही लिख दीजिए। बड़ा ज़रूरी ख़त है। मिन्नत समाजत करने लगा।

वह शख़्स—थोड़ी दूर चले चलिये। बल्देव मिस्तरी का कारख़ाना है।

आबिद—मेरा मकान यहाँ से बहुत दूर है, मुझे बहुत रात हो जायगी तुम किसी और से लिखवा लेना।

वह शख़्स—देर नहीं होने पायेगी। और अगर देर हो जायगी तो घर का इक्का है, मैं आपको सवारी पर भेज दूँगा।

आबिद—(दिल में) हर्ज ही क्या है। चलो अच्छा हुआ चला भी नहीं जाता है। इक्के पर सवार होकर जल्दी से घर पहुंच जायँगे।

आबिद—अच्छा तो चलो।

उस शख़्स के साथ बल्देव मिस्तरी के कारख़ाने में पहुंचे। देखा एक बड़ा सा अहाता है। उसमें चारों तरफ़ खपरैल पड़ी है। सेहन में जिधर देखो लोहे का ढेर है। एक तरफ़ पत्थर के कोयलों का अम्बार लगा है।

खपरैलों में जा बजा लोहे की भट्ठियाँ बनी हुई हैं धौंकनी चल रही है। लोहा सुर्ख़ कर कर के उनसे निकाला जाता है। हथौड़े चल रहे हैं। एक खपरैल में एक चारपाई बिछी है। उसके पास दो तीन चीड़ के सन्दूक़ पड़े हैं। उनमें से एक पर बूढ़ा सा आदमी लेकिन बहुत ही तवाना[1], ऐनक लगाए बैठा है। क़रीने से मालूम हुआ कि बल्देव मिस्तरी यही है। जो शख़्स इनको ले गया था उसने एक सन्दूक़ पर इनको बिठा दिया। चिराग़दान ला के इनके आगे रख दिया। इनसे कहा कि ज़रा मिस्तरी जी को यह ख़त फिर सुना दीजिए। इन्होंने ख़त पढ़ के सुनाया। अब जवाब लिखने के लिये क़लम दावात की ज़रूरत हुई।

बल्देव ने कहा—भइया से माँग लो। उस शख़्स ने माधो भइया कहके पुकारा। भइया माधो, बल्देव का लड़का, कोई चौदह पन्द्रह बरस का सिन, सामने खपरैल में एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। सामने छोटी सी मेज़ लगी थी। उस पर किताबें रखी थीं। लैम्प रौशन था। उस शख़्स की आवाज़ सुनके जवाब दिया—काका क्या है?

वह शख़्स—अपनी कलम दबात तनी ले आओ। थोड़ा कागद भी लेते आइयो।

भइया माधो क़लम, दावात, काग़ज़ ले के आए। मिर्ज़ा आबिदहुसैन जवाब लिखने लगे। वह भी पास बैठ गया।

जवाब लिखने में बड़ी देर हुई। इसलिए कि हर क़िस्म के लोहे का वज़न और क़ीमत मय निर्ख़ के लिखवाया जाता था। मिर्ज़ा साहब के हवास बेजानः थे। भइया से हिसाब करने में इनको मदद मिली इस दरम्यान में इधर उधर की बातें भी होती जाती थीं। क्योंकि उन लोगों को तो यह मालूम न था कि यह बेचारे किस आफ़त में मुब्तिला

१ करारा।

हैं, नहीं तो शायद जल्दी करते। यह एक नए आदमी शहर के रहने वाले वहाँ जा के फँसे थे। मामूली बातें यह कि आप का मकान कहाँ है? इस तरफ़ क्यों आए थे? इनसे पूछना ज़रूर थीं। सबसे ज़्यादा माधो भइया को इनके हाल पर तवज्जुह थी क्योंकि माधो भइया अंगरेज़ी पढ़ते थे और इनके तर्ज़ तक़रीर से मालूम हो गया था कि यह भी अंगरेज़ी जानते हैं। शायद अस्नाए कलाम[1] में यह भी पूछा गया था कि आपने कहाँ तक अंगरेज़ी पढ़ी है और आपकी ज़बान से बेसाख्ता निकल गया हो कि मैं इन्ट्रेंस पास हूं। माधो भइया अभी मिडिल क्लास के दो दर्जे नीचे थे। फिर इनका फ़ारसी ख़त भी बहुत ही साफ़ और माधो भइया आज भी बदख़ती के लिये क्लास में दो नम्बर उतार दिये गये थे। इन वजूह से माधो भइया के दिल में इनकी इज़्ज़त का ख़याल समा गया था।

इन्ट्रेंस पास का नाम सुनके बल्देव मिस्त्री भी चौंक पड़े थे इसलिए कि जब से माधो को स्कूल में पढ़ने भेजा था, मिडिल और इन्ट्रेंस यह दोनों लफ़्ज़ें इतनी मरतबा सुनी थीं कि अब उनका भूलना मुमकिन न था। बहुत दिन तक यह मिडिल स्कूल को आला दर्जः समझा किये। लेकिन जब से रेल के दफ़्तर में परशादी बाबू दस रुपया महीने पर नौकर हुये मिडिल पास की इज़्ज़त उनकी निगाह में कम हो गई। मगर कहीं सुन लिया था कि बड़े बाबू जो लोको आफ़िस में नौकर हैं, वह इन्ट्रेंस पास हैं। मास्टर जानकी परशाद जो माधो को घर पर अंगरेज़ी पढ़ाते थे वह वकील हो गये। अब लीजिये वह भी क्या बुरे रहे। गनपत बढ़ई का लड़का छोटेलाल इंट्रेंस पास करके रुड़की चला गया था। वह अब ओवरसियर है। ग़रज़ कि इन ख़यालात से इंट्रेंस की इज़्ज़त इनके दिल में बहुत कुछ थी। सारी उम्मीदें माधो के इंट्रेंस पास करने पर मौक़ूफ़ थीं। इंट्रेंस के दर्जे से उनको इस क़द्र हुस्नेज़न[2] था कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन की परेशानहाली उनके चश्मे से नज़र ही न आ सकती थी। जब से उनको देखा था और यह सुना था कि यह इंट्रेंस पास हैं, दिल में कहते थे—परमेशर वह दिन करे कि माधो भइया भी इंट्रेंस पास करलें। मगर अभी वह दिन दूर है। चार पाँच बरस बाक़ी हैं। अब कोई घर पर पढ़ाने वाला भी नहीं। दिल में ऐसे ही कुछ ख़यालात थे कि एक ही मरतबा मिर्ज़ा आबिदहुसैन से पूछा।

बल्देव—आप का दौलतखाना कहाँ है?

आबिदहुसैन—चौक के पास।

बल्देव—ओहो। आप बहुत दूर रहते हैं।

आबिदहुसैन—(इस सवाल के रुख़ से कुछ अपने मतलब की फ़ाल[3] लिया चाहते थे) क्यों?

---

१ बातचीत के समय २ अच्छी धारणा ३ शकुन।

बल्देव—कुछ नहीं। अगर कहीं पास मकान होता तो माधो भइया घंटा दो घंटा आप से पढ़ लिया करते।

आबिदहुसैन—फिर दूर मकान है तो क्या है। मैं तो इस तरफ़ आया ही करता हूँ।

बल्देव—क्यों ?

आबिदहुसैन—यूं ही नौकरी की तलाश में।

बल्देव—अच्छा तो आप माधो को पढ़ा दिया करेंगे ?

आबिदहुसैन—बड़ी ख़ुशी से।

बल्देव—मैं जो मास्टर जानकीपरशाद को देता था, आपको भी दूंगा।

आबिदहुसैन—उनको क्या देते थे ?

बल्देव—पाँच रुपया महीना।

आबिदहुसैन—बेहतर है। मैं पढ़ा दिया करूँगा।

माधो—तो फिर कब से आइयेगा ?

आबिदहुसैन—जब से कहो।

माधो—आठ दिन हमारे इम्तहान को रह गये हैं। अगर कल ही से आइये तो और अच्छा है।

आबिदहुसैन—कल ही से आऊँगा। किस वक़्त आया करूँ ?

माधो—सुबह को आइये या शाम को। यही दो वक़्त हैं।

आबिदहुसैन—अच्छा तो मैं सुबह को सात बजे पहुंच जाया करूँगा।

ख़त तमाम हो चुका था। बातों में यह मतलब भी निकल आया। अब वहाँ ठहरने की कोई वज्ह न थी। जो शख़्स इनको साथ लाया था, उसने बल्देव से इक्के के लिये कहा। मालूम हुआ है कि इक्केवाला कहीं सवारी ले गया है। इसलिये उसने एक चवन्नी निकाल के मिर्ज़ा आबिदहुसैन के हाथ पर धर दी। पहले तो उन्होंने इन्कार किया इस ख़याल से कि बल्देव की निगाह में ज़लील न हो जाऊँ। मगर बल्देव ने कहा—मियाँ साहब ले लीजिये, हुसैनगंज से इक्का कर लीजियेगा। रात ज़्यादः हो गई है और फिर आप सवेरे आने को भी कहते हैं। जल्दी से घर पहुंच जाइयेगा। मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने चवन्नी ले के जेब में रखी और कारख़ाने से रवाना हुये।

आबिदहुसैन की हालत सख़्त मायूसी की थी। इतना सहारा जो मिला जान में जान आई। अब घर की तरफ़ जल्द से जल्द क़दम उठने लगे। रास्ते में इक्के बहुत से मिले मगर घर में बीवी बच्चों को उस हालत में छोड़ के आये थे ख़याल किया कि अब अगर इक्का करता हूँ तो कम से कम दो आने फ़ज़ूल ख़र्च हो जायँगे। चार आने में दो

वक़्त रोटी चल सकती है। थोड़ा जब्र और गवारा करो, पा-प्यादह पहुंच ही जाओगे। बारे[1] जिस तरह हो सका घर पहुंचे।

रात के दस बज गये थे। दरवाज़े पर आकर कुण्डी खड़खड़ाई। बीवी ने उठ के दरवाज़ा खोला। देखा घर में चिराग़ जल रहा है। हैरत हुइ कि तेल कहाँ से आया और यह हैरत और भी ज़्यादः हुई जब बीवी ने उनके बैठने के साथ ही दस्तरख़ान लाके बिछाया, खाना निकाल के आगे रखा। उन्हें हाथ धोने को पानी दिया, ख़ुद हाथ धोया खाने को आगे बैठ गईं।

आबिद—हय, यह सब कहाँ से आया ?

बीवी—वही टोपी आज बिकी ना ?

आबिद—कमाल किया। टोपी तैयार कर ली और बिकवा भी ली।

बीवी—तो फिर क्या करती ?

आबिद—बड़ा काम किया। बच्चे खा चुके ?

बीवी—बच्चों को माशा अल्लाह दूसरा फेरा है। अभी तो खा पी के सोये हैं।

आबिद—और तुमने कुछ नहीं खाया ?

बीवी—अब तुम्हें मेरी क्या फ़िकर पड़ गई। लो खाओ।

आबिद—वाह क्या मैं जानता नहीं। तुम यूं ही बैठी होगी। क्या बुरी आदत है।

बीवी—और तुम्हें आज यह देर कहाँ लगी ? रोज़ तो सवेरे आ जाया करते थे।

आबिदहुसैन ने अपना तमाम वाक़िअः सिरे से आख़िर तक मुफ़स्सिल सुनाया। बीवी सुनके बाग़ बाग़[2] हो गईं। मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी उन बीवियों में न थीं जो ख्वाहमख़्वाह अपने शौहरों की शिकायत किया करती हैं। इस मौक़े पर उन्होंने मियाँ की जो दिलजोई[3] और तस्कीन[4] की वह क़ाबिल हज़ार आफ़रीं[5] है।

बीवी—ख़ुदा ने मेरे बच्चों पर रहम किया।

आबिद—हाँ सहारा तो हो गया है। मगर पाँच रुपये में§ क्या होगा ?

बीवी—ख़ुदा का शुक्र करो नमक का सहारा बहुत होता है। पाँच रुपये बहुत हैं। ख़ुदा ने चाहा तो अब फ़ाक़: न होगा। मेरी टोपी भी अब रुपये को जाने लगी है। महीने में चार टोपी अगर तैयार होंगी तो चार रुपये कहीं नहीं गये हैं। तुम अपना दिल मज़बूत रखो।

---

१ आख़िरकार २ अति आनन्दित ३ मनभराव ४ ढारस ५ शाबाशी की बात।

§ उस ज़माने में पाँच रुपये बड़ी चीज़ होते थे। आज के पचास रुपये भी कम हैं।

आबिद—मेरा दिल मज़बूत है।

दोनों मियाँ बीवी ने खाना खाया। ख़ुदा का शुक्र किया। नमाज़ें पढ़ीं, सो रहे।

दूसरे दिन सुबह को सात बजते बजते मिर्ज़ा आबिदहुसैन बल्देव मिस्त्री के कारख़ाने में पहुंच गये थे। माधो बहुत ही शौक़ीन लड़का था। वह सुबह छै बजे ही से किताबें खोलकर पढ़ने बैठ गया था। आबिदहुसैन ने पहले अंगरेज़ी किताब का सबक़ पढ़ाया। हर एक मुश्किल लफ़्ज़ के हिज्जे और मायने पूछे। फिर इमला लिखवाया। उसमें सिर्फ़ एक ग़लती निकली, उसे दुरुस्त कर दिया। उसके बाद ग्रामर (सर्फ़ व नहो) का सबक़ हुआ। अब उर्दू की बारी आई। माधो उर्दू में बहुत ही कमज़ोर था। हर्फ़ों का तलफ़्फ़ुज़ सही नहीं बताया गया था। शीन क़ाफ़ तक दुरुस्त न था, उसमें आबिद-हुसैन को बड़ी मिहनत करना पड़ी। फिर हिसाब शुरू हुए। कल दर्जे में जो सवालात माधो को दिए गए थे वह उसने रात ही को लगा रखे थे। आबिदहुसैन ने क़ायदा बड़े ग़ौर से जाँचकर जहाँ जहाँ ख़ामी थी उसे दुरुस्त कर दिया। माधो के अंगरेज़ी और फ़ारसी दोनो ख़त ठीक न थे। और न उसे इस तरफ़ ज़्यादः तवज्जुः थी मगर आबिद-हुसैन ने दो कापियाँ उसी दिन बनवाईं और अपने सामने लिखवाना शुरू किया। जो लोग इससे पहले माधो को पढ़ाते थे वह बहुत सा वक़्त बातें करने में सर्फ़ किया करते थे। माधो को इसकी आदत पड़ी हुई थी मगर आबिदहुसैन बातें करना जानते ही न थे। इब्तिदाए-उम्र[1] से उन्हें मिहनत की आदत थी। माँ बाप ने ऐसी सुहबतों में बैठने ही न दिया जिससे मज़ाक़ का मफ़्हूम उनके ज़ेहन में समा जाता जिससे इनको यह मालूम हो जाता कि फ़ज़ूल गप्पें उड़ाना भी हिफ़्ज़ाने सेहत[2] के उसूल में दाख़िल है। लखनऊ के अक्सर साहबज़ादों को ग़ुफ़रान शबाब[3] से इश्क़बाज़ी का लपका पड़ जाता है और इसके साथ ही शेरो सुख़न[4] की तरफ़ तबियत माएल[5] होती है। इस बहाने से अक्सर नाजाएज़ तख़य्युलात[6] को उम्दः अल्फ़ाज़ के पैराए में अदा करने का अच्छा मौक़ा मिल जाता है। इन बलाओं से ख़ुदा ने इनको महफ़ूज़ रखा था। अभी पूरे जवान भी न होने पाए थे कि उनके वालिद मरहूम ने अज़राहे दूरअन्देशी इनकी शादी करदी। शादी के दूसरे ही साल इनके औलाद हुई। इसके चन्द ही रोज़ बाद ख़ानादारी का तमाम बार उनकी गरदन पर पड़ गया जिससे आज तक सर उठाने की मोहलत न मिली। न उन्हें यारों के साथ रातों को फिरने का इत्तफ़ाक़ हुआ था, न ऊँचे कोठों तक उनकी नीची नज़रें उठने पाई थीं। न रक़्सो सुरोद[7] की महफ़िलों में उन्हें बैठने का मौक़ा मिला था। ग़रज़ कि यह उस कूचे से बिल्कुल ही नाबलद[8] थे।

---

१ आरंभिक अवस्था से ही २ स्वास्थ्य रक्षा ३ तरुणाई की कृपा से ४ शेरबाज़ी ५ अनुरक्त ६ ख़यालों की उड़ान ७ नाचगाना ८ अनजान।

अलक़िस्स: माधो से उन्होंने पूरे दो घंटे मिहनत ली और ख़ुद भी दम न लिया। इस असना में बल्देव कई मरतबा किसी न किसी बहाने से उस खपरैल में आ आ के उनका पढ़ाना देख गया। यह अभी थोड़ी देर और पढ़ाते मगर अब नौ बज गए थे। माधो के स्कूल जाने का वक़्त था। यह अपनी जगह से उठे ही थे कि बल्देव मिस्त्री ने उन्हें इशारे से बुलाया और एक फ़र्द हिसाब की निकाल के पढ़वाई। उसमें कारीगरों के चिट्ठे की तफ़्सील थी। शंकर लोहार और मातादीन बढ़ई के हिसाब में कुछ गुंजलक थी उसे साफ़ करा लिया। इनका नाम भी मय शरह तनख़्वाह उसी फ़र्द में लिखवा दिया। अब यह घर रवाना हुए।

बल्देव के कारख़ाने में और तो कोई ऐसी ख़ास बात न थी जो इनके दिल में कोई ख़ास असर करती मगर भारी हथौड़ों की आवाज़ें और बड़ी धौंकनियों की झंकारें अभी तक उनके कानों में गूंज रही थीं। लोहे का सुर्ख़ होकर भट्ठी से निकलना, निहाई पर रखा जाना और उस पर तवाना हाथों की चोटों से शरारों[1] का उड़ना तख़य्युल[2] के परदों पर मुनक़्क़श[3] हो गया था। मिहनत और जफ़ाकशी की मुजस्सिम सूरतें आखों में फिर रही थीं। ज़रूरत और मुफ़लिसी, अहले हिरफ़:[4] के ज़लील और कमरुतबा होने के बेहूद: ऐतक़ाद को जो दौलत, आरामतलबी और तन आसानी के मनहूस असर से दिलों में मुद्दत हाएदराज़ से रासिख़[5] हो गया है, अब इनके दिल से हटा रही थीं। बल्देव मिस्त्री के कारख़ाने में किसी कारीगर का रोज़ान: छै आने से कम न था। उन्होंने अपने रोज़ीन: का हिसाब लगाया। सिर्फ़ ढाई आने रोज़ से कुछ कौड़ियाँ ऊपर हुई। इस हिसाब से भी सबसे कमतर ठहरे। यह ख़याल दिल में आया ही था कि हस्ब-नसब[6] के तवह्हुमात[7] ने आ के घेरा और इसके साथ ही एक क़िस्म का ग़रूर दिल में चक्कर खाने ही को था कि उन्होंने उसे एक शैतानी वसवसा[8] तसव्वुर करके लाहौल[9] पढ़ी। दादा जान रिसालदार थे; लेकिन ख़ैरियत से वह रिसाला ग़दर से पहले ही शिकस्त हो गया था। नाना जान नवाबज़ादे थे मगर ख़ान्दानी पेन्शन उन्हीं के हीने हयात[10] थी, अब उसका सुल्स कैसा, एक हब्बा भी हमें नहीं मिलता। दादी अम्मा के पास चालीस लौंडी गुलाम थे मगर बीवी अपने हाथ से चूल्हा फूंकती हैं। बड़े मामू ख़ुदा बख़्शे फ़ीलनशीन थे मगर मैं जूतियाँ चटख़ाता फिरता हूँ। पाँच रुपये की नौकरी ऐसी चीज़ है कि उसके लिए सवेरे उठके महमूदनगर से शहर के उस पार कोई तीन मील के फ़ासले पा प्याद: जाता हूँ क़रीब दस बजे के घर जाता हूँ।

---

१ चिनगारियों २ कल्पना ३ अंकित ४ पेशावर लोगों ५ अटल ६ कुलीनता ७ भ्रान्त विचारों ८ प्रेरणा ९ लानत १० जीवनपर्यन्त।

फ़ाक़: में न आला नसबी[१] काम आई न वाला हसबी[२]। दो हरफ़ जो पढ़ लिए थे उससे बल्देव तक रसाई हुई और पाँच रुपये का सहारा हो गया। आइन्दा भी जो कुछ उम्मीद है उसी से है। इन मोहमल[३] ख़यालात से कुछ काम न चलेगा। बेहतर है कि उन्हें यहीं से रुख़सत करो और गंगा पार की तरफ़ का रास्ता बतादो।

इसी असन: में यह ख़याल आया कि आख़िर घर तो जाते हो, हज़रतगंज की तरफ़ से होकर निकल चलो। आडिट आफ़िस में कल अर्ज़ी दी थी। बड़े बाबू ने तो साफ़ कह दिया था कि कोई जगह ख़ाली नहीं। मगर साहब के मुलाहिज़: के लिए अर्ज़ी रख ली थी। शायद साहब ने कोई हुक्म मुआफ़िक़ चढ़ाया हो। ज़ेहन ने अभी इस बात का फ़ैसला न किया था कि चलना चाहिए या नहीं और न अभी वह मुक़ाम आया था जहाँ से हज़रतगंज को रास्ता मुड़ता है। अब यह नहर के पुल पर थे। यहाँ से चन्द ही क़दम आगे बढ़े होंगे कि एक कबाड़िए की दूकान पर नज़र जा पड़ी। यहाँ बहुत सी पुरानी किताबें तले ऊपर रखी थीं। जी में आया इन किताबों में देखूँ, शायद कोई मतलब की हो। यह उमंग दिल में इसलिए पैदा हुई थी कि रात वाली चवन्नी अभी तक जेब में पड़ी हुई थी। फ़ौरन ही इफ़्लास[४] ने अपनी मुहीब[५] सूरत दिखाके चश्मा-नुमाई की[६]। उन्होंने उधर से मुँह फेर लिया। आगे बढ़े। अब वह मुक़ाम आ गया जहाँ से हज़रतगंज को सड़क जाती है। यहाँ उन्हें चन्द लम्हे ठहरना पड़ा। फिर यह सोंच के कि अभी सवेरा है, आडीटर साहब ग्यारह बजे दफ़्तर में आते हैं। इस वक़्त वहाँ जाके क्या करोगे। ऐसा है तो कभी चले जाना। घर की तरफ़ का रास्ता लो।

इसके बाद रास्ते में कोई ऐसा वाक़िय: नहीं हुआ जिसका बयान उनके ज़ेहनी तग़य्युरात[७] को समझाने के लिए ज़रूरी हो। सिर्फ़ उन्होंने एक बात देखी और ख़ूब समझे कि सदर बाज़ार से लेकर अमीनाबाद तक रास्ते में जो लोग मिले उनके चेहरों से एक ख़ास क़िस्म की संजीदगी और उज़्र[८] के आसार पाए जाते थे। उनके लिबास में एक तौर की बेपरवाई और सादगी नुमायाँ थी। उनकी रफ़्तार में वह सिफ़त पाई जाती थी जिसे सुरअत[९] कहते हैं। इन सब अलामतों से ऐसा मालूम होता था कि वह कारोबारी आदमी हैं। इन मुक़ामों में इनको फ़क़ीर बहुत कम मिले और न कोई मुफ़लिस सफ़ेदपोश नज़र आया। बख़िलाफ़ इसके अमीनाबाद से होके जब मौलवीगंज में पहुँचे हैं तो उनको बहुत से आदमी ऐसे मिले जिनके हाथ में बटेरों की काबक है। कोई गन्ना छीलता चला जाता है, कोई साहब रास्ते में खड़े तानें उड़ा रहे हैं, कोई किसी पर फब्ती उड़ा रहा है। दो

---

१ कुलीनता २ प्रतिष्ठा ३ व्यर्थ ४ कंगाली ५ विकराल ६ आँखें तरेरीं ७ दमाग़ी चढ़ाव-उतार ८ विवशता ९ फ़ुर्ती।

चार किसी बाज़ारी औरत से सरे राह मज़ाक़ कर रहे हैं। दो एक बेफ़िकरे किसी नेकबख़्त औरत को नहीं मालूम कहाँ से घेरे चले आते हैं। वह बेचारी डर के मारे घूंघट से मुंह छुपाए लेती है। जल्द जल्द क़दम उठाए चली जाती है। यह हैं कि आवाज़े कस रहे हैं। कहीं दो बेतकल्लुफ़ दोस्तों में गाली गलौज हो रही है। कहीं दो आदमियों में मारपीट हो रही है। बहुत से आदमी जमा हो गए हैं। कहीं बन्दर का नाच हो रहा है। रास्ते में इस क़द्र भीड़ है कि रास्ता चलना मुश्किल है। ग़रज़ कि अक्सर आदमी ऐसे ही थे जिनके अत्वार[१] से ऐसा मालूम होता था कि उनको दुनिया व माफ़ीहा[२] में कोई काम नहीं। महज़ निकम्मे हैं। सिवाए तमस्ख़ुर[३] और तज़ईअ़ औक़ात[४] उन्हें कोई बात की फ़िक्र नहीं। बहुत से ऐसे मिले जिनकी सूरत ही से ऐसा मालूम होता था कि उन पर ग़म का आसमान टूट पड़ा है। ख़ुदा जाने कै फ़ाक़े कड़ाके के गुज़र चुके हैं। इन गली कूचों में फ़क़ीर भी बहुत से मिले मगर रकाबगंज से यहियागंज के फाटक तक जहाँ दो तरफ़ा लोहियों, कसेरों और ठठेरों की दूकानों में भी एक क़िस्म की चहल पहल नज़र आई। इस बाज़ार में बेफ़िकरे कम नज़र पड़े। यहियागंज के फाटक से नख़ास तक और वहाँ से उनके मकान तक शहर के बाँके तिरछे बदवज़अ़[५] लोगों का तो गोया रमना[६] है। यह तमाशा देखते भालते अपने घर पहुंचे। खाना पक्का पकाया रखा था। बच्चे खेल रहे थे। बीवी टोपी काढ़ रही थीं। इनके जाने के साथ ही दस्तरख़ान बिछा। मियाँ-बीवी, लड़का, लड़की सबने एक साथ मिल के खाना खाया। अब वक़्त क़रीब ग्यारह बजे के था। इस वक़्त से दूसरे दिन सुबह को छै बजे तक कोई काम और न था। हिसाब से उन्नीस घंटे हुए। अगर उनमें से सात घंटे रात के सोने का हक़ निकाल डालें तो भी ग्यारह घंटे बचते हैं। निकम्मे और वक़्त फ़ज़ूल ज़ायः करने वाले इसमें बहुत सा वक़्त दिन को सो के काट देते हैं, मसलन ग्यारह बजे से तीन बजे तक। फिर तीन बजे से पाँच बजे तक नहाने धोने, बालों में कंघी करने, तेल डालने, माँग पट्टियाँ दुरुस्त करने, कपड़े बदलने में बख़ूबी सर्फ़ हो सकते थे। इसके बाद चौक की सैर को निकल जाते। इधर उधर राही तबाही में पड़े फिरते। इस तरह सात बज जाते। अब किसी दोस्त की मुलाक़ात का वक़्त आ जाता। वहाँ सिर्फ़ बातें करने में या किसी और शुग़ल मसलन गंजीफ़ः, चौसर, शतरंज वग़ैरह में तीन चार घन्टे बड़े लुत्फ़ के साथ बसर हो सकते थे। हमारे दोस्त मिर्ज़ा आबिदहुसैन ऐसे लोगों में न थे। इनको अपने अहलो अयाल[७] के आज़ूक़ः[८] की फ़िकर थी। तक़दीर की बेजा शिकायत न इन्होंने किसी किताब में पढ़ी थी और न उनका तख़य्युल[९] उसे इख़्तराअ़[१०] कर सकता

१ ढंग २ जो कुछ उसमें है ३ मसख़रापन ४ समय की बरबादी ५ अशोभित ६ मैदान ७ परिवार ८ रोज़ी ९ विचार १० आविष्कार, गढ़ना।

था। इसलिए कि यह किसी फ़लकज़दः[१] शायर की सोहबत में कभी नहीं बैठे थे और न इन्होंने किसी नजूमी रम्माल से अपने दिन दिखवाए थे। वक़्त को किसी मुफ़ीद काम में सर्फ़ करने की धुन उनके दिल में समाई थी। उन्होंने किसी किताब में पढ़ लिया था कि वक़्त का एक लमहा सोने के रेज़ों की तरह क़ीमती है। इनको उन रेज़ों के जमा करने और उससे सोने की थकिया बनाने की फ़िकर थी। मगर उसकी तरकीब उन्हें नहीं आती थी। यह मुहन्दिस[२] की तरह इस नुस्ख़े की फ़िकर में थे। मगर अभी तक कोई उस्तादे कामिल न मिला था। अब मजबूरी ने सहारा दिया था कि हम यह नुस्ख़ा बतादेंगे।

खाना खाने के चन्द मिनट बाद उन्होंने अपनी तमाम किताबें जो इंट्रेंस और नीचे दरजों में पढ़ी थीं, उन्हें निकाला। उनमें से सिवाए तीन किताबों के कोई ऐसी किताब न थी जो सिरे से आख़ीर तक उनकी कई कई मरतबा की पढ़ी हुई न हो। उन किताबों में से एक तो अलजबरा था जो सर्फ़ मुसावात[३] दरजा अव्वल तक पढ़ाया गया था। और निस्फ़ से ज़्यादा अभी पढ़ने को बाक़ी था। दूसरी यू-क्लिड (तहरीर अक़्लीदुस) जिसके सिर्फ़ औवल चार मक़ाले[४] पढ़े थे। पाँचवाँ, छठा और ग्यारहवाँ, बारहवाँ छूट गया था। तीसरे मेन्सुरेशन। इसमें सिर्फ़ सुतूह[५] का बयान देखा था। मुजस्सिमात[६] से बिल्कुल ही नावाक़िफ़ थे। यह किताब भी निस्फ़ से ज़्यादः पढ़ने को बाक़ी थी। इल्म रियाज़ी[७] से इनको ख़ास शौक़ था। रियाज़ी के घन्टे में अक्सर इन्हीं के नम्बर बढ़ जाते थे। इनसे उतर के देवीपरशाद था। उसने इंट्रेंस पास करके रुड़की के दाख़िले का इम्तहान दिया और उसमें कामयाब हुआ। अब ओवरसियर क्लास में पढ़ता है। डेढ़ बरस के बाद पचहत्तर रुपये का मुलाज़िम हो जायगा।

इन किताबों को पहले तो इन्होंने हसरत की निगाह से देखा, इस ख़याल से कि इनके पढ़ने का मौक़ा हाथ से निकल गया था। साथ के तालिबइल्म अक्सर एफ़-ए क्लास में पढ़ते हैं। अफ़सोस! अगर मुमकिन होता तो हम भी पढ़ते। वक़्त तो है। माधो को पढ़ा के उधर ही कालेज चले जाया करते। मगर न फ़ीस अदा करने का मक़दूर है न किताबें ख़रीद सकते हैं। और अगर यह भी होता तो अब छै महीने से ज़्यादा ज़माना गुज़र गया। साथ वाले कहाँ से कहाँ पहुंचे होंगे। अब क्या हो सकता है। रुड़की कालेज में भी दाख़िला नामुमकिन है। अगर इम्तहान के लिए तैयारी की और पास भी हो गए मगर वज़ीफ़ा न हुआ तो और सदमा होगा। दूसरे उसके इम्तहान के लिए किसी क़द्र

---

१ दुर्दशाग्रस्त　२ गणितज्ञ　३ इक्वेशन　४ साध्य　५ समतल　६ शक्लों　७ गणितशास्त्र।

उपहार

....

....

....

....

....

विषय-सूची

विषय-सूची	पृष्ठ
जपुजी	१–३७
वाहगुरू	३८–३९
सदाए इश्क़	४०
सुखमनी साहिब	४१–१६३
अरदास	१६४–१६५

निवेदन

प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक सन्त की बानी।
अखिल राष्ट्र में घर-घर है पहुँचानी॥

हिन्दी, उर्दू (अरबी-फ़ारसी सहित), संस्कृत, बंगला, असमी, उड़िया, कश्मीरी, मराठी, गुरुमुखी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, सिंधी आदि भाषाओं तथा अनेक बोलियों के सत्साहित्य को, देवनागरी लिपि में धारावाहिक सानुवाद लिप्यन्तरण द्वारा, भारत के जन-जन तक पहुँचाना, अधिकाधिक भाषाओं का शिक्षण, प्रसारण और ज्ञान प्राप्त कराते हुये इनको एक सूत्र में पिरोहना—यही 'भुवन वाणी' संस्था का पावन उद्देश्य है। इससे न केवल हिन्दी-अहिन्दी, प्रत्युत प्रत्येक भाषा का प्रचार-प्रसार राष्ट्र के कोने-कोने में व्याप्त होगा।

इसी कार्यक्रम के अधीन, गुरुमुखी में नित्य पठनीय, श्री गुरु नानकदेव महाराज की अमर वाणी "श्री जपुजी" तथा श्री गुरु अरजुन देव महाराज की भक्ति और ज्ञान से ओतप्रोत अद्वितीय रचना "सुखमनी साहब" का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण मर्मज्ञ पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। गुरुमुखी मूल पाठ को हिन्दी अक्षरों में देते हुये श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के सफल उर्दू पद्यानुवादक ख़ानबहादुर ख़्वाजः दिलमुहम्मद साहब, एम. ए., सब रजिस्ट्रार लाहौर, फ़ेलो पंजाब यूनीवर्सिटी, ट्रस्टी लाहौर इ० ट्रस्ट तथा रिटायर्ड प्रिंसिपल, इस्लामिया कालेज, लाहौर द्वारा प्रामाणिक और सुमधुर उर्दू काव्य को भी हिन्दी में लिप्यन्तरित किया गया है। अंग्रेज़ी शासनकाल में पंजाब सरकार ने इन उर्दू अनुवादों को सम्मानित और पुरस्कृत किया था। पंजाब में जनता मुग्ध होकर ख़्वाजः साहब के इस अनुवाद का नित्य झूम-झूम कर पाठ करती है। आज वह अमर वाणी देवनागरी लिपि के माध्यम से सारे राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत हो रही है। इन अमूल्य जप-स्तोत्रों के संबंध में ख़्वाजः साहब की लेखनी से ही प्रवाहित पावन विचारधारा का आनन्द लीजिये:—

जपुजी

"जपुजी वह मुक़द्दस[1] इर्फ़ानी[2] और रूहानी[3] पाक कलाम है जिसे लाखों इंसान सुबह के सुहाने वक़्त में अपने ख़ालिक़[4] के हुज़ूर में तवज्जुह[5] और शौक़ से पढ़ते हैं और उसके सामने अपने अज्ज़[6] का इज़हार करके अब्द[7] और माबूद[8] का रिश्तः उस्तुवार[9] करते हैं। यह मुनाजात[10] पंजाब के मुस्लेह आज़म[11] ख़ुदारसीदा[12] बुज़ुर्ग बाबा गुरु नानक साहब की मुबारक ज़बान से निकली है। उनके अक़ीदतमन्द[13] इस मुक़द्दस[1] नज़्म के एक-एक लफ़्ज़ को हिर्ज़ेजाँ[14] समझते हैं और उस दुवाए सहरी[15] दुरूद[16] को हर दो जहान में अपने लिए मूजिब नजात[17] मानते हैं।"

"मैंने इस पाक कलाम को आसान ज़बान और मुतरन्निम-बहर[18] में नज़्म करके असल और तर्जुमा साथ-साथ दर्ज कर दिये हैं ताकि पढ़ते वक़्त सुहूलियत हो और मतलब फ़ौरन ज़ेहन-नशीन[19] हो जाये। ग़रज़ यह है कि इस मुक़द्दस नज़्म और प्यारे कलाम को सिख साहबान के अलावः दीगर उर्दू-दाँ हज़रात हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई वग़ैरः भी पढ़ें, और इससे मुस्तफ़ीद[20] हों। इंसान का सबसे पहला फ़र्ज़ ख़ुदाए तआ़ला को सच्चा यानी अज़ली[21] अबदी[22] हस्ती बरहक़[23] मानना उसको माबूद[8] और ख़ुद को उसका बन्दा समझना है। बाबा गुरु नानक जी के इर्शादात[24] का तर्जुमः मुलाहज़ः हो।"

सुखमनी साहब

"सुखमनी साहब वह मुक़द्दस[1] नज़्म है जिसे सिख मत के पाँचवें रहनुमा[25] श्री गुरु अर्जुनदेव साहब ने तस्नीफ़ किया। यह नज़्म गुरु ग्रंथ साहब में शामिल है। गुरु अर्जुनदेव सन् १५६३ ई० में पैदा हुए और सन् १६०६ ई० में वासिल-बहक़[26] हुए। यह नज़्म एक ख़ामोश जंगल

---

१ पवित्र २ ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी ३ आत्मिक ४ सिरजनहार ५ ध्यान, लगन ६ नम्रता ७ भक्त ८ भजनीय (परमात्मा) ९ दृढ़, स्थायी १० स्तोत्र ११ सुधारकों में शिरोमणि १२ ईश्वरप्राप्त १३ अनुयायी १४ जीवनकवच १५ भजनप्रभाती १६ ईश्वर-प्रार्थना १७ मुक्तिद्वार १८ संगीतलहरी १९ याद, स्मरण २० लाभान्वित २१ अनादि २२ नित्य २३ वास्तविक, सत्यस्वरूप २४ आदेशों २५ पथप्रदर्शक २६ ब्रह्मलीन।

में 'रामसर' तालाब के पास लिखी। यह तालाब अमृतसर के जुनूब[1] में वाक़्य है। हज़ारों सिख और ग़ैर सिख साहबान इस मुक़द्दस नज़्म को सुबह के वक़्त तिलावत (पाठ) करके अपनी लगन ख़ुदा से लगाकर दिल का सुख और रूह का आनन्द हासिल करते हैं।"

"सुखमनी साहब के अलफ़ाज़ एक ऐसे आरिफ़-हक़ीक़ी[2] के जज़बात[3] का मरक़्क़अ[4] हैं जिसे हर तरफ़ ख़ुदा ही की ज़ात और उसी का जमाल[5] और जलाल[6] नज़र आता है। यह ऐसे दिल की आवाज़ है जो भक्ति और ज्ञान से भरपूर, प्रेम और मुहब्बत में सरशार,[7] अपने मालिक अपने महबूब[8] की याद में सरमस्त[9] है और जिसे ख़ुदा के सिवा कोई और लगन नहीं।"

"सुखमनी साहब वह मन (मणि) यानी हीरा है जिसकी बरकत से सुख हासिल होता है। यह वह नज़्म है जो मन को सुख देती है। इसको पढ़ने से इंसान ख़ुदा से लौ लगाता और दुनिया के मक्र व फ़रेब और फ़िक्र व तरद्दुद से नजात हासिल करता है।"

"तर्जुमा आसान उर्दू यानी हिन्दुस्तानी ज़बान में नज़्म किया गया है। ताकि तमाम ख़ुदापरस्त हिन्दुस्तान के बाशिन्दे ख़्वाह वह किसी मज़हब के पैरो हों इसका मफ़हूम[10] समझ कर इसकी तिलावत (पाठ) कर सकें।"

एक मुस्लिम मोमिन, एक सचमुच धर्मपरायण विद्वान की लेखनी से "श्री जपुजी" और "सुखमनी साहब" के सम्बन्ध में उपरोक्त इस महिमा-गान के बाद अब पाठकों को कुछ लिखने-बताने के लिए शेष नहीं रहता। आशा है मनुष्य-रचित इन साम्प्रदायिक दीवारों को लांघ कर राष्ट्र के सभी भाषाभाषी जन गुरु नानकदेव जैसे महान पथप्रदर्शक के पुण्य-कथनों को पढ़कर जीवन-पथ सफल करेंगे। —लिप्यन्तरणकार

---

१ दक्षिण २ ब्रह्मवेत्ता ३ भावनाओं ४ संग्रह ५ छबि, सौन्दर्य ६ तेज ७ परिपूर्ण ८ प्रियतम (परमात्मा) ९ मगन, विभोर १० आशय।

जपुजी (सटीक)

(ख़्वाजा दिल मुहम्मद द्वारा मधुर अनुवाद सहित)

मंगलाचरण

मंत्र

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकालमूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

१एक ओंकार खुदा है वाहिद, सच्चा जिसका नाम ।
कर्ता-धर्ता दुनिया का, बेडर बे-लाग मुदाम[१] ॥
मौत से बाला, पाक जनम से, क़ायम अपने आप ।
अपने गुरु की रहमत से, तू नाम उसी का जाप ॥

जपु

आदि सचु, जुगादि सचु ।
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥

सच्चा रोज अज़ल[२] से पहले, सच्चा रोज़ अज़ल भी वह ।
सच्चा है वह आज भी 'नानक', सच्चा होगा कल भी वह ॥

पौड़ी १

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार ।
चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ।

१ हमेशा २ रचनाकाल, (सत्यस्वरूप १ ओंकार अनादि, अनन्त और भूत-भविष्य-वर्तमान हमेशा स्थित है) ।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥

सोच किए कब सोच में आए
सोच जो लाखों बार करें
चुप रहने से मन कब चुप हो
चुपके ध्यान हज़ार करें
भूखे रहकर भूख न जाए
बाँध के गो, कुल दुनिया लाएँ
लाख-हज़ार करें चतुराई
एक भी साथ न लेकर जाएँ
झूठ का पर्दा चाक हो क्योंकर
सच वाले बन जाएँ हम
हुक्म रज़ा[1] पर चलना 'नानक'
साथ यह लिक्खा लाएँ हम ॥१॥

पौड़ी २

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ।
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ २ ॥

हुक्म से बन बन जाएँ शकलें
हुक्म के भेद न खोले जाएँ
हुक्म से तन में रूहें आएँ
हुक्म से शान बड़ाई पाएँ
हुक्म से इज़्ज़त हुक्म से दौलत
हुक्म का लिक्खा सुख-दुख पाएँ
हुक्म से इक पर बख़शीश हो इक
हुक्म से चक्कर खाते जाएँ
हुक्म ख़ुदा में दुनिया सारी
हुक्म से बाहर कोई न जाए
हुक्म ख़ुदा जो समझे 'नानक'
अपनी "हूँ, मैं"[2] आप मिटाए ॥२॥

पौड़ी ३

गावै को ताणु होवै किसै ताणु, गावै को दाति जाणै नीसाणु ।
गावै को गुण वडिआईआ चार, गावै को विदिआ विखमु वीचारु ।
गावै को साजि करे तनु खेह, गावै को जीअ लै फिरि देह ।
गावै को जापै दिसै दूरि, गावै को वेखै हादरा हदूरि ।

---

१ परमेश्वर की प्रसन्नता २ अहंकार भाव ।

कथना कथी न आवै तोटि, कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि।
देदा दे लैदे थकि पाहि, जुगा जुगंतरि खाही खाहि।
हुकमी हुकमु चलाए राहु, नानक विगसै बेपरवाहु ॥३॥

गाए कौन ख़ुदा की क़ुदरत ताब ये किस इंसान में है
गाए कौन ख़ुदा की रहमत माहिर कौन निशान[1] में है
गाए कौन ख़ुदा की अज़मत[2] आलीशान वक़ार[3] उसका
गाए कौन ख़ुदा की हिकमत मुश्किल सोच-विचार उसका
गाए कौन उसे जो तन को ज़ीनत[4] देकर ख़ाक बनाए
गाए कौन उसे जो पैदा करके मारे और जिलाए
गाए कौन उसे जो हमसे पास भी है और दूर भी है
गाए कौन उसे जो हाज़िर[5] नाज़िर[6] पाक हुज़ूर भी है
ख़त्म न होंगी उसकी बातें सारा हाल बयान न हो
वस्फ़[7] करोड़ों गायें करोड़ों पूरी लेकिन शान न हो
लेने वाले थक जाते हैं दाता देता जाता है
जुग जुग में हर खानेवाला उसकी निअ़मत खाता है
हुक्म से अपने हाकिम ने दुनिया को राह दिखाई है
खुद आनन्द रहे वह 'नानक' कैसी बेपरवाई है ॥३॥

पौड़ी ४

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु।
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु॥
अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु॥ ४॥

सच्चा है वह मालिक सच्चा सच्चा प्यारा नाम उसका
बेहद उल्फ़त बोली उसकी बेहद प्रेम कलाम उसका

---

१ चिह्न २ महिमा, बुज़ुर्गी ३ प्रतिष्ठा ४ शोभा, रौनक़ ५ सब जगह मौजूद ६ सर्वद्रष्टा ७ गुण, सिफ़त।

दुनिया माँगे दाता बख़्शे जो माँगे हर बार मिले
पेश करें दरबार में क्या, तोहफ़ा जिससे दीदार मिले
मुंह से बात कहे क्या बन्दा जिससे मालिक प्यार करे
नूर के तड़के सच्चे नाम और शान पे सोच विचार करे
ख़िलअत पायें कर्मों से[1] रहमत से मुक्ती द्वार आएँ[2]
सब कुछ आप वह सच्चा रब है 'नानक' मन में ऐसा पाएँ ॥४

पौड़ी ५

थापिआ न जाइ कीता न होइ ।
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ।
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गाविऐ सुणीऐ मनि रखिऐ भाउ ।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ।
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ।
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ।
गुरा इक देहि बुझाई ।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥

कौन करे बुत क़ायम[3] उसका कौन, बनाने वाला है
आप से आप निरंजन[4] है वह इस माया से बाला है
जो पूजे हो मान* उसी का पूजा मान का ज़ीना है
हम्द[5] कर उसकी 'नानक' जो सब वस्फ़ों का गंजीना[6] है
हम्द भी कर तू हम्द भी सुन जब मन में प्रेम बसाएगा
सब तेरे दुख दूर हटाकर सुख के घर ले जाएगा

---

१ कर्मों से मनुष्य शरीर मिलता है २ ईश्वर कृपा से मुक्ति प्राप्त होती है
३ स्थापना करे ४ निर्विकार, निर्मल ५ स्तुति ६ गुणों का ख़ज़ाना ।

* जिसने सेवा की उसी को उस बूझ का 'मान', उसकी पहचान होती है । 'मान' के अर्थ 'इज़्ज़त' भी कोई लेते हैं ।

गुरु की बातें नाव समझ ले
गुरुमुख में वह आप समाया
ईश्वर - विष्णू - ब्रह्मा तीनों§
सरस्वती - लक्ष्मी - पार्वती सब
जानूँ भी गर उसकी बातें
क्योंकर बात सुनाऊँ उसकी
ऐ गुरु मुझको ज्ञान अता कर
सब दुनिया का एक ही दाता

गुरु की बातें वेद समझ
गुरुमुख का वह भेद समझ
मज़हर[1] गुरु की क़ुदरत के
नाम हैं गुरु की क़ूवत के
क्योंकर खोल सुनाऊँ मैं
लफ़्ज़ कहाँ से लाऊँ मैं
एक अहद[3] को पाऊँ मैं
उसको भूल न जाऊँ मैं ॥५॥

पौड़ी ६

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ।
गुरा इक देहि बुझाई ।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥

तीरथ का स्नान यही है
रब को आप न भाऊँ मैं
जो जो मख़लूक़ात[4] हुई
अच्छे करम न हों जब पल्ले
हीरे लाल जवाहर सब
गुरु की एक हिदायत सुनकर
ऐ गुरु मुझ को ज्ञान अता कर
सब दुनिया का एक ही दाता

अपने रब को भाऊँ मैं
तो तीरथ ख़ाक नहाऊँ मैं
सब मैंने देखी भाली है
हाथ जज़ा[5] से ख़ाली है
दानिश[6] में अपनी पाये तू
काम में जब ले आये तू※
एक अहद को पाऊँ मैं
उसको भूल न जाऊँ मैं ॥६॥

पौड़ी ७

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ।
चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ।

---

१ द्योतक २ शक्तियों के ३ एकमेव ईश्वर ४ सृष्टि ५ पुण्यफल ६ बुद्धि ।

§ यहाँ ईश्वर से मतलब 'शंकर' हैं । गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवोमहेश्वरः ।

※ बुद्धि से संसारी पदार्थ मिलते हैं, किन्तु गुरु के पथ-प्रदर्शन से ज्ञान जागता है और भी सब पदार्थों का मिलना सार्थक होता है ।

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ।
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोस धरे ।
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ।
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ।। ७ ।।

चार जुगों के अरसे जितनी उम्र जो पाये दुनिया में
उससे भी वह चन्द अगर जो जीता जाये दुनिया में
हरसू नौ अक़लीमो[1] पर दुनिया में उसका नाम चले
आप चले तू अर्दल[2] में साथ उसके ख़ल्क़[3] तमाम चले
उसका नाम भी ऊँचा हो और शोहरत भी हरजाई[4] हो
नामवरी के साथ ही उसने शोभा सब में पाई हो
जिस पर रब की मेहर न हो जो चश्म करम से दूर रहे
बात न उसकी पूछे कोई राँद:[5] हो मक़हूर[6] रहे
कीड़ों में इक कीड़े जैसा उसको लोग बनायेंगे
जो ख़ुद पापी दोषी हैं वह उसपर दोष लगायेंगे
'नानक' वह रब ऐसा है जो निर्गुण[7] को गुण देता है
गुणवाला इंसान हमेशा उससे सब गुण लेता है
कोई न सूझे ऐसा पूरे जो उसके इहसान करे
कोई न सूझे ऐसा जो उस दाता को गुणवान करे ।।७।।

पौड़ी ८

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ, सुणिऐ धरति धवल आकास ।
सुणिऐ दीप लोअ पाताल, सुणिऐ पोहि न सकै कालु ।
नानक भगता सदा विगासु, सुणिऐ दूख पाप का नासु ।। ८ ।।

नाम सुने से सिद्धों पीरों सुरनाथों की शान मिले
नाम सुने से धरती धूल अकाश की भी पहचान मिले
नाम सुने से जानें ख़ित्तों[8] दुनियाओं पातालों को
नाम सुने से दूर करें हम मौत के सब जंजालों को
'नानक' भक्ती वाले दायम[9] ख़ुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ।।८।।

---

१ भूखण्डों २ अधीन ३ सृष्टि ४ चौतरफ़ः ५ त्यागा हुआ ६ प्रकोप में पड़ा ७ गुणहीनों को ८ प्रदेशों ९ चिरस्थायी, सर्वकालिक ।

पौड़ी ६

सुणिऐ ईसरु बरमा इन्दु, सुणिऐ मुखि सालाहण मन्दु ।
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद, सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ।
नानक भगता सदा विगासु, सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ९ ॥

नाम सुने से ईश्वर ब्रह्मा इन्दर जैसा रुतबा पायें
नाम सुने से नीच कमीने सब में खूब सराहे जायें[1]
नाम सुने से रस्ता पाएँ योग और तन के भेदों का
राज़ खुले सब स्मृतियों का शास्तरों का वेदों का
'नानक' भक्ती वाले दायम ख़ुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ॥९॥

पौड़ी १०

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु, सुणिऐ अठसठि का इसनानु ।
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु, सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ।
नानक भगता सदा विगासु, सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ १० ॥

नाम प्रभू का सुन-सुनकर सच पाएँ सब्र और ज्ञान मिले
नाम प्रभू का सुनकर अड़सठ तीरथ[2] का स्नान मिले
नाम प्रभू का पढ़ सुनकर इंसान की इज़्ज़त शान भी हो
नाम प्रभू का सुनकर हासिल आसानी से ध्यान भी हो
नानक भक्ती वाले दायम ख़ुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ॥१०॥

पौड़ी ११

सुणिऐ सरा गुणा के गाह, सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ।
सुणिऐ अंधे पावहि राहु, सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ।
नानक भगता सदा विगासु, सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥

नाम को सुनकर नेकी के दरयाओं में पैदल राह मिले
नाम को सुनकर शेख़ बने और पीर बने और शाह बने

---

१ मंद अर्थात् गिरे हुए प्राणी भी नाम-श्रवण से प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं
२ भारत में ६८ तीर्थ माने जाते हैं, उन सबके स्नान का फल केवल नामस्मरण से प्राप्त होता है ।

नाम प्रभू का सुनने से अन्धे को उसकी राह मिले
नाम प्रभू का सुनने से बेथाह की हमको थाह मिले[1]
'नानक भक्ती वाले दायम खुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ॥११॥

पौड़ी १२

मंने की गति कही न जाइ, जे को कहै पिछै पछुताइ ।
कागदि कलम न लिखणहारु, मंने का बहि करनि वीचारु ।
ऐसा नामु निरंजनु होइ, जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १२ ॥

मन से जो मानेगा रब को उसकी हालत कौन बताए
जो कहना भी चाहे उसको वह भी आख़िर को पछताए
कैसा काग़ज़ और क़लम से कौन-सा लिखने वाला है
मन से जो मानेगा रब को तारीफ़ों से बाला है
ऐसा नाम निरंजन का है कोई जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा[2] ॥१२॥

पौड़ी १३

मंनै सुरति होवै मनि बुधि, मंनै सगल भवण की सुधि ।
मंनै मुहि चोटा ना खाइ, मंनै जम कै साथि न जाइ ।
ऐसा नामु निरंजनु होइ, जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १३ ॥

मन से जो मानेगा उसकी सोच समझ बेदार[3] रहे
मन से जो मानेगा[4] उस पर रौशन सब संसार रहे
मन से उसको जो माने वह मुंह पर चोट न खायेगा
मन से उसको जो मानेगा जम[5] के साथ न जाएगा
ऐसा नाम निरंजन का है कोइ जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा ॥१३॥

---

१ संसार सागर की थाह २ निरञ्जन अकाल पुरुष की अपार महिमा का लिखना या बखान करना बन्दे के वश का नहीं । कोई ही भक्त ऐसा भाग्यवान होता है जो मनन करता और उसे पहचान पाता है ३ जाग्रत ४ तन्मय होकर जो मानेगा ५ यमराज—मृत्यु से छुटकारा पायगा ।

पौड़ी १४

मंनै मारगि ठाक न पाइ, मंनै पति सिउ परगटु जाइ।
मंनै मगु न चलै पंथु, मन धरम सेती सनबंधु।
ऐसा नामु निरंजनु होइ, जे को मनि जाणै मनि कोइ॥ १४॥

मन से जो मानेगा उसके रस्ते में कुछ रोक न आए
मन से जो मानेगा ऊंची शान और इज़्ज़त लेकर जाए
मन से उसको जो मानेगा वह गुमराही से बचता जाए
मन से उसको जो मानेगा वह धर्म से पक्का नाता पाए
ऐसा नाम निरंजन का है कोई जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा॥१४॥

पौड़ी १५

मंनै पावहि मोखु दुआरु, मंनै परवारै साधारु।
मंनै तरै तारे गुरु सिख, मंनै नानक भवहि न भिख।
ऐसा नामु निरंजनु होइ, जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १५॥

मन से जो मानेगा उस पर दर मुक्ती[1] के खुलते जाएँ
मन से जो मानेगा उसके बच्चे बाले मुक्ती पाएँ
माने से गुरु पार लगे सब चेलों को भी पार लगाए
मन से जो माने सो 'नानक' भीक के चक्कर से बच जाए
ऐसा नाम निरंजन का है कोइ जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा॥१५॥

पौड़ी १६

पंच परवाण पंच परधानु, पंचे पावहि दरगहि मानु।
पंचे सोहहि दरि राजानु, पंचा का गुरु एकु धिआनु।
जे को कहै करै वीचारु, करते कै करणै नाही सुमारु।
धौलु धरमु दइआ का पूतु, संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।
जे को बुझै होवै सचिआरु, धवलै उपरि केता भारु।
धरती होरु परै होरु होरु, तिस ते भारु तलै कवणु जोरु।
जीअ जाति रंगा के नाव, सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।

---

१ मुक्तिद्वार २ दुनिया की भीख से अर्थात् आवागमन से छूट जायगा।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ, लेखा लिखिआ केता होइ।
केता ताण सुआलिहु रूपु, केती दाति जाणै कौणु कूतु।
कीता पसाउ एको कवाउ, तिसते होए लख दरीआउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु, वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार, तू सदा सलामति निरंकार॥ १६॥

जो मक़बूल ख़ुदा[१] के हैं परवान भी हैं परधान भी हैं
जो मक़बूल ख़ुदा के हैं दरगाह में पाते शान भी हैं
जो मक़बूल ख़ुदा के हैं वह राजसभा की शान बढ़ाएँ❊
जो मक़बूल ख़ुदा के हैं इक गुरु पर अपना ध्यान जमाएँ
लाख कहे इंसान मगर क़ुदरत की थाह न पायेगा
ख़ालिक़[२] की ख़िलक़त[३] का उसको अंत शुमार न आयेगा
जिसके सींगों पर है धरती धर्म-दया का पूत है यह§
सब्र से क़ायम रहती है एक तौल है यह एक सूत[४] है यह
जो इस बात को समझा है वह समझा है वह ज्ञानी है
बैल उठाए सींग पे इतना बोझ अजब हैरानी है
दूर ज़मीं से और ज़मीनें उनसे आगे और जहाँ[५]
उनके नीचे ज़ोर है किसका क़ायम हैं किस तौर वहाँ
गूना-गोनी[६] ख़िलक़त सारी रंगा-रंग इक़साम[७] सभी
लिक्खे लिखने वालों ने बेरोक क़लम से नाम सभी
कौन भला लिख सकता है यह गिनती हो मरक़ूम[८] कहाँ
इस गिनती की गिनती गिनती वालों को मालूम कहाँ
कितनी तेरी ताक़त है क्या सुन्दर रूप सुहाना है
कितनी दाद और रोज़ी बख़्शी किसने उसको जाना है
हरफ़[९] कहा जब एक ही तूने फैले आलम सारे हैं
हरफ़ कहा जब एक ही तूने फूटे लाखों तारे हैं

---

१ परमेश्वर को प्रिय २ सिरजनहार ३ सृष्टि ४ व्यवस्था ५ लोक ६ भाँति-भाँति की ७ अलग-अलग ८ कहाँ लिखी जा सकती है ९ शब्द (शब्द से संसार उत्पन्न हुआ—शब्दप्रसवा सृष्टि)।

❊ परमेश्वर का प्रिय बंदा ही सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक प्रतिष्ठा पायेगा।

§ दया रूपी गाय का धर्म रूपी पुत्र बैल संतोष के बल पर संसार-चक्र को चला रहा है। श्री सत् अकाल (सत्य स्वरूप) की दया से उत्पन्न धर्म ने सृष्टि को परस्पर संतोष देकर चलाया। इसको समझ कर सारे संसार को एक रूप समझने व व्यवहार करने-वाला ही ज्ञानी (आलिम) है।

मुझमें कब यह क़ुदरत है मैं तेरा सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूँ तुझपर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिनको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम[1] पाक है निरंकार तू ही ॥१६॥

पौड़ी १७

असंख जप असंख भाउ, असंख पूजा असंख तप ताउ ।
असंख गरंथ मुखि वेद पाठि, असंख जोग मनि रहहि उदास ।
असंख भगत गुणगिआन वीचार, असंख सती असंख दातार ।
असंख सूर मुह भख सार, असंख मोनि लिव लाइ तार ।
कुदरति कवण कहा वीचारु, वारिआ न जावा एक वार ।
जो तुधु भावै साई भली कार, तू सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥

संखो ही जप करते हैं और संखों इश्क़ मुहब्बत भी
संखों पूजा करते हैं और संखों लोग रिआज़त[2] भी
संखों लोग गिरंथों और वेदों का पाठ सुनाते हैं
संखों जिनके मन में उदासी बन में योग कमाते हैं
संखों ही गुन तेरे सोचें भक्त व ज्ञानी होते हैं
संखों सतगुन वाले हैं और संखों दानी होते हैं
संखों शेर बहादुर हैं तलवार जो मुँह पर खाते हैं
संखों चुप गुप रह-रह कर बस तुझ में घ्यान लगाते हैं
मुझमें कब यह क़ुदरत है मैं तेरा सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूँ तुझपर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिसको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम पाक है निरंकार तू ही ॥१७॥

पौड़ी १८

असंख मूरख अंध घोर ।
असंख चोर हरामखोर ।
असंख अमर करि जाहि जोर ।
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ।
असंख पापी पापु करि जाहि ।

---

१ सदैव रहने वाला, स्थायी २ तपस्या ।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि।
असंख मलेछ मलु भखि खाहि।
असंख निंदक सिरि करहि भारु।
नानकु नीचु कहै वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १८ ।।

संखों मन के अंधे हैं और मूरख मन के ख़ाम बहुत
संखों चोरी करते हैं और खायें माल हराम बहुत
संखों जाबिर[1] ज़ोर के बल पर अपना हुक्म चलाते हैं
संखों गर्दन काटे मूज़ी ज़ालिम ख़ून बहाते हैं
संखों ऐसे पापी हैं जो पाप कमाते जाते हैं
संखों ऐसे झूठे हैं जो झूठी बात लगाते हैं
संखों हैं नापाक नजिस जो गंदी चीज़ें खाते हैं
संखों ग़ैबत[2] करते हैं गर्दन पर बोझ उठाते हैं§
'नानक, आजिज़ कहता है जितना भी सोच विचार करूँ
मैं इस लायक कब हूँ तुझपर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिसको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम पाक है निरंकार तू ही ।।१८।।

पौड़ी १९

असंख नाव असंख थाव।
अगंम अगंम असंख लोअ।
असंख कहहि सिरि भारु होइ।
अखरी नामु अखरी सालाह।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह।

---

१ जबरन शासन करनेवाला २ परोक्षनिन्दा।

§ इस पौड़ी में उन बदनाम अपराधियों ही नहीं बल्कि संसार के नामवर सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक नेताओं या आडम्बरी सामान्यजनों की ओर भी इशारा है।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ।
अखरा सिरि संजोगु बखाणि ।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ।
जेता कीता तेता नाउ ।
विणु नावै नाही को थाउ ।
कुदरति कवण कहा वीचारु ।
वारिआ न जावा एक वार ।
जो तुधु भावै साई भली कार ।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १९ ।।

संखों तेरे नाम भी हैं और संखों ही स्थान भी हैं
जिन तक जाना नामुमकिन है संखों और जहान भी हैं
संखों कहना यह भी अपने सरपर बोझ उठाना है
हरफ़ों से ही नाम बना हरफ़ों से हम्द[1] सुनाना है
हरफ़ों ही से ज्ञान बताएँ गीत गुणों के गाते हैं
हरफ़ों ही से बोल बने जो लिखे बोले जाते हैं
हरफ़ों ही से माथे पर संजोग भी पहले लिक्खा है
लेकिन लिखने वाले के माथे पर किसने लिक्खा है
वैसा वैसा मिलता है वह जैसा जैसा क़हता है
मिलता है जो कहता है जो कहता है मिल रहता है
जितनी मख़लूक़ात[2] हुई ख़ालिक़[3] का उतना नाम हुआ
नाम जहाँ मौजूद नहीं वह बोलो कौन मुक़ाम हुआ
कौन सी मुझमें क़ुदरत है मैं तेरा सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूं तुझ पर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिसको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम पाक है निरंकार तू ही ।।१९।।

पौड़ी २०

भरीऐ हथु पैरु तनु देह, पाणी धोतै उतरसु खेह ।
मूत पलीती कपड़ु होइ, दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ।

---

१ स्तुति २ सृष्टि ३ स्रष्टा ।

भरीऐ मति पापा कै संगि, ओहु धोपै नावै कै रंगि ।
पुंनी पापी आखणु नाहि, करि करि करणा लिखि लै जाहु ।
आपे बीजि आपे ही खाहु, नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥

हाथ भरें या पैर भरें
या तन से चिमटे ख़ाक कभी
पानी से जब धो डालें
हो ख़ाक से फ़ौरन साफ़ सभी
मैल नजासत[1] लगने से
नापाक जो कपड़ा होता है
दूर पलीदी[1] हो जाये
तू साबुन से जब धोता है
ऐसे ही जब मन हो मैला
पाप की गन्दी बातों से
नाम ख़ुदा की उल्फ़त से वह
पाप सभी धुल जाएँगे
कहने से हो नेक कहाँ
कहने से हो बदकार कहाँ
काम तू जो जो करता है
सब जाए लिक्खा साथ वहाँ
आप ही बोये आप ही काटे
बोता है सो खाता है
हुक्म प्रभू से आए 'नानक'
हुक्म प्रभू से जाता है ॥२०॥

पौड़ी २१

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ।
जे को पावै तिल का मानु ।
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ।
विणु गुण कीते भगति न होइ ।
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ।
कवणु सु वेला वखतु कवणु, कवण थिति कवणु वारु ।
कवणि सि रुती माहु कवणु, जितु होआ आकारु ।
वेल न पाईआ पंडती, जि होवै लेखु पुराणु ।
वखतु न पाइओ कादीआ, जि लिखनि लेखु कुराणु ।
थिति वारु ना जोगी जाणै, रुति माहु ना कोई ।
जा करता सिरठी कउ साजे, आपे जाणै सोई ।

---

१ गन्दगी २ ईश्वर प्रेम ।

किव करि आखा किव सालाही, किउ वरनी किव जाणा ।
नानक आखणि सभु को आखै, इकदू इकु सिआणा ।
वडा साहिबु वडी नाई, कीता जाका होवै ।
नानक जे को आपी जाणै, अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥

तीरथ जाए ज़ुहद[1] कमाए
लेकिन फल तिल जितना पाये
बन्दा सुन सुन कर जो माने
अपने मन के तीरथ में वह
तू वस्फ़ों का वाली[2] मालिक
जब तक वस्फ़ न हों कुछ पल्ले
माया शब्द और ब्रह्माओं का
तू सत् चित् आनन्द है सुन्दर
कौन सा था वह वक़्त जमाया
मौसम और महीना क्या था
पण्डित वक़्त लगन गर पाते
क़ाज़ी जानते साइत तो
दिन तारीख़ महीना मौसम
जाने तो वह ख़ालिक़ जाने
क्योंकर बोलूँ हम्द करूँ
'नानक' कहने को सब कहदें
नाम बड़ा और शान बड़ी
'नानक' जो हंकारी[3] हो

ख़ूब दया पुन दान करे
जिसपर मान गुमान करे
प्रेम से दिल में ध्यान करे
मल मल कर स्नान करे
गुन का मुझ में नाम नहीं
भक्ती से कुछ काम नहीं
ख़ालिक़ ख़ैर अंदेश ख़ुदा
तुझको हो परनाम सदा
कौन सा दिन तारीख़ वह थी
नींव रक्खी जब दुनिया की
लिखते साफ़ पुराणों में वह
लिख देते सब क़ुर्आन में वह
जोगी को मालूम कहाँ
जिससे है आबाद जहाँ§
या शरह करूँ या जानूं मैं
सब बढ़ चढ़ कर स्याने हैं
जो चाहे सो हो जाता है
कब आगे इज़्ज़त पाता है ॥२१॥

पौड़ी २२

पाताला पाताल लख, आगासा आगास ।
ओड़क ओड़क भालि थके, वेद कहनि इक वात ।

---

१ तप २ गुणों के स्वामी, सारे गुण तेरे ही प्रकाश हैं ३ अहंकारी ।

§ सृष्टि कब कैसे बनी इस पर कहने वाला कोई नहीं । वही सृष्टिकर्ता ही जानता है । क़ुरान, पुरान, वेद, स्मृति, जोगी, जती, संन्यासी सब यह कहने में असमर्थ हैं । इसलिए सृष्टि की चिन्ता छोड़कर सिरजनहार की चिन्तना में लगना चाहिए ।

सहस अठारह कहनि कतेबा, असुलू इकु धातु ।
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ।
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ।। २२ ।।

लाखों हैं पाताल यहाँ पातालों के पाताल भी हैं
फैले लाखों आकाशों पर आकाशों के जाल भी हैं
अंत न पाया ढूँढ थके हम वेद यही एक बात बताएँ
सब अठारह हज़ार किताबें असल इक तेरी ज़ात बताएँ
लिखने वाले मिट जाते हैं शरह न लिक्खी जाए कभी
'नानक' कह रब सबसे आली जाने अपनी शान वही ।।२२।।

पौड़ी २३

सालाही सालाहि, एती सुरति न पाईआ ।
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ।
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ।
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ।। २३ ।।

करते हैं तौसीफ़[1] ख़ुदा की लेकिन हैं आगाह[2] कहाँ
नदियाँ नाले जाएँ समुन्दर लेकिन पाएँ थाह कहाँ
पर्वत जितनी दौलत हो और हो सुल्तान समुन्दर का
उस चिउँटी का तोल नहीं हो जिसके मन में याद ख़ुदा ।।२३।।

पौड़ी २४

अंतु न सिफती कहणि न अंतु, अंतु न करणै देणि न अंतु ।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु, अंतु न जापै किआ मनि मंतु ।
अंतु न जापै कीता आकारु, अंतु न जापै पारावारु ।
अंति कारणि केते बिललाहि, ताके अंत न पाए जाहि ।
एहु अंतु न जाणै कोइ, बहुता कहिऐ बहुता होइ ।
वडा साहिबु ऊचा थाउ, ऊचे उपरि ऊचा नाउ ।
एवडु ऊचा होवै कोइ, तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।
जेवडु आपि जाणै आपि आपि, नानक नदरी करमी दाति ।। २४ ।।

---

१ प्रशंसा २ होश ।

अन्त नहीं कुछ वस्फ़ों का कुछ तेरी सना[1] का अन्त नहीं
अन्त नहीं कुछ क़ुदरत का कुछ तेरी अता[2] का अन्त नहीं
अन्त नहीं आवाज़ों का नज़्ज़ारों का कुछ अन्त नहीं
अन्त नहीं कुछ भेदों का इसरारों[3] का कुछ अन्त नहीं
अन्त नहीं कुछ ख़िलक़त का संसार का तेरे अन्त नहीं
पार का तेरे अन्त नहीं और वार का तेरे अन्त नहीं
तेरा अन्त समझने का बे अन्त पड़े चिल्लाते हैं
लाख जतन करते हैं लेकिन अन्त न तेरा पाते हैं
तेरा अन्त न जाने कोई तेरी थाह न पाई है
जितना जितना कहते जाएँ उतनी और बड़ाई है
जाने कौन बड़ाई तेरी ऊँचा पाक मुक़ाम तेरा
ऊँचों के भी ऊँचों से है ऊँचा या रब नाम तेरा
इतना ऊँचा कौन भला जो उस ऊँचे को जानेगा
सब ऊँचों से ऊँचा हो जब ऊँचे को पहचानेगा
जाने आप बड़ाई अपनी समझे अपनी अज़मत[4] को
उसकी चश्म करम से 'नानक' बख़्शिश हो और रहमत हो ।।२४।।

पौड़ी २५

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ।
वडा दाता तिलु न तमाइ ।
केते मंगहि जोध अपार ।
केतिआ गणत नही वीचारु ।
केते खपि तुटहि वेकार ।
केते लै लै मुकरु पाहि केते मूरख खाही खाहि ।
केतिआ दूख भूख सद मार एहि भि दाति तेरी दातार ।
बंदि खलासी भाणै होइ होरु आखि न सकै कोइ ।
जे को खाइकु आखणि पाइ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ।
आपे जाणै आपे देइ आखहि सि भि केई केइ ।
जिसनो बखसे सिफति सालाह नानक पातिसाही पातिसाहु ।। २५ ।।

---

१ तारीफ़ २ देन ३ रहस्यों ४ महत्व ।

कितनी उसकी बख़्शिश है यह किससे लिक्खी जाती है
आली है वह दाता उसको हिर्स[1] तमा[2] कब आती है
कितने हैं बलवान बहादुर भीख जो उससे पाते हैं
जो भिखमंगे उसके दर से गिनती में कब आते हैं
कितने वह बदक़िस्मत हैं जो पापी हैं बदकार भी हैं
घुल घुलकर वह बदियों में इस जीने से बेज़ार भी हैं
कितने उससे लेने वाले साफ़ मुकरते जाते हैं
कितने मूरख पेटू हैं जो अल्लम-गल्लम खाते हैं
कितने दायम[3] भूखे मर मर कर दुख से जान गवाँते हैं
दाता यह भी दाद[4] है तेरी सब कुछ तुझ से पाते हैं
बन्दिश[5] तेरी मरज़ी है आज़ादी[6] तेरी मरज़ी है
किसकी ताक़त कौन कहे यह मरज़ी मेरी मरज़ी है
मूरख तेरी बातों में जो कोई नुक़्स बताता है
जब वह मुँह की खाता है तब होश उसे आ जाता है
आप ही सब कुछ जाने दाता आप ही देता रहता है
बात यह अपने मन से लेकिन कोई कोई कहता है
जिसके बख़्शे हम्द[7] की ताक़त वह बन्दा ज़ीजाह हुआ
'नानक' वह राजों का राजा वह शाहों का शाह हुआ ॥२५॥

पौड़ी २६

अमुल गुण अमुल वापार अमुल वापारीए अमुल भंडार ।
अमुल आवहि अमुल लै जाहि अमुल भाइ अमुला समाहि ।
अमुलु धरमु अमुलु दीवाणु अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ।
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ।
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ आखि आखि रहे लिव लाइ ।
आखहि वेद पाठ पुराण आखहि पड़े करहि वखिआण ।
आखहि बरमे आखहि इंद आखहि गोपी ते गोविंद ।
आखहि ईसर आखहि सिध आखहि केते कीते बुध ।
आखहि दानव आखहि देव आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ।

१ लोभ २ लालसा ३ हमेशा ४ बख़्शीश ५ बन्धन ६ मुक्ति ७ ईश्वर की स्तुति ८ महान पद वाला ।

केते आखहि आखणि पाहि केते कहि कहि उठि उठि जाहि ।
एते कीते होरि करेहि ता आखि न सकहि केई केइ ।
जेवडु भावै तेवडु होइ नानक जाणै साचा सोइ ।
जे को आखै बोलु विगाड़ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥ २६ ॥

गुण भी हैं अनमोल तेरे अनमोल तेरा व्यापार भी है
व्यापारी अनमोल तेरे अनमोल तेरा भंडार भी है
आते हैं अनमोल यहाँ ले जाते हैं अनमोल यहाँ
भाव भी है अनमोल समाँ[1] भी पाते हैं अनमोल यहाँ
धर्म भी है अनमोल तेरा अनमोल तेरा दीवान[2] भी है
बाँट भी हैं अनमोल तेरे अनमोल तेरी मीज़ान[3] भी है
बख़्शीश भी है अनमोल तेरी अनमोल है मुहर निशान तेरा
रहम करम अनमोल तेरे अनमोल सदा इरफ़ान[4] तेरा
तू कितना अनमोल है या रब तेरी बातें कौन बताए
तेरी बातें कह-कहकर सब दुनिया तुझ पर ध्यान लगाए
कहते हैं तेरी ही बातें वेदों और पुराणों में
ज़िक्र है तेरी शानों का वाज़ों[5] में और बयानों[6] में
हम्द करें ब्रह्मा भी तेरी इन्दर भी तारीफ़ करें
गुण गाए हर गोपी भी गोविन्द तेरी तौसीफ़[7] करें
हम्द कहे ईश्वर[8] भी तेरी सिद्ध[9] भी तेरी शान बताएँ
जितने बोध[10] बनाए तू ने सारे तेरी महिमा गाएँ
देव तेरे गुण गाते हैं जिन्नात[11] भी तेरी शान बताएँ
सेवक भक्त मुनी सब पूजें तेरी हम्द मिलायक गाएँ
तेरी महिमा करने वाले कितने कितने आते हैं
कितने लोग सनाख़्वाँ[12] हैं जो कह कह कर उठ जाते हैं
तेरी जितनी दुनिया में हैं उतने हों गर और जहाँ[13]
वस्फ़[14] तेरे सब मिल मिलकर गिन सकती है मख़लूक़[15] कहाँ

---

१ दृश्य २ ग्रंथ ३ जोड़ ४ ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) ५ उपदेशों ६ कथनों ७ स्तुति ८ शंकर ९ सिद्ध जन (जैन) १० बुद्ध ११ दानव १२ गुणगान करनेवाले १३ संसार १४ गुण १५ सृष्टि ।

नोट—शैव, जैन, बौद्ध, देव, दानव, सुर, नर, मुनि, यहाँ तक कि साधारण मनुष्य और सारी सृष्टि उस अकाल पुरुष का ही गुण गाती है ।

जितनी चाहे शान बड़ाई उतनी शान बड़ाई हो
'नानक' साहब सच्चा जाने अपनी आप बड़ाई को
शान में उसकी गुस्ताख़ी यह काम तो है बदकारों का
ऐसा शख़्स गँवार नहीं वह है सरदार गँवारों का ॥२६॥

पौड़ी २७

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ।
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ।
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ।
गावहि इंद इंदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ।
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ।
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ।
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ।
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ।
सेई तुधु नो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ।
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ।
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ।
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ २७ ।

वह दर कैसा वह घर कैसा जिसमें बैठा काम चलाए
संखों नाद और बाजे उसमें कितनी दुनिया साज बजाए

कितने राग और रागिनियाँ हैं
गाएँ पानी आग हवा और
चित्र और गुप्त भी गाएँ जिनका
गाएँ ईश्वर ब्रह्मा देवी
गाएँ तख़्त पे बैठे इन्दर
गाएँ सिद्ध समाधी में और
गाएँ जत सत वाले साबर
गाएँ पण्डित गाएँ ऋषि
चर्ख़[1] ज़मीं पातालों में सब
गाएँ अढ़सठ तीरथ भी
गाएँ जंगी बीर बहादुर
तेरे माथे ख़ित्ते मण्डल
गाएँ भक्त प्रेमी सब
गाएँ कितने और भी 'नानक'
सच्चा हरदम साहब सच्चा
है और हो भी, जाय न गुम हो,
गूनागूनी[3] जिसकी माया
आप बनाए आप ही देखे
जो चाहे सो करता है
शाहों के उस शाह की 'नानक'

कितने रागी राग सुनाएँ
धर्मी राजा दर पर गाएँ
लिक्खा धर्म बिचारे आप
जिनका रूप सँवारे आप
दर पर देव तुम्हारे गाएँ
सोच में साधू सारे गाएँ
ताक़त वाले वीर भी गाएँ
जुग जुग के वेद जो पढ़ते जाएँ
गाएँ हूरें मनमोहन
और तेरे हीरे लाल रतन
चारो कानें[2] गाती हैं
और दुनियाएँ गाती हैं
जो तेरे मन को भाते हैं
याद कहाँ सब आते हैं
नाम उसका सच्चाई है
रचना जिसने रचाई है
रंगा रंग सजाई है
कितनी शान बड़ाई है
कुछ चलता किसका कहना है
ख़ास रज़ा पर रहना है ॥२७॥

पौड़ी २८

मुंदा संतोख सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ।
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ।
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २८ ॥

मुंदरे[4] सरम[5] क़नाअत[6] के हूँ
राख भभूत के बदले तन पर

पत[7] की तेरी झोली हो
ध्यान की ख़ाली चोली हो

---

१ आकाश २ चार प्रकार की उत्पत्तियाँ (उद्भिज, स्वेदज, अण्डज, पिण्डज) ३ चित्र-विचित्र ४ योगमुद्रायें अथवा कुण्डल जैसे योगियों द्वारा धारण करनेवाले बाहरी चिह्न के बदले क़नाअत अर्थात संतोष ही हमारा भूषण है ५ परिश्रम ६ संतोष ७ प्रतिष्ठा (प्रतिष्ठा का परिश्रम ही हमारी झोली है न कि योगियों जैसी कपड़े की झोली) ।

तन हो पाक कुँआरी जैसा
लेकर सदक़ यक़ीन[1] का डण्डा
सब फ़िरक़ों को एक समझ ले
मन को तूने जीत लिया
उसको है आदेश सदा
अव्वल पाक अनादो[3] अब्दी[4]

मौत की कफ़नी डाले तू
शक को मार निकाले तू
'आई' पंथी रीत है यह[2]
तो सारे जग की जीत है यह
आदेश सदा आदेश सदा
जुग जुग में इक भेस सदा ॥२८॥

पौड़ी २६

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ।
आपि नाथु नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद ।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखै आवहि भाग ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २९ ॥

ज्ञान को अपना भोजन कर ले
हर मन में जो नाद बजे
नाथे हैं सब नाथ में जिसकी
दौलत ज़ोर करामत उनके
वस्ल[5] और हिज्र[6] यही दोनो
क़िस्मत में जो लिक्खे हैं
उसको है आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी अब्दी

रहम तेरा भंडारी हो
वह नाद तेरी किलकारी हो
नाथ वही हो नाथ तेरा
साथी से क्या साथ तेरा
दुनिया का काम चलाते हैं
वह भाग हमें मिल जाते हैं
आदेश सदा आदेश सदा
जुग जुग में इक भेस सदा ॥२९॥

पौड़ी ३०

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ।
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीवाणु ।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥

---

१ सत्य स्वरूप पर श्रद्धा (रूपी डण्ड) २ एक ही सच्चा पथ है । जो चाहे 'आये' दाखिल हो ३ अनादि ४ अखण्ड (आदि से सर्वदा एक रूप) ५ संयोग ६ वियोग ।

कहते हैं जब माया माई[1] पास खुदा के आई है
देवता उसने तीन जने तीनों के हाथ खुदाई है
इक संसार बनाता है और इक रोज़ी पहुँचाता है
इक जाँचे आमाल जहाँ के वह दीवान लगाता है
लेकिन सच पूछो तो दुनिया हुक्म खुदा से चलती है[2]
जैसे जैसे हुक्म करे यह वैसे वैसे चलती है
वह उन सब को देखे भाले सबका हरदम ध्यान करे
आप रहे आँखों से ओझल आक़िल को हैरान करे[3]
उसको है आदेश सदा आदेश सदा आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी अब्दी जुग जुग में एक भेस सदा ॥३०॥

पौड़ी ३१

आसणु लोइ लोइ भंडार, जो किछु पाइआ सु एका वार ।
करि करि वेखै सिरजणहारु, नानक सचे की साची कार ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३१ ॥

हर आलम में तख़्त उसी का हर जुग में भंडार भरे
जब भी वह भंडार भरे भंडार तमाम एक बार भरे
आप बनाए आप ही देखे सबका सिरजनहार है वह
'नानक' सच्चे काम सब उसके हाँ सच्ची सरकार है वह
उसको है आदेश सदा आदेश सदा आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी अब्दी जुग जुग में एक भेस सदा ॥३१॥

पौड़ी ३२

इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ।
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ।
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ।
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ।
नानक नदरी पाइऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥

---

१ माया रूपी इस दुनिया की माता २ उस माया से ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होकर उत्पत्ति, पालन और संहार (न्याय) करते हैं। यह तीनो भी उस एक अनादि शक्ति से प्रेरणा प्राप्त करते हैं ३ वह सबको देखता है, उसको कोई नहीं।

एक के बदले लाख ज़बानें
इक इक की फिर बीस बनें
लाखों बार उन लाखों पर
इस रस्ते यह ज़ीना चढ़कर
'नानक' सुनकर अर्श की बातें
रहमत से खुद मिलता है वह

मुँह में मेरे आएँ अगर
यों बीस गुनी हो जाएँ अगर
जब नाम प्रभू का लाऊँ मैं
वस्ल प्रभू से पाऊँ मैं
कीड़ों को भी आए रीस
बक्की झूठे बिस्वे बीस[1] ।।३२।।

पौड़ी ३३

आखणि जोरु चुपै नह जोरु, जोरु न मंगणि देणि न जोरु ।
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु, जोरु न राजि मालि मनि सोरु ।
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि, जोरु न जुगती छुटै संसारु ।
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ, नानक उत्तमु नीचु न कोइ ।। ३३ ।।

कहने पर कब ज़ोर चले
देने पर कब ज़ोर चले
जीने पर कब ज़ोर चले
ज़र[3] मनशूर[4] और राज हुकूमत
सुर्ती[5] पर क्या दावये ज्ञान
दुनिया से छुटकारा हो
ज़ोर हो जिसकी बाज़ू में
ज़ोर से उत्तम कौन है 'नानक'

चुप रहने पर कब ज़ोर चले
लहने[2] पर भी कब ज़ोर चले
मर जाने पर कब ज़ोर चले
पाने पर कब ज़ोर चले
और ध्यान पे किसका ज़ोर चले
अरफ़ान पे किसका ज़ोर चले
वह देखे अपना ज़ोर लगा
ज़ोर[6] से नीचा कौन भला ।।३३।।

पौड़ी ३४

राती रुती थिती वार ।
पवण पाणी अगनी पाताल ।
तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ।
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ।
तिनके नाम अनेक अनंत ।

---

१ सोलहो आने (उसकी कृपा से ही वह हमको मिलता है बाक़ी सारी बातें बकवास हैं।) २ भाग्य ३ दौलत ४ शाही फ़र्मान ५ श्रुति-स्मृति (अथवा तन्मयता) ६ ज़ोर याने अहंकार का कहीं भी वश नहीं है, न उसके बल पर कोई ऊँचा-नीचा है। सब एक प्रभु के ज़ोर के ही ताबे हैं।

करमी करमी होइ वीचारु ।
सचा आपि सचा दरबारु ।
तिथै सोहनि पंच परवाणु ।
नदरी करमि पवै नीसाणु ।
कच पकाई ओथै पाइ ।
नानक गइआ जापै जाइ ।। ३४ ।।

उस मालिक ने रात बताई
चाँद की तिथि तारीख बताई
आग, हवा है, पानी है
धर्म सरा[2] इन सब के अन्दर
ख़ल्क़[3] है गूनागूनी[4] उसके
रंगों का कुछ अन्त नहीं
जैसे करम कमाएँगे
रब सच्चा दरबार भी सच्चा§
सजते हैं मक़बूल[6] वहाँ
रहमत की हो जिन पे नज़र
कच्चे पक्के परखे जाएँ
'नानक' रब के पास पहुंचकर

मौसम भी तैयार किये
पैदा दिन[1] और वार किए
पाताल ज़मीं के अन्दर है
यह धरती का मन्दिर है
कामों का कुछ अन्त नहीं
और नामों का कुछ अन्त नहीं
सब वैसे ही फल पाएँगे
अजर[5] वहाँ मिल जाएंगे
उन सबको इज़्ज़त शान मिले
उन सब को ख़ास निशान मिले
जब दरगाह[7] में आएँगे
सब पहचाने जाएँगे ।।३४।।

पौड़ी ३५

धरम खंड का एहो धरमु ।
गिआन खंड का आखहु करमु ।
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ।
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ।
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ।
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ।

---

१ तिथि २ धर्मशाला (हर मुसाफ़िर के ठहरने के लिए नहीं बल्कि धर्म पर अमल करने वाले यात्री के लिए) ३ सृष्टि ४ रंगविरंगी ५ प्रतिफल ६ (ईश्वर को) स्वीकृत, भक्त ७ भगवान का दरबार ।

§ हमारी पाँच कर्म-इन्द्रियाँ रूपी पंच ही हमारे कर्मों की गवाही देंगे ।

केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ।
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ।। ३५ ।।

मंज़िल यह थी धर्म की मंज़िल जिसका धर्म बताया है
हाल अब ज्ञान की मंज़िल का कुछ आगे खोल सुनाया है
पानी आग हवाएँ कितनी कितने कितने कृष्ण महेश
कितने कितने ब्रह्मा हैं जो ढालें शक्लें रंगत भेस
कितनी ही आमाल की दुनिया मेरु[1] ध्रुव[2] उपदेश यहाँ
कितने इन्दर चाँद और सूरज कितने मण्डल देस जहाँ
कितने देवी भेस के अन्दर कितने सिध बुध नाथ गुनी
कितने सागर लाल जवाहर कितने दानव देव मुनी
कितनी कानें और ज़बानें कितने गुज़रे शाह ज़मीं
कितने ज्ञानी सेवक 'नानक' जिनका अन्त शुमार नहीं ।।३५।।

पौड़ी ३६

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ।
तिथै नाद विनोद कोड अनंदु ।
सरम खंड की वाणी रूपु ।
तिथै घाड़ति घड़िऐ बहुत अनूपु ।
ताकीआ गला कथीआ ना जाहि ।
जे को कहै पिछै पछुताइ ।
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ।
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ।। ३६ ।।

यह थी ज्ञान की मंज़िल जो नूरानी[3] है इरफ़ानी[4] है
ज्ञान के उसमें नग़में[5] हैं सौ लाख ख़ुशी रूहानी[6] है
श्रम[7] की मंज़िल वह मंज़िल है जिसमें सुन्दर रूप मिले
जो शै इसमें गढ़ते[8] हैं उस शै को रूप अनूप मिले

---

१ मेरु (धरती का मध्य) २ ध्रुव (प्रदेश) या ध्रुव जैसे न जाने कितनों को यहाँ उपदेश दिये गये हैं ३ प्रकाशमय ४ ज्ञानमय ५ गीत ६ आध्यात्मिक ७ विनम्र परिश्रम ८ अपने को गढ़ते हैं ।

जो कुछ उसमें होता है वह कहने में कब आता है
जो भी उसको कहता है वह आख़िर को पछताता है
होश, समझ, मन, बुद्धी उनकी शक्ल सुधारी जाती है
वलियों[1] और फ़रिश्तों की भी अक़्ल सवाँरी जाती है ॥३६॥

पौड़ी ३७

करम खंड की बाणी जोरु, तिथै होरु न कोइ होरु ।
तिथै जोध महाबल सूर, तिन महि रामु रहिआ भरपूर ।
तिथै सीतो सीता महिमा माहि, ताके रूप न कथने जाहि ।
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि, जिनकै रामु वसै मन माहि ।
तिथै भगत वसहि के लोअ, करहि अनंदु सचा मनि सोइ ।
सच खंडि वसै निरंकारु, करि करि वेखै नदरि निहाल ।
तिथै खंड मंडल वरभंड, जे को कथै त अंत न अंत ।
तिथै लोअ लोअ आकार, जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ।
वेखै विगसै करि वीचारु, नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥

करम की मंज़िल वह मंज़िल है ज़ोर की है हर बात जहाँ
उसमें और न पहुँचे कोई ग़ैर का उसमें दख़ल कहाँ
उस मंज़िल में पहुँचेंगे वो ज़ोर बली मंसूर[2] है जो
राम की जिसमें क़ूवत है इस क़ूवत से भरपूर हैं जो
भक्त यहाँ मन सीते हैं सीताओं रूपी अज़मत[3] से
जिनका रूप बयान न हो है ज़ेब जिन्हें हर ज़ीनत[4] से
मौत न उनको मार सके और ठग कर भी ले जाए कौन
जिनके मन में राम बसे फिर दुख उनको पहुँचाए कौन
इस मंज़िल में सब दुनिया के नेक भक्त ख़ुरसन्द[5] रहें
सच्चे रब से प्रेम लगाकर शाद[6] रहें आनन्द रहें
सच की मंज़िल वह मंज़िल है जिसमें निरंकार बसे
आप बनाकर आप ही देखे रहमत से ख़ुशहाल करे
सच की मंज़िल में हैं लाखों हिस्से मंज़िल और जहाँ
क्योंकर सबका ज़िक्र करें हम उनका अन्त शुमार कहाँ

१ ईश्वर भक्तों २ विजयी ३ महिमा ४ शोभा ५ ख़ुशख़ुर्रम ६ प्रसन्न ।

शक्लें हैं बे अन्त यहाँ संसारों पर संसार भी हैं
जैसे जैसे हुक्म मिले सब करते वैसे कार भी हैं
जो देखे आनन्द करे उस ध्यान से लुत्फ़ उठाता है
'नानक' जो इज़हार करे लोहे के चाब चबाता है[१] ।।३७।।

पौड़ी ३८

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ।
अहरणि मति वेदु हथीआरु ।
भउ खला अगनि तप ताउ ।
भांडा भाउ अमृतु तितु ढालि ।
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ।
जिनकउ नदरि करमु तिन कार ।
नानक नदरी नदरि निहाल ।। ३८ ।।

भट्ठी लेकर तक़्वे[२] की तू इस्तिक़लाल[३] सुनार बना
अक़्ल को अपनी करले ईंधन ज्ञान को तू औज़ार बना
खाल[४] ख़ुदा के ख़ौफ़ की लेकर तप का ताव बनाता जा
रखकर प्रेम कढ़ाली मन की आँच ज़रा भड़काता जा
लाफ़ानी[५] है असल हक़ीक़त[६] उसको लेकर ढाल यहाँ
गढ़ ले सच्चे नाम की मुहरें[७] रख सच्ची टकसाल यहाँ
मेहर की जिस पर ख़ास नज़र हो क़ायम यह टकसाल करे
मेहर की जिस पर ख़ास नज़र हो 'नानक' आप निहाल करे ।।३८।।

१ उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है २ संयम ३ धैर्य, धीरज ४ धौंकनी
५ अविनाशी ६ सत्यस्वरूप ७ शब्द, नाम ।

सलोकु

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु
दिवसु राति दुई दाई दाइआ खेलै सगल जगतु
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि

श्लोक

पानी बाप, हवा है मुर्शिद[1], आली धरती माँ
दाई रात खिलावा दिन है खेले खेल जहाँ
नेक और बद आमाल को जाँचे धरमी राज हज़ूर
सब अपने आमाल से पायें रुतबे पास और दूर
नाम पे जो जो ध्यान लगायें मेहनत ख़ूब कमायें
'नानक' मुँह पे नूर हो उनके साथी मुक्ती पायें

---

१ गुरु।

वाह गुरू

पंजाब के जागे भाग मिला　जब नानक सा आगाह गुरू
ऐ वाह गुरू आगाह गुरू　दिलख़्वाह गुरू ज़ीजाह[१] गुरू
जब लेकर हक़ की राह गुरू　बोल उठे 'इश्क़ अल्लाह' गुरू
आकाश पे ज़ाहिर नूर हुआ　और चमके बनकर माह[२] गुरू
इरफ़ान[३] की किरनें नूरानी[४]　फैलाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो　और हरदम बोलो वाह गुरू
एक माथे टीका वहदत[३] का　नीचे मस्ताना चोला है
फिर ज़ुल्फ़ों ने एक मस्ती का　बाज़ार ख़ुतन[५] में खोला है
जो बात कही सो क़न्द[६] भरी　हर क़ौल में अमृत घोला है
क्या रूप अनूप मुज़ैयन[७] है　मुँह कैसा भोला भोला है
इस प्यारे मुँह से दाता के　गुण गाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो　और हरदम बोलो वाह गुरू
इस शमा[८] से हो जिस दिल को लगन　उस दिल में नूर उजाला हो
जो चाँद के गिर्दा गिर्द फिरे　दिल उसका रौशन हाला हो
इन सच्ची सच्ची बातों को　जो ख़ूब समझने वाला हो
गर चेला हो मर्दाना हो　और बोल भी उसका बाला हो
थे उनके धन धन भाग जिन्हें　मिल जाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो　और हरदम बोलो वाह गुरू
फ़रमाते आप बिरहमन को　हर आगे शीश झुका बाबा
क्यों हाथ बनाई मूरत को　तू पूजे है बतला बाबा
क्या सूतक सातक छूत जनेऊ　क्या मण्डल होम कथा बाबा
वह पूछें कर्मों धर्मों को　जाती की नहीं परवा बाबा
सब झूठे झूठे कामों को　छुड़वाते नानकशाह गुरू
सब शीश झुका अरदास करो　और हरदम बोलो वाह गुरू
चल मिहरो-वफ़ा की मस्जिद में　यह मुस्लिम को समझाते थे
मिहराब बना वज्हुल्लाह[९] का　और इश्क़ इमाम बनाते थे
फिर लोभ-तकब्बुर-झूठ-खुदी　सब ऐब उससे छुड़वाते थे
तौहीद[१०] ही के गुण गाते थे　और सीधी राह दिखाते थे
क्या सच्ची सच्ची बातों को　समझाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो　और हरदम बोलो वाह गुरू

---

१ प्रतिष्ठित　२ चन्द्रमा　३ ब्रह्मज्ञान　४ प्रकाशमय　५ चीन का एक नगर जहाँ की कस्तूरी प्रसिद्ध है　६ मिश्री　७ सजीला　८ मोमबत्ती　९ ईश्वरस्वरूप　१० एकोब्रह्म ।

दिल साफ़ हो जिसका दैरो-हरम[1]
हो जिसकी मंज़िल दूर अभी
जब रस्ता साफ़ नुमायाँ हो
ख़ुद आप चुका दे झगड़ों को
क्या अच्छी अच्छी बातें सब
सब शीश नवा अरदास करो
क्या हिन्दू है क्या मुस्लिम है
फिर शेख़ व ब्राह्मण आ-आकर
हम नाम उसी का लेते हैं
सत नाम है वह निर्वैर है वह
थे राह उसी जगदाता की
सब शीश नवा अरदास करो
हैं जितने हक़-आगाह[3] गुरू
उन सबको समझो पाक वली
हर नाम की सुमरन करते हैं
जो मस्त हैं प्रीतम दर्शन में
यह प्रेम पियाले उन सबको
सब शीश नवा अरदास करो
दस शमएँ[4] हों एक महफ़िल हो
दस गुंचे[5] रंग बिरंग खिलें
दस गौहर[6] हों एक माला में
दस संत मिलें दस रूपों में
हर रंग में मिलने वालों को
सब शीश नवा अरदास करो
ए दिल हैं जितने पाक वली
सब नाम उसी का लेते थे
उन सबके मन का चैन और सुख
इस वास्ते उनकी किरपा से
हैं खेवनहारे वलिओं में
सब शीश नवा अरदास करो

की दुबिधा को वह छेड़े क्यों
ले बैठे यह उलझेड़े क्यों
मझधार में डाले बेड़े क्यों
यह आकर मौत निबेड़े क्यों
फ़रमाते नानकशाह गुरू
और हरदम बोलो वाह गुरू
सब ख़ालिक़ के गुण गाते हैं
क्यों झगड़े मफ़्त बढ़ाते हैं
हम उसको शीश झुकाते हैं
हम उससे प्रीत लगाते हैं
दिखलाते नानकशाह गुरू
और हरदम बोलो वाह गुरू
सब नानक के मतवाले हैं
वह दुनिया के उजियाले हैं
और सारे अल्लाह वाले हैं
और पीते प्रेम-पियाले हैं
पिलवाते नानकशाह गुरू
और हरदम बोलो वाह गुरू
वह जोत झलक तो एक ही है
आवाज़ चटक तो एक ही है
गौहर की दमक तो एक ही है
सीने की फड़क तो एक ही है
मिल जाते नानकशाह गुरू
और हरदम बोलो वाह गुरू
और सन्त गुरू अवतार हुए
हर ध्यान में वह सरशार हुए
वह आप ही एक ओंकार हुए
लाखों के बेड़े पार हुए
हक़माते[8] नानकशाह गुरू
और हरदम बोलो वाह गुरू

---

१ मन्दिर-काबः २ ज़ाहिर, स्पष्ट ३ सत्य को पहचानने वाले ४ मोमबत्तियाँ
५ कलियाँ ६ मोती ७ मस्त, लबरेज़ ८ सत्य पर मतमाते।

सदाए इश्क़

(एक पंजाबी नज़्म)

ख़्वाजा दिल मुहम्मद साहब एम० ए० विरचित

जिस दे नूर मुनव्वर[1] कीता चन सूरज दे सीने नूँ
ओसे अपना रूप विखाया 'नानक' दे आईने नूँ
जिसने कप्पलवस्ता[2] अन्दर राज छुड़ाया गौतम दा
नानक दे मन सुट चिनग्यारी फूक जलाया सीने नूँ
मत्थे टिक्का वहदत वाला गल चोला मस्ताना ए
दिल ते अलिफ़ अलख दा लिख्या खोदन जिवें नगीने नूँ
हर विच जलवा वेखन उसदा अख जिनहाँ दी रोशन ए
सीने अन्दर मूल न रक्खन वैर हरम दे कीने नूँ
ओ हो देवा इश्क़े वाला रौशन उप्पर तूर हुया
ओ से नूर मुनव्वर[1] कीता मक्के नाल मदीने नूँ
चित्त जिन्हाँ दिल यार दे कीता मूँह उन्हाँ दा मुड़ना की
मकनातिसना[3] क़ुतबूं फिर दा फेरो लक्ख नगीने नूँ
चन चकोर न वेखे जे कर नैना ताईं चैन न आए
आशिक़ नूँ जद दीद न होवे साड़ घते इस जीने नूँ
नानक वांगूँ ढूंडे जेड़ा इश्क़े दे गंजीने नूँ
दिल दे टुकड़े भोजन उसनूँ ख़ून जिगर दा पीने नूँ
औखी घाटी इश्क़े वाली सब्र बिनाँ कुझ चारा ना
हल फिरन जे सै सै सिरते जुंबिश ना ज़मीने नूँ
राज़ इलाही दिल विच डूँघा लभना ए पर ऊखा ए
नाग-तमा[4] दा दिल विच बैठा कुण्डल मार दफ़ीने नूँ
तालिब बनना मुश्किल डाढा एथे लोड़ सफ़ाई दी
पट सुटें ऐ यार दिले थीं पहले खोट कमीने नूँ
ऐ दिल सानूं इश्क़े वाली गल सो ख़ाली विस्से नाँ
घुम्मन घेरियाँ अन्दर चलिया कडें ओ यार सफ़ीने नूँ

---

१ प्रकाशमान २ कपिलवस्तु ३ मक़नातीस ४ हिर्स-लोलुपता रूपी सर्प ।

क़ुर्आन शरीफ़ [हिन्दी]

बीस साल की मुसल्सल अिल्मी मिहनत के बाद देवनागरी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन शरीफ़ छप कर अवाम की पेश नज़र है। इसमें मिलते-जुलते हुरूफ़ मसलन जाल, ज़े, ज़ाद, ज़ो वग़ैर: को अलाहद: मुमताज़ करते हुये रुमूज़ औक़ाफ़ (विरामाविराम चिह्न), आयत संख्या, वक़्फ़ नबी स०, व० मंज़िल, व० ग़ुफ़रान, वक़्फ़ लाज़िम, हर पारे के रुब्अ, निस्फ़, सुल्स, रुकूअ, सज्द:, मद्द, हमज़: साकिन, हमज़ए वस्ल, मुआनक़:, हर सफ़े पर आयत ख़त्म, शुमार मंज़िल, पार: और सूर:, ग़रज़ कि शास्त्रीय अरबी पद्धति पर इमकानी सूरत में सही तिलावत (पाठ) का पूरा इहतियात मुहय्या किया गया है। हिन्दी रस्मुल्ख़त में आयतें लिखने के साथ-साथ हर सफ़े पर क़ुर्आन शरीफ़ के असली ख़त याने अरबी ख़त में इन्तहाई सही ब्लाक भी देकर नक़्स की गुन्जाइश ही ख़त्म कर दी गई है। साथ-साथ आसान आम फ़हम ज़बान में, मुस्तनद उर्दू तर्जुमों की बुनियाद पर, आलिमों की नज़रसानी के बाद, हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीरी नोट्स को भी मतन (मूल) के मुक़ाबिल दिया गया है।

हिन्दी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ने-लिखने के क़वायद, तलफ़्फ़ुज़, इदग़ाम, वस्ल-फ़स्ल व अनेक याद-दहानियों का एक वसीअ चार्ट, और मज़ामीन की फ़िहरिस्तों ने हिन्दी में तरीक़े तिलावत को निहायत आसान कर दिया है। अलावा, मौलाना सय्यद अबुल हसन अली अलहसनी अलमदनी जनाब अली मियाँ साहब ने इस हिन्दी क़ुर्आन शरीफ़ पर 'पेश लफ़्ज़' लिख कर इस मिहनत को ज़ीनत बख़्शी है।

स्व० डा० ज़ाकिर हुसैन साहब राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश सरकार, मुस्लिम युनीवर्सिटी अलीगढ़, निज़ाम ट्रस्ट हैदराबाद, यू० पी० सुन्नी वक़्फ़ बोर्ड लखनऊ वग़ैर: से इस बेशबहा मिहनत को सताइश व इमदाद इनायत होने का फ़ख़्र हासिल है। इस बड़े कारनामे का हद्य: (उपहार) भी महज़ ३५'०० रखा गया है। ३) डाक ख़र्च अलाहद:। कमज़ कम ५'०० फ़ी जिल्द पेशगी ज़रूर इनायत कर मश्कूर फ़रमाइये।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी, १०९, रानीकटरा, लखनऊ-३

क़ुर्आन शरीफ़ तर्जुमा—हिन्दी में प्रामाणिक पूर्ण अनुवाद। १०'००
डाक ख़र्च अगल।

पारः अम्म मूल—पठनविधि और संकेताक्षरी सहित। १'००

बच्चों के पाठ के लिए

पारः	अलम् मतन (मूल)		"	"	'६०
"	सयक़ूलु	"	"	"	'६०
"	तिलकर्रुसुलु	"	"	"	'६०
"	लन्तना	"	"	"	'६०
"	वल् मुह्सनातु	"	"	"	'६०
"	लाय हि़ब्बुल्लाहु	"	"	"	'६०

तरकीब नमाज़ हिन्दी में—मूल्य १'०० (छप रही है।)

पैग़म्बरी दुआएँ हिन्दी—मूल्य १'००

हिन्दी में कुछ इस्लामी जीवनचरित्र

पैग़म्बरे इस्लाम, ००'५० हज़रत अबूबकर, ००'५० हज़रत उमर, ००'५०
हज़रत उस्मान, ००'५० हज़रत अली, ००'५०।

'अ़रब' एक संक्षिप्त इतिहास

मैकमिलन कम्पनी लंदन से प्रकाशित और अ़रब के इतिहास पर निहायत मक़बूल पी० हिट्टी की अंग्रेजी पुस्तक का एक एडिशन के लिए कापीराइट हासिल कर हिन्दी में योग्य विद्वानों से हिन्दी तर्जुमः (अनुवाद) करवा कर छापा गया है। हर लाइब्रेरी, स्कूल, कालेज, यूनीवर्सिटी और अ़िल्म से शौक़ रखनेवाले साहबान को इसकी एक प्रति ज़रूर ख़रीद कर रखना चाहिये। एकही एडिशन छापने का इख़्तियार मैकमिलन कम्पनी से हासिल हुआ है, इसलिए ख़त्म हो जाने पर फिर यह हिन्दी में दस्तयाब न होगा। नक़्शों से सजी इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ़ ८'०० है। डाक ख़र्च अलग।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी १०९, रानीकटरा, लखनऊ-३

रामायण कृत्तिवास हिन्दी में

गोस्वामी तुलसीदास से एक शती पूर्व सन्त कृत्तिवास रचित बंगला की अति लोकप्रिय 'रामायण कृत्तिवास' के पाँच काण्ड का ललित हिन्दी पद्यानुवाद तथा बंगला मूल पाठ का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण हिन्दी भाषी समुदाय के लिए अनायास बंगला का ज्ञान प्राप्त कराने में नितांत सक्षम है। अनेक नये और अद्भुत कथा-प्रसंगों को पढ़ते हुये बंगला और हिन्दी दोनों भाषाओं के काव्य रस का आनन्द उठाइये। एक दूसरे की सहायता से दोनों भाषाएँ विना शिक्षक की सहायता के सरलता से सीखी जा सकती हैं। इसके 'आदिकाण्ड' के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हिन्दी समिति, उत्तरप्रदेश द्वारा उसको पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त है। भूमिका—स्वामी रामकृष्ण परमहंस आश्रम, बिलूरमठ, हावड़ा। सजिल्द पाँच काण्ड का मूल्य १२'०० । डाक खर्च २) अलग। जो सज्जन आदिकाण्ड पहले ख़रीद चुके हैं उनके लिए बाक़ी चार काण्ड भी ७'०० में उपलब्ध हैं।

जपजी सुखमनी साहब

मूल गुरुमुखी पाठ और उसका ललित पद्यानुवाद दोनों देवनागरी अक्षरों में, छप कर तैयार हैं। गुरु नानकदेव की वाणी का रस गुरमुखी और हिन्दी दोनों भाषाओं में आस्वादन कीजिये। मूल्य ४'०० मात्र।

स्वामी रामतीर्थ-साहित्य

१. यथार्थ समाजवाद २।।) २. गृहस्थ-धर्म २।।)
३. व्यावहारिक वेदान्त २।।) ४. विश्व-धर्म २।।)
५. राष्ट्रीय-धर्म २।।) ६. सफलता-सोपान २।।) ७. नक़द धर्म २।।)

वाणी सरोवर

(अपने ढंग का निराला त्रयमासिक पत्र)

हिन्दी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, पाली-प्राकृत, पारसी, बंगला, असमी, ओड़िया, कश्मीरी, मराठी, गुरमुखी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयाळम, सिंधी आदि भाषाओं तथा अनेक बोलियों के सत्साहित्य को, देवनागरी लिपि में धारावाहिक सानुवाद लिप्यन्तरण द्वारा, भारत के जन-जन तक पहुँचाना, अधिकाधिक भाषाओं का शिक्षण, प्रसारण और ज्ञान प्राप्त कराते हुये इनको

एक सूत्र में पिरोना—यही 'वाणी सरोवर' का पावन उद्देश्य है। पत्र का पत्र और, धारावाहिक प्रकाशन होने से, सभी भाषाओं के सानुवाद लिप्यन्तरित अनेक पूर्ण-ग्रंथ इस पत्र द्वारा उपलब्ध होंगे। मूल्य १०·०० वार्षिक। एक प्रति का २·५० मात्र।

प्रचारित पुस्तकें

बंकिम साहित्य—यों तो लोग गली-लगी छाप कर बेच रहे हैं। परंतु बंगला भाषा से हिन्दी में मूर्धन्य अनुवादक साहित्यमनीषी स्व० श्री रूपनारायण पाण्डेय द्वारा अनुवादित सम्पूर्ण प्रामाणिक बंकिम सीरीज हमारे ही यहाँ से प्राप्त है।

आनन्दमठ २॥)	विषवृक्ष २॥)	चन्द्रशेखर २॥)	कपालकुण्डला २॥)
कृष्णकांत का वसीयतनामा २॥)		बंगशार्दूल सीताराम	२॥)
देवी चौधरानी २॥)		राधारानी ॥)	दुर्गेशनन्दिनी २॥)
मृणालिनी २॥)	इन्दिरा २॥)	राजसिंह ३)	रजनी २॥)
युगलांगुरीय ॥)	लोकरहस्य २॥)	कमलाकान्त का पोथा	२॥)
राजमोहन की स्त्री २॥)	नवाबनन्दिनी ३॥)	मृण्मयी	३॥)

राष्ट्रीय आल्हा—प्राग् ऐतिहासिक काल से चीनी आक्रमण पर्यन्त भारत के शौर्य-पराक्रम का इतिहास वीर आल्हा छन्द में वर्णित। भाषा खड़ी बोली सरल और वीर रसपूर्ण है। भूमिका-लेखक पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी। मूल्य ३·०० मात्र।

टाम काका की कुटिया (सचित्र)—[अंकिल टाम्स केबिन (अंग्रेजी) का भावानुवाद], अफ़्रीकी ग़ुलाम-व्यापार की दर्दनाक कहानी। अमरीका से दास-व्यापार को समाप्त कराने में इस पुस्तक का बड़ा हाथ रहा। मूल्य १॥)

सम्राट् नीरो—सामन्तवादी युग के रोमन साम्राज्य के अत्याचारी काण्डों का रोमाञ्चकारी उपन्यास 'कोवाडिस' का हिन्दी रूपान्तर। मूल्य ४॥)

हरिश्चन्द्र—टीका सहित पद्याख्यान। मूल्य १)

हमारा भोजन—उत्तरप्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत। आहार शास्त्र पर वैज्ञानिक पुस्तक। लेखक श्री ज्ञानेन्द्रनाथ शुक्ल। मूल्य १॥)

भारतीय कृषि विज्ञान—चार खण्डों में सम्पूर्ण। अनाज, सब्ज़ी, फल, फूल, मेवा की खेती तथा बागबानी का विस्तृत वर्णन अगणित चित्रों सहित इतने सरल ढंग से समझाया गया है कि सामान्य ज्ञान वाले भी इस एक पुस्तक की सहायता से सफल फ़सल तैयार कर सकते हैं। टाइप के अक्षर मोटे हैं—वृद्ध और नवसाक्षर भी पूरा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ७॥)

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ चतुर्थांश पेशगी रुपया आना ज़रूरी है।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी, १०६ रानीकटरा, लखनऊ-३

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

जो कार्य किये जा रहे हैं:—

१—(तमिल) कम्ब रामायण। (सानुवाद लिप्यन्तरण)
२—(तेलुँगु) रंगनाथ रामायण। ,,
३—(असमिया) माधव कंदली रामायण। ,,
४—(बंगला) कृत्तिवास रामायण लंका काण्ड। ,,
५—(मलयाळम) तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत मह‍ाभारत। ,,
६—(उर्दू) 'उमराव जान अदा' की प्रसिद्धि-प्राप्त श्री 'रुसवा' का चारित्रिक (नैतिक) उपन्यास "शरीफ़ज़ादः"।
७—(फ़ारसी) दाराशिकोह कृत ५१ उपनषिदों के फ़ारसी-भाष्य (डॉ० ताराचंद द्वारा सम्पादित तथा ईरान में प्रकाशित 'सिर्रे अकबर') का हिन्दी अनुवाद।
८—(अरबी) रियाज़ुस्सालहीन—(ज़ादे शरीफ़) इस्लामी हदीसों के प्रामाणिक समुच्चय का हिन्दी संस्करण।
९—(वाणी सरोवर)—विविध भाषाओं के हिन्दी अनुवाद सहित धारावाहिक देवनागरी लिप्यन्तरण का त्रयमासिक पत्र—वार्षिक मूल्य १०·००।

जो योजनान्तर्गत हैं:—

१०—इनके अतिरिक्त संस्कृत, पाली-प्राकृत, पारसी, ओड़िया, कन्नड़, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, सिंधी आदि भाषाओं तथा विविध बोलियों के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरण-ग्रंथ योजनान्तर्गत हैं।

विज्ञापन के लिए, व्यवस्थापक, 'वाणी सरोवर' १०९, रानीकटरा, लखनऊ से पत्र-व्यवहार कीजिए।

नैपाली प्रेस, लखनऊ में मुद्रित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, रानीकटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित। —द्वारा नन्दकुमार अवस्थी सम्पादक